जून 2026

द मैजिक ऑफ एस्ट्रो वर्ल्ड

मूल्य-100/-

ज्योतिष वाटिका

सनातन धर्म एवं ज्योतिष का दिव्य ज्ञान भंडार

ज्योतिष एव अध्यात्म विशेषांक

ज्योतिष वाटिका

ज्योतिष एवं अध्यात्म की संपूर्ण पत्रिका

संपादक
ज्योतिषाचार्य आदित्य झा

मार्गदर्शक, मुद्रक
सुभाष झा

कला एवं डिजाइन
प्रिंट मीडिया कम्प्यूटर

विज्ञापन एकाधिकार सुरक्षित

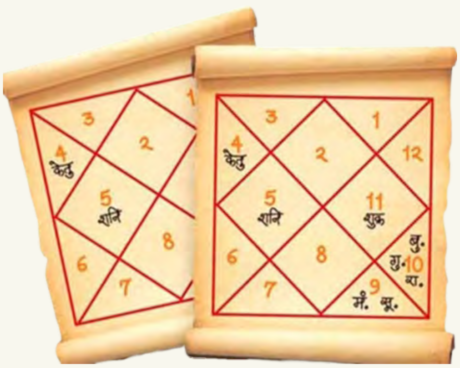

संपादकीय

ज्योतिषीय एवं वास्तु उपाय: जीवन में सकारात्मक परिवर्तन का सरल मार्ग

मानव जीवन सुख-दुःख, सफलता-असफलता और उतार-चढ़ाव का एक निरंतर प्रवाह है। कभी-कभी अथक प्रयासों के बावजूद मनचाहे परिणाम प्राप्त नहीं होते। ऐसे समय में व्यक्ति स्वयं से प्रश्न करता है कि आखिर बाधाएं क्यों आ रही हैं? भारतीय ऋषि-मुनियों ने इन प्रश्नों के उत्तर ज्योतिष और वास्तु जैसे दिव्य ज्ञान में खोजे हैं।

ज्योतिष केवल भविष्य बताने का विज्ञान नहीं है, बल्कि यह जीवन की समस्याओं के कारणों को समझने और उनके समाधान का मार्ग दिखाने वाला शास्त्र है। जन्मकुंडली में ग्रहों की स्थिति व्यक्ति के स्वभाव, कर्म, अवसरों और चुनौतियों का संकेत देती है। जब किसी ग्रह की स्थिति कमजोर या प्रतिकूल होती है, तब जीवन में विभिन्न प्रकार की कठिनाइयां उत्पन्न हो सकती हैं। ऐसे में योग्य ज्योतिषाचार्य द्वारा बताए गए उपाय ग्रहों की नकारात्मकता को कम करने और सकारात्मक ऊर्जा को बढ़ाने में सहायक माने जाते हैं।

इसी प्रकार वास्तु शास्त्र भवन और वातावरण में ऊर्जा के संतुलन का विज्ञान है। हमारा घर, कार्यालय या कार्यस्थल केवल ईंट-पत्थरों का ढांचा नहीं होता, बल्कि वहां उपस्थित ऊर्जा हमारे मानसिक और शारीरिक जीवन को भी प्रभावित करती है। यदि किसी स्थान में वास्तु दोष हो, तो वहां रहने वाले लोगों को मानसिक तनाव, आर्थिक अस्थिरता, स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं या पारिवारिक मतभेदों का सामना करना पड़ सकता है। वास्तु के सरल उपाय इन दोषों को कम करके सकारात्मक वातावरण निर्मित करने में सहायक हो सकते हैं।

यह ध्यान रखना आवश्यक है कि ज्योतिषीय और वास्तु उपाय कोई चमत्कारिक समाधान नहीं हैं। इनका वास्तविक लाभ तभी प्राप्त होता है जब व्यक्ति अपने कर्म, परिश्रम और सकारात्मक दृष्टिकोण को भी साथ रखे। शास्त्रों में भी स्पष्ट कहा गया है कि कर्म ही जीवन की सफलता का मूल आधार है। उपाय व्यक्ति को सही दिशा, आत्मबल और सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करते हैं, जबकि सफलता का मार्ग उसके कर्मों से प्रशस्त होता है।

आज के तनावपूर्ण और प्रतिस्पर्धी युग में ज्योतिष एवं वास्तु केवल परंपरागत ज्ञान नहीं, बल्कि आत्मविश्वास, संतुलन और सकारात्मक जीवन दृष्टि के साधन बन सकते हैं। आवश्यकता है कि इन्हें अंधविश्वास के रूप में नहीं, बल्कि विवेक, श्रद्धा और सही मार्गदर्शन के साथ अपनाया जाए।

जब कर्म, श्रद्धा और सकारात्मक ऊर्जा का संगम होता है, तभी जीवन में सफलता, शांति और समृद्धि के नए द्वार खुलते हैं।

ज्योतिषाचार्य आदित्य झा

किसी की मुस्कुराहट, किसी की मुस्कान के लिए
कुछ कदम साथ बढ़ाएं एक अच्छे काम के लिए।

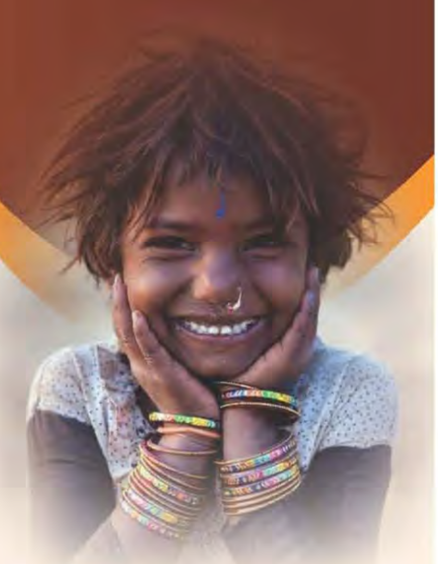

ग्लोबल वैदिक फाउंडेशन

असहाय एवं गरीबों की सेवा के लिए संकल्पित

संस्था का उद्देश्य

- मेधावी गरीब बच्चों की पढ़ाई,
- वृक्षारोपण अपाहिजो की मदद,
- गरीबों के लिए भंडारा
- चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन
- का लोगों का कल्याण करना

समाज के बेहतर बनाने के लिए
हमसे जुड़िए

PL. JOIN US.

Email : globalvedicfoundation@gmail.com
Ph: +91 81930 80001

युवा धर्मगुरु श्री हरिवंश जी महाराज : सनातन संस्कृति के जागरण की प्रेरणादायी गाथा

आज के भौतिकतावादी युग में, जब मानव अपने संस्कारों और आध्यात्मिक मूल्यों से दूर होता जा रहा है, ऐसे समय में कुछ संत-महात्मा समाज को धर्म, संस्कृति और मानवता के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दे रहे हैं। उन्हीं महान विभूतियों में एक नाम है श्रद्धेय युवा धर्मगुरु श्री हरिवंश जी महाराज का, जो श्रीमद्भागवत कथा एवं शिव महापुराण कथा के माध्यम से देशभर में सनातन संस्कृति की अलख जगा रहे हैं।

मिथिला की पावन भूमि बिहार के समस्तीपुर जिला अंतर्गत बथुआ बुजुर्ग ग्राम में जन्मे श्री हरिवंश जी महाराज बचपन से ही धार्मिक वातावरण में पले-बढ़े। आपके पूज्य पिता पंडित श्री महानंद मिश्रा एवं माता श्रीमती गंगा देवी भगवान के परम भक्त रहे हैं। उनका संपूर्ण जीवन संत, ब्राह्मण एवं गौसेवा को समर्पित रहा। माता-पिता ने ही प्रथम गुरु के रूप में आपको धर्म और संस्कारों की शिक्षा दी तथा अध्यात्म के पथ पर अग्रसर किया।

इसके पश्चात वृंदावन की पावन भूमि पर धर्म संघ संस्कृत महाविद्यालय में पंडित श्री राजवंशी द्विवेदी जी के सानिध्य में आपका यज्ञोपवीत संस्कार संपन्न हुआ। गुरुकुलीय परंपरा में आपकी प्रारंभिक शिक्षा हुई, जहां आपने वेद, कर्मकांड एवं ज्योतिष का गहन अध्ययन किया। धर्म और अध्यात्म के प्रति आपकी रुचि को देखकर गोलोकवासी पंडित श्रीनाथजी शास्त्री जी महाराज ने आपको विशेष स्नेह प्रदान किया और आपने उनके सानिध्य में श्रीमद्भागवत का अध्ययन किया।

इसके बाद मां भगवती के परम उपासक परम पूज्य अग्निहोत्री करपात्री परमहंस स्वामी श्री चिदात्मन जी महाराज से आपने गुरु दीक्षा प्राप्त की। आपके जीवन में दीक्षा गुरुदेव सिमरिया वाले सरकार की विशेष कृपा रही, जिनकी प्रेरणा से वर्ष 2006 में आपने श्रीमद्भागवत कथा का वाचन प्रारंभ किया। धीरे-धीरे आपकी कथा सेवा बिहार, झारखंड, उत्तर प्रदेश, हरियाणा सहित अनेक राज्यों तक पहुंची और लाखों श्रद्धालु आपकी वाणी से प्रभावित होने लगे।

श्री हरिवंश जी महाराज केवल धर्म और अध्यात्म तक सीमित नहीं रहे, बल्कि आधुनिक शिक्षा को भी समान महत्व दिया। आपके पूज्य नाना स्वर्गीय पंडित श्रीराम जी झा, जो संस्कृत महाविद्यालय में प्रधानाध्यापक थे, उन्होंने आपको संस्कृत के साथ अन्य विषयों के अध्ययन के लिए प्रेरित किया। उनकी प्रेरणा से आपने उच्च शिक्षा प्राप्त की, स्नातक के बाद नोएडा के प्रतिष्ठित संस्थान से एमबीए किया और बिजनेस, पब्लिक रिलेशन एवं प्रबंधन का भी अध्ययन किया। आपने कई प्रतिष्ठित संस्थानों में सलाहकार के रूप में अपनी सेवाएं भी दीं।

भगवान शिव के प्रति आपकी विशेष श्रद्धा रही है। आपने द्वादश ज्योतिलिंगों की यात्रा पूर्ण की तथा 51 शक्तिपीठों के दर्शन का संकल्प लिया, जिनमें से कई शक्तिपीठों के दर्शन आप कर चुके हैं। नया उदासीन अखाड़ा के संत परम पूज्य श्री भागवत मुनी (फलाहारी बाबा) महाराज की

विशेष कृपा भी आपके ऊपर रही है।

श्री हरिवंश जी महाराज का मानना है कि यदि भारत को पुनः विश्वगुरु बनाना है, तो युवाओं को धर्म और संस्कारों से जोड़ना होगा। इसी उद्देश्य से वे युवाओं को भगवद्गीता, अध्यात्म, प्रबंधन एवं जीवन मूल्यों का ज्ञान देकर सही दिशा में प्रेरित कर रहे हैं। उनकी कथाओं में केवल धार्मिक प्रसंग ही नहीं, बल्कि जीवन प्रबंधन, पारिवारिक संबंध, मानसिक शांति और सामाजिक मूल्यों की भी गहन शिक्षा मिलती है।

उनकी वाणी अत्यंत मधुर और प्रभावशाली है। जब वे कथा मंच से भगवान की लीलाओं का वर्णन करते हैं, तो श्रोता मंत्रमुग्ध हो जाते हैं। यही कारण है कि आज सोशल मीडिया पर भी श्री हरिवंश जी महाराज अत्यंत लोकप्रिय हैं और उनके लाखों अनुयायी हैं। लोग उनके कार्यक्रमों में शिव लीला, गृह क्लेश से मुक्ति, सकारात्मक जीवन शैली और आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए बड़ी संख्या में पहुंचते हैं।

धर्म प्रचार के साथ-साथ श्री हरिवंश जी महाराज समाज सेवा को भी अत्यंत महत्व देते हैं। वे नर सेवा ही नारायण सेवा के सिद्धांत को अपने जीवन में उतारते हैं। गरीब बच्चों को शिक्षा सामग्री वितरण, अनाथालयों में सेवा, जरूरतमंदों की सहायता तथा समाज के वंचित वर्गों के प्रति करुणा और सहयोग उनकी विशेष पहचान है। उनका मानना है कि निःस्वार्थ सेवा ही सच्चा धर्म है और सेवा भाव से किया गया कार्य ही ईश्वर की सच्ची आराधना है।

श्री हरिवंश जी महाराज सदैव शाकाहार और जीव दया का संदेश देते हैं। उनका कहना है कि प्रत्येक जीव को जीने का अधिकार है और मनुष्य

को किसी भी प्राणी की हिंसा नहीं करनी चाहिए। वे सात्विक आहार, शुद्ध विचार और नैतिक जीवन को स्वस्थ एवं सुखी जीवन का आधार मानते हैं।

वे सभी धर्मों की मूलभूत एकता और सद्भाव पर भी विशेष जोर देते हैं। उनका उद्देश्य लोगों के जीवन से आध्यात्मिक कठिनाइयों को दूर कर उन्हें प्रेम, शांति और मानवता के मार्ग पर चलाना है। वे ध्यान, साधना और आत्मचिंतन को जीवन की सच्ची शांति प्राप्त करने का माध्यम मानते हैं।

श्री हरिवंश जी महाराज अपने सत्संगों में पारिवारिक संबंधों की महत्ता पर विशेष प्रकाश डालते हैं। उनका कहना है कि रिश्ते जीवन की सबसे अमूल्य धरोहर हैं। आधुनिक युग में जहां लोग छोटी-छोटी बातों पर संबंध तोड़ देते हैं, वहीं वे संस्कार, धैर्य और प्रेम के माध्यम से रिश्तों को मजबूत बनाए रखने की प्रेरणा देते हैं।

आज जब समाज में नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है और नई पीढ़ी भौतिकता की ओर आकर्षित

धर्म प्रचार के साथ-साथ श्री हरिवंश जी महाराज समाज सेवा को भी अत्यंत महत्व देते हैं। वे नर सेवा ही नारायण सेवा के सिद्धांत को अपने जीवन में उतारते हैं। सेवा भाव से किया गया कार्य सच्ची आराधना है।

हो रही है, ऐसे समय में श्री हरिवंश जी महाराज जैसे युवा धर्मगुरु समाज के लिए आशा की किरण हैं। वे अपने ज्ञान, भक्ति, सेवा और संस्कारों के माध्यम से सनातन संस्कृति को नई ऊर्जा प्रदान कर रहे हैं तथा युवाओं को धर्म और मानवता के पथ पर अग्रसर कर रहे हैं।

निस्संदेह, श्री हरिवंश जी महाराज केवल एक कथावाचक नहीं, बल्कि समाज को जागृत करने वाले एक प्रेरणास्रोत, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और मानवता के सच्चे उपासक हैं।

"ग्रहों की गूंज, जीवन की दिशा: आचार्य आदित्य झा"

ज्योतिषाचार्य आदित्य झा एक ऐसे ज्योतिषी हैं जो न सिर्फ ग्रहों की गणना करते हैं, बल्कि लोगों के जीवन को भी समझते हैं। 18 वर्षो से ज्यादा समय से ज्योतिष के क्षेत्र में सक्रिय आदित्य झा जी ने अपनी शिक्षा और अनुभव को मिलाकर एक अद्वितीय मार्ग बनाया है। उन्होंने एमबीए और होटल मैनेजमेंट की डिग्री हासिल की है, लेकिन उनकी रुचि हमेशा ज्योतिष में रही है।

ज्योतिषाचार्य आदित्य झा का एक्सक्लुसिव इंटरव्यू...

ज्योतिषाचार्य जी, आपका ज्योतिष में आने का सफर कैसा रहा? क्या यह एक आश्चर्यजनक यात्रा थी?

उत्तर-बचपन से ही इनकी रूचि अध्यात्म एवं ज्योतिष में रही है। इनके दादा जी जो संस्कृत के विद्वान शिक्षक के साथ कर्मकांड एवं अनुष्ठान भी करवाते थे। उनको देखकर इनकी रूचि ज्योतिष सीखने के लिए प्रबल हुई। कुछ सालों तक ये होटल मैनेजमेंट में रहे जहां अपने साथियों का कुंडली विश्लेषण किया जिससे सभी काफी प्रभावित होते थे। शुरू में घर-परिवार के लोग इन्हें एमबीए के बाद मैनेजमेंट या सरकारी संस्थान में उच्च कोटि की नौकरी के लिएं जाने को कहते थे। क्योंकि इनके पिताजी स्व. नंद कुमार झा जी खुद एक उच्च कोटि के विद्वान सरकारी स्कूल के प्रधानाध्यापक थे जिनकी विद्वता एवं ज्ञान के दूर-दराज के लोग भी कायल थे। जब इनकी कही भविष्य वाणी सत्य होने लगी तो परिवार के लोगों ने भी इनका भरपूर साथ दिया।

जब कोई व्यक्ति आपके पास अपनी समस्याएं लेकर आता है, तो आप उनकी मदद कैसे करते हैं?

उत्तर- उनकी समस्या का विश्लेषण करता हूँ और उसके मूल कारण को पहचानने की कोशिश करता हूँ। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि मैं उन्हें आत्मविश्वास दिलाता हूँ कि हर समस्या का समाधान संभव है, और सही दिशा में प्रयास करने से वे अपने जीवन में सुधार ला सकते हैं। मैं उन्हें व्यावहारिक और सरल उपाय बताने के साथ-साथ सकारात्मक सोच और धैर्य बनाए रखने की प्रेरणा देता हूँ।

क्या आप मानते हैं कि ज्योतिष हमारे जीवन को आकार देता है?

उत्तर- ज्योतिष के अनुसार, ग्रहों और नक्षत्रों की स्थिति हमारे जीवन पर कुछ हद तक प्रभाव डालती है। यह हमारे स्वभाव, प्रवृत्तियों और जीवन की संभावनाओं का संकेत देती है। यानी ज्योतिष एक ह्लमार्गदर्शकह्व की तरह काम करता है, जो हमें सही दिशा दिखा सकता है।

लेकिन यह मानना भी जरूरी है कि केवल ज्योतिष ही हमारे जीवन को पूरी तरह निर्धारित नहीं करता। हमारे कर्म, निर्णय और प्रयास भी उतने ही महत्वपूर्ण होते हैं। कर्म ही प्रधान है—यह सिद्धांत भगवद्गीता में भी स्पष्ट रूप से बताया गया

है।

आपके अनुसार, ज्योतिष और आत्म-ज्ञान में क्या संबंध है?

उत्तर- ज्योतिष केवल भविष्य बताने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के भीतर छिपे स्वभाव, गुण-दोष, प्रवृत्तियों और जीवन के उद्देश्य को समझने का एक दर्पण भी है। जब कोई व्यक्ति अपनी कुंडली के माध्यम से स्वयं को समझने की कोशिश करता है, तो वह धीरे-धीरे आत्म-ज्ञान की ओर बढ़ता है।

ज्योतिष में विश्वास करने वाले लोगों के लिए आपका संदेश क्या है?

उत्तर- सबसे पहले, ज्योतिष शास्त्र को केवल भाग्य बताने का साधन न मानें, बल्कि इसे एक मार्गदर्शक के रूप में देखें। यह आपको जीवन की संभावनाओं, चुनौतियों और सही समय का संकेत देता है—लेकिन अंतिम निर्णय और परिणाम आपके कर्मों पर ही निर्भर करते हैं।

आपके अनुसार, ज्योतिष के सबसे बड़े लाभ क्या हैं?

उत्तर- मेरे अनुसार, ज्योतिष शास्त्र के सबसे बड़े लाभ व्यक्ति के जीवन को समझने, सुधारने और संतुलित करने में छिपे हैं। यदि इसे सही दृष्टिकोण से अपनाया जाए, तो यह केवल भविष्यवाणी नहीं, बल्कि एक शक्तिशाली मार्गदर्शन प्रणाली बन जाता है।

क्या आप मानते हैं कि ज्योतिष हमारे रिश्तों को बेहतर बना सकता है?

उत्तर- हाँ, एक संतुलित दृष्टिकोण से देखें तो ज्योतिष शास्त्र हमारे रिश्तों को बेहतर बनाने में सहायक हो सकता है—लेकिन यह तभी संभव है

जब इसे समझदारी के साथ अपनाया जाए।

उदाहरण के लिए, कुंडली मिलान या ग्रहों की स्थिति के आधार पर यह जाना जा सकता है कि दो लोगों के बीच कहाँ सामंजस्य है और कहाँ मतभेद हो सकते हैं। इससे हम पहले से ही सावधान रहकर अपने व्यवहार में सुधार कर सकते हैं

ज्योतिष के बारे में आप लोगों को क्या बताना चाहेंगे जो शायद नहीं जानते हैं?

उत्तर- बहुत से लोग मानते हैं कि ज्योतिष सिर्फ भविष्य बताने के लिए है, जबकि वास्तव में यह जीवन को समझने और दिशा देने का विज्ञान है।

ज्योतिष आपको यह संकेत देता है कि आगे क्या हो सकता है, । आपके कर्म और निर्णय हमेशा महत्वपूर्ण रहते हैं।

ज्योतिष में बताए गए उपाय (मंत्र, दान, साधना) कोई जादू नहीं हैं, बल्कि वे आपके मन, ऊर्जा और सोच में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए होते हैं।

कोई तीन किताबें जो ज्योतिष की प्रामाणिक जानकारी देतीं हों

उत्तर-1. बृहत पाराशर होरा शास्त्र- इसमें ग्रह, राशियाँ, भाव, दशा, योग आदि का पूरा विज्ञान विस्तार से बताया गया है

2. फलदीपिका- इसमें ग्रहों के विभिन्न भावों में फल, नक्षत्र फल, गोचर, और आयु निर्णय जैसे विषयों को बहुत ही तार्किक तरीके से समझाया गया है, जिससे कुंडली विश्लेषण आसान हो जाता है।

3- बृहज्जातक - वराहमिहिर

वराहमिहिर द्वारा रचित यह ग्रंथ शास्त्रीय ज्योतिष में सर्वोच्च स्थान रखता है।

4. जैमिनी सूत्र- महर्षि जैमिनी

जैमिनी ज्योतिष पद्धति का आधार

ज्योतिष सिखने की शुरूआत कैसे करनी चाहिए यदि कोई इस क्षेत्र में आना चाहता है?

उत्तर- यदि कोई व्यक्ति ज्योतिष शास्त्र सीखना चाहता है, तो उसे इसकी शुरूआत सही दिशा, धैर्य और नियमित अभ्यास के साथ करनी चाहिए। ज्योतिष एक गहरी विद्या है, जिसे समझने में समय और समर्पण दोनों लगते हैं।

सबसे पहले, मूलभूत ज्ञान पर ध्यान देना चाहिए—जैसे 12 राशियाँ, 9 ग्रह और 12 भाव। यही ज्योतिष की नींव हैं। जब यह आधार मजबूत होगा, तभी आगे की जटिल बातें आसानी से समझ आएंगी।

इसके बाद सही पुस्तकों का अध्ययन जरूरी है। शुरूआत में सरल किताबें पढ़ें और फिर धीरे-धीरे शास्त्रीय ग्रंथों की ओर बढ़ें, जैसे बृहत पाराशर होरा शास्त्र। इससे ज्ञान की गहराई बढ़ती है।

केवल पढ़ना ही पर्याप्त नहीं है—कुंडली पढ़ने का अभ्यास करना सबसे महत्वपूर्ण होता है। अपनी और दूसरों की कुंडलियों को देखकर ग्रहों के प्रभाव को समझने की कोशिश करें। यही अभ्यास आपको एक अच्छा ज्योतिषी बनाता है।

आर्टिफिशल इंटेलीजेंट आने के बाद क्या चुनौतीयाँ रहेंगी और उनसे कैसे पार किया जाये?

उत्तर-अक ज्योतिष को खत्म नहीं करेगा, बल्कि उसे बदल देगा।

जहाँ मशीन डेटा दे सकती है, वहीं इंसान दिशा और समझ देता है।

अगर ज्योतिषी समय के साथ खुद को अपडेट करें, तो वे AI के साथ मिलकर और अधिक प्रभावी, सटीक और उपयोगी मार्गदर्शन दे सकते हैं।

कर्म-सिद्धांत: भारतीय चिंतन का आधार स्तंभ

डॉ. एच. एस. रावत
सनातन धर्म गुरू

जो बोते हैं वही काटते हैं — यह सरल वाक्य भारतीय दर्शन की सबसे गहरी सच्चाई को समेटे हुए है। पुनर्जन्म से मोक्ष तक, भाग्य से स्वतंत्रता तक — कर्म-सिद्धांत उस अदृश्य धागे का नाम है जो समस्त भारतीय दार्शनिक परंपराओं को एक सूत्र में पिरोता है।

भारतीय दर्शन की सुदीर्घ परंपरा में यदि कोई एक सिद्धांत है जो आस्तिक और नास्तिक, वैदिक और अवैदिक, सभी विचारधाराओं को एक ही मंच पर ला खड़ा करता है, तो वह है — कर्म-सिद्धांत। चार्वाक को छोड़कर भारत के समस्त दार्शनिक सम्प्रदाय — चाहे वे सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदांत जैसे आस्तिक दर्शन हों, या जैन और बौद्ध जैसे नास्तिक मत — सभी ने इस सिद्धांत को हृदय से स्वीकार किया है। इसका मूल विचार यही है कि प्रत्येक मनुष्य को उसके शुभाशुभ कर्मों का फल अवश्य मिलता है, चाहे वह इस जन्म में मिले या अगले जन्म में।

कर्म-सिद्धांत, पुनर्जन्म, मोक्ष और अध्यात्मवाद — ये चार स्तंभ हैं जिन पर भारतीय दर्शन का विशाल भवन टिका हुआ है। इनमें से प्रत्येक विचार दूसरे का पोषण करता है। कर्म-सिद्धांत से ही पुनर्जन्म की व्याख्या होती है, पुनर्जन्म की अवधारणा से मोक्ष की आकांक्षा उत्पन्न होती है और मोक्ष की साधना के लिए नैतिक जीवन की आवश्यकता सिद्ध होती है। इस प्रकार कर्म-सिद्धांत भारतीय चिंतनधारा का वह सार-तत्व है जिस पर उसके समस्त विचार-विमर्श और वाद-प्रतिवाद टिके हुए हैं।

कर्म प्रधान विश्व करि राखा। जो जस करइ सो तस फल चाखा।।

— गोस्वामी तुलसीदास, श्रीरामचरितमानस

कर्म का स्वरूप और कार्य-कारण नियम

कर्म-सिद्धांत वस्तुतः नैतिकता के क्षेत्र में कारण-कार्य का नियम है। जिस प्रकार भौतिक जगत में प्रत्येक घटना का एक कारण होता है, उसी प्रकार नैतिक जगत में भी प्रत्येक कर्म का एक सुनिश्चित परिणाम होता है।

यह परिणाम अच्छे कर्मों के लिए सुख और सफलता के रूप में और बुरे कर्मों के लिए दुःख और असफलता के रूप में प्रकट होता है। भारतीय परंपरा में सुख-दुःख, हानि-लाभ, जय-पराजय — ये सभी हमारे शुभाशुभ कर्मों के ही परिणाम माने गये हैं।

इस सिद्धांत की दो मूलभूत स्थापनाएँ हैं जो इसे अत्यंत सुदृढ़ आधार देती हैं। पहली है 'कृत प्रणाश' — अर्थात किये गये कर्मों का फल कभी नष्ट नहीं होता। दूसरी है 'अकृतम्युपगम' — अर्थात

बिना किये हुए कर्मों का फल कभी प्राप्त नहीं होता। ये दोनों सिद्धांत मिलकर एक ऐसी अटूट नैतिक व्यवस्था का निर्माण करते हैं जो किसी भी परिस्थिति में भंग नहीं होती।

अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्।
न भुक्तं क्षीयते कर्म जन्म कोटि शतैरपि।।

— ब्रह्मवैवर्त पुराणः मनुष्य द्वारा किये गये शुभाशुभ कर्मों का फल उसे अवश्य भोगना पड़ता है। बिना भोगे करोड़ों जन्मों में भी कर्म का फल क्षीण नहीं होता।

वैदिक 'ऋत' से कर्मवाद तक की यात्रा

कर्मवाद का बीज सर्वप्रथम वैदिक दर्शन में 'ऋत' की अवधारणा के रूप में अंकुरित होता है। वैदिक ऋषि जगत की नैतिक और आध्यात्मिक व्यवस्था में अटूट विश्वास रखते थे और इसी व्यवस्था को वे 'ऋत' कहते थे। ऋत का अर्थ केवल भौतिक व्यवस्था नहीं था — यह ब्रह्माण्ड का वह मूलभूत नियम था जो एक साथ प्राकृतिक, नैतिक और दैवीय आदेशों को संचालित करता था। मौसम के परिवर्तन, सूर्य-चंद्र की गति, जीवन-चक्र — सब ऋत के अनुशासन में थे। और इसी के साथ मानव आचरण भी — सत्य और न्याय का पालन, प्राकृतिक एवं नैतिक नियमों का सम्मान।

यह वैदिक विचार उपनिषद काल तक आते-आते अधिक परिष्कृत और दार्शनिक रूप ग्रहण करता है और कर्मवाद के रूप में प्रतिष्ठित होता है। इस काल में पुनर्जन्म की अवधारणा और मोक्ष की आकांक्षा कर्म-सिद्धांत से अनिवार्य रूप से जुड़ जाती है। उपनिषदों के अनुसार हमारा वर्तमान जीवन पूर्वजन्म के कर्मों का फल है और हमारा भविष्य जीवन वर्तमान कर्मों का परिणाम होगा। इस प्रकार भारतीय दर्शन अतीत, वर्तमान और भविष्य — तीनों जीवनों को एक अटूट कारण-कार्य श्रृंखला में बाँध देता है।

कर्म, भाग्य और स्वतंत्रता का त्रिकोण

कर्म-सिद्धांत की सबसे महत्वपूर्ण और क्रांतिकारी विशेषता यह है कि यह भाग्यवाद और नियतिवाद का धुर विरोधी है। साधारण जन प्रायः यह मान लेते हैं कि भाग्य पूर्वनिर्धारित है और हम उसे बदल नहीं सकते। परंतु कर्म-सिद्धांत इस धारणा को मूल से नकारता है। यह घोषणा करता है कि कर्म ही भाग्य का निमार्ता है — भाग्य कुछ और नहीं बल्कि मनुष्य के पूर्व कर्मों का ही परिणाम है।

हमारे वर्तमान जीवन में जो परिस्थितियाँ उत्पन्न होती हैं और जिन्हें हम भाग्य कहते हैं, वे वास्तव में हमारे पूर्वजन्मों के कर्मों के फल हैं। इस अर्थ में वर्तमान जीवन का भाग्य-फल अटल है। परंतु कर्म-सिद्धांत यहीं रुकता नहीं — वह यह भी बताता है कि वर्तमान में श्रेष्ठ कर्म करके हम अपने भविष्य जीवन के भाग्य को अपनी इच्छानुसार गढ़ सकते हैं। यही इस सिद्धांत की सबसे बड़ी आशावादी शक्ति है — यह मनुष्य को विधाता के हाथ की कठपुतली नहीं मानता, बल्कि उसे अपने भविष्य का स्वयं निमार्ता घोषित करता है।

कर्म-सिद्धांत यह नहीं कहता कि हम भाग्य के दास हैं — यह कहता है कि हम अपने भविष्य के स्वयं निमार्ता हैं।

न्याय-वैशेषिक में 'अदृष्ट' की संकल्पना

न्याय-वैशेषिक दर्शन ने कर्म-सिद्धांत को 'अदृष्ट' की संज्ञा दी है — वह अदृश्य शक्ति जो दृष्टिगोचर नहीं होती, किंतु सृष्टि के समस्त व्यापार को नियंत्रित करती है। वैशेषिक दर्शन के अनुसार सृष्टि का निर्माण परमाणुओं के संयोजन से होता है और प्रलय उनके विच्छेद से। ये परमाणु नित्य, शाश्वत और अविनाशी हैं, किंतु स्वयं गतिहीन हैं। जीवात्माओं का 'अदृष्ट' ही उन्हें गति प्रदान करता है और सृष्टि-रचना संभव होती है।

श्रीरामचरित मानस और प्रबंधन विज्ञान

श्रीरामचरित मानस संसार के सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थों में से एक है। गोस्वामी तुलसीदासजी द्वारा रचित इस ग्रन्थ में मानव जीवन के सभी प्रश्नों का उत्तार मिलता है। गोस्वामी जी ने अपने इस महान ग्रन्थ में समाज के प्रत्येक पक्ष का वर्णन किया है। यह एक ऐसा अदभुत ग्रन्थ है जिसको जिस भी दृष्टिकोण से देखा जाये, उसी दृष्टिकोण से ये ग्रन्थ नजर आता है। गोस्वामी जी का ये महान ग्रन्थ अध्यात्मिक भी है, सामाजिक भी है, राजनैतिक भी है और व्यक्तिगत है। इसलिए गोस्वामी तुलसीदासजी न केवल महान अध्यात्मिक विभुति है, बल्कि वे सामाजिक एवं राजनैतिक शास्त्रा के महान विद्वान भी है। वर्तमान में प्रबंधनशास्त्रा की बड़ी चर्चा है। हर व्यक्ति इस विषय पर बात करता हुआ नजर आता है। आधुनिक प्रबंधन में संगठन की महत्वपूर्ण भूमिका है या हम कह सकते है कि किसी भी संगठन की सफलता उसके प्रबंधन पर निर्भर करती है। अगर हम अच्छा प्रबंधन कर पाएं तो हम अपने संगठन को सफलता के शीर्ष पर पहुँचा सकते है। संगठन कैसा भी हो सकता है, वो राजनैतिक भी हो सकता है, सामाजिक भी हो सकता है, और व्यावसायिक भी हो सकता है।

व्यावसायिक संगठनों के प्रबंधन के जो आजकल प्रचलित सिद्धान्त और मान्यताएं हैं वे ज्यादातर अमेरिका, जापान, और पश्चिमी देशों से लिए गए हैं। आज के समय में जब हम विद्याथियों को प्रबंधन की शिक्षा दे रहे हैं तो उसमें ज्यादातर सिद्धान्त और पुस्तकें बाहर के देशों से आयी है। हमारी शिक्षा प्रणाली और विद्वानों का दोष यह है कि उन्हें हमारे ग्रन्थों और हमारे सनातन ज्ञान में कुछ भी नजर नहीं आता और अगर कोई रखना और पढ़ाना भी चाहे तो उसे सांप्रदायिक करार दिया जाए है। पर हमारे ग्रन्थों में अद्भुत रहस्य और ज्ञान दिया हुआ है। बस जरूरत है उसे आज के सन्दर्भ में देखने की और प्रस्तुत करने की। श्रीरामचरित मानस एक ऐसा ही अद्भुत ग्रन्थ है जिसमें आधुनिक संगठन और उसके प्रबंधन की महान शिक्षा छिपी हुई है। किसी भी आधुनिक प्रबंधन शास्त्रा के पाश्चात्य विद्वानों की संगठनों उनके प्रबनधों और उसके नेतृत्व की परिकल्पना के कई सौ वर्ष पूर्व गोस्वामी तुलसीदास जी ने संगठन प्रबंधन और नेतृत्व के बारे में अद्भुत परिकल्पना श्रीरामचरित मानस में प्रस्तुत की। श्रीरामचरित मानस गोस्वामी तुलसीदासजी का एक शोधग्रन्थ है, जिसमें उन्होंने सम्पूर्ण भारतीय ज्ञान के सार का संकलन किया।

मैंने श्रीरामचरित मानस को आज के आधुनिक संगठन, उसके प्रबंधन और नेतृत्व के सन्दर्भ में देखने की कोशिश की है। किसी भी संगठन की सफलता उसके उद्देश्य और उसके नेतृत्व के गुणों पर निर्भर करती है। अगर संगठन के उद्देश्य सही हैं और नेतृत्व में सही गुण है तो उस संगठन की सफलता निश्चित है। श्रीरामचरित मानस इस विषयों की उचित तरह से रेखांकित करता है।

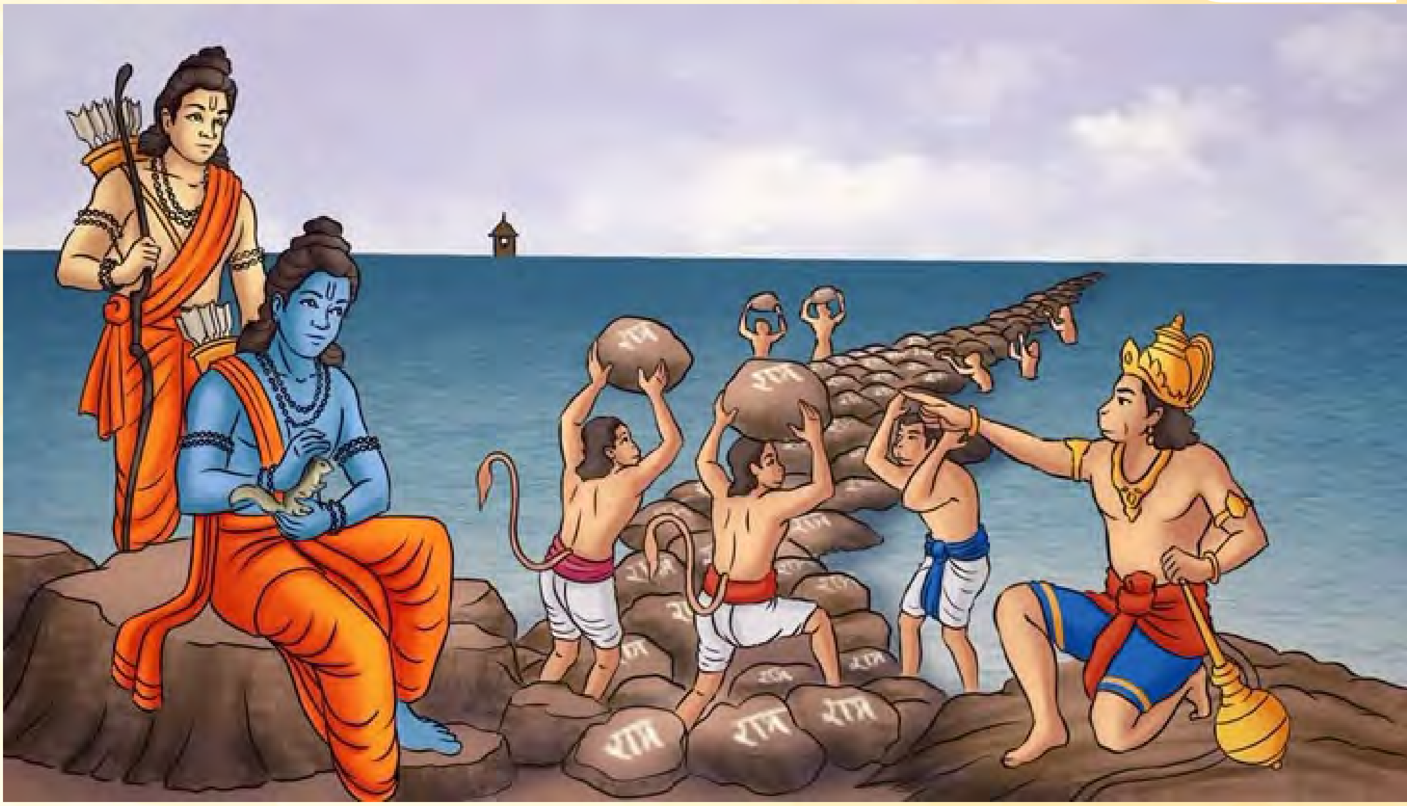

श्रीरामचरित मानस में सात अध्याय हैं बालकाण्ड से लेकर उत्तरकांड तक। उत्तरकांड में गोस्वामी तुलसीदासजी एक आदर्श संगठन की परिकल्पना करते हैं।

आज के ज्यादातर संगठन सिर्फ अधिक से अधिक धन कमाने को सफलता समझते है तुलसीदासजी उत्तरकांड में एक सफल संगठन की परिकल्पना प्रस्तुत करते है। गोस्वामी जी कहते हैं, दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज नहिं काहुहि व्यापा।

गोस्वामीजी के अनुसार वो संगठन सफल हैं जिसमें रहने वाले या काम करने वाले शारीरिक, मानसिक एवं भौतिक कष्टों से मुक्त है। गोस्वामीजी का संगठन त्रिकोणात्मक है जिसकी एक भुजा शारीरिक सम्पत्ति, दूसरी भुजा मानसिक सम्पत्ति एवं तीसरी भुजा भौतिक सम्पत्ति है। यानि कि जब तक किसी संगठन में काम करने वाले इन तीनों सम्पत्तियों से युक्त नहीं हैं तब तक उस संगठन को सफल नहीं माना जा सकता है। केवल भौतिक सम्पत्ति अर्जित करने को ही सफलता नहीं माना जा सकता है। संगठन को देखना पड़ेगा कि उसमें काम करने वाले व्यक्तियों का मानसिक और शरिरिक स्वास्थ्य भी उत्तम हो। अतः केवल वे ही संगठन सफल माने जाएंगे जिनमें काम करने वाले इन तीनों सम्पत्तियों के मालिक हो।

तुलसीदासजी अगले सूत्रा में कहते हैं कि सब नर करहिं परस्पर प्रीति। चलहिं स्वधर्म निरत सुति नीति।। ऐसे संगठन जिसमें काम करने वाले परस्पर प्रेम के साथ रह कर एक दूसरे के साथ सहयोग करते हुए अपने अपने काम करते हुए संगठन के उद्देश्य प्राप्ति में लगे रहते है, सफल माने जाएंगे। जहां पर नकारात्मक विरोधाभास हो और लोग एक दूसरे के काम में हस्तक्षेप करते हों, कभी भी सफल नहीं हो सकते हैं। इसलिए वो संगठन सफल माने जाएंगे जो कि ऐसा वातावरण बना सके जिसमें लोग एक दूसरे को मदद कते हुए अपना अपना काम करें। पर ऐसा संगठन बनाने एक उच्च कोटि का नेतृत्व चाहिए।

गोस्वामी तुलसीदास उत्तरकांड में आदर्श संगठन की स्थापना करते हैं पर इसके पहले छह अध्याय में ऐसे नेतृत्व पर शोध करते हैं जो कि ऐसा आदर्श संगठन बना सके। श्रीराम इस ग्रन्थ के नायक हैं और तुलसीदास रामचरित मानस के रूप में राम यानि नायक के चरित्रा पर शोध करते हैं और पता लगाने की कोशिश करते हैं कि एक उच्च कोटि के नायक में कौन कौन से गुण होने चाहिए। यानि आज से पांच सौ वर्ष पूर्व तुलसीदासजी नायक और उसके चरित्रों या गुणों पर शोध ग्रन्थ लिख रहे थे। ये एक दुख का विषय है आज सम्पूर्ण विश्व में नायक और उसके चरित्रों पर शोध चल रहा है, हम अपने विद्यालयों में पाश्चात्य विद्वानों और पुस्तकों को तो पढ़ा रहे हैं पर हमने अपने इस महान ग्रन्थ की इस सन्दर्भ में उपेक्षा कर दी। तुलसीदासजी रामचरित मानस के बालकाण्ड में एक नायक की स्थापना करते हैं और फिर बाकि के पांच अध्याय यानि लंकाकाण्ड तक उसमें उपस्थित गुणों और चरित्रों

आज के ज्यादातर संगठन सिर्फ अधिक से अधिक धन कमाने को सफलता समझते है तुलसीदासजी उत्तरकांड में एक सफल संगठन की परिकल्पना प्रस्तुत करते है। गोस्वामी जी कहते हैं, दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज नहिं काहुहि व्यापा।

गोस्वामी तुलसीदास उत्तरकांड में आदर्श संगठन की स्थापना करते हैं पर इसके पहले छह अध्याय में ऐसे नेतृत्व पर शोध करते हैं जो कि ऐसा आदर्श संगठन बना सके। श्रीराम इस ग्रन्थ के नायक हैं और तुलसीदास रामचरित मानस के रूप में राम यानि नायक के चरित्रा पर शोध करते हैं और पता लगाने की कोशिश करते हैं कि एक उच्च कोटि के नायक में कौन कौन से गुण होने चाहिए।

पर शोध करते हैं।

गोस्वामी तुलसीदासजी बालकाण्ड में प्रश्न करते हैं कि राम कौन हैं? यानि कि नायक कौन हो सकता है? और उसका उत्तर देते हैं यानि पहली बार नायक को परिभाषित करते है। तुलसीदासजी प्रश्न करते हैं, राम कवन प्रभु पूछउं तोही। कहिऊ बुझाई कृपानिधि मोही।।

वे पूछते हैं कि राम कौन हैं? यानि नायक को परिभाषित करने का अतुलनीय प्रयास है। इस प्रश्न का उत्तर देते हुए वे कहते हैं कि- जासु कृपा अस भ्रम मिट जाई। गिरिजा सोई कृपाल रधुराई।। जिसकी कृपा से हमारे भ्रम दूर हो जाएं वो राम हैं, वो नायक है।

भारत का गौरवशाली शक्तिपीठ: माता वैष्णो देवी

रंजीत मिश्रा
मुजफ्फरपुर, बिहार

भारतभूमि जब-जब धर्म संकट में पड़ा है, तब-तब शक्ति ने किसी न किसी रूप में अवतरण लेकर सृष्टि की रक्षा की है। ऐसी ही एक दिव्य शक्ति हैं माता वैष्णो देवी, जिन्हें माता सती का ऊर्जा स्वरूप माना जाता है। यह कथा हमें आत्मबल, भक्ति और धर्म की विजय का संदेश देती है।

माता सती: शक्ति का मूल स्रोत

प्राचीन काल में दक्ष प्रजापति की पुत्री सती, भगवान शिव की अर्धांगिनी बनीं। परंतु जब उनके पिता ने शिव का अपमान किया, तब सती ने यज्ञकुंड में कूदकर आत्मबलिदान कर दिया। उनके इस बलिदान से सृष्टि कांप उठी। भगवान शिव ने सती के मृत शरीर को लेकर तांडव आरंभ कर दिया, जिससे समस्त ब्रह्मांड संकट में पड़ गया।

इस स्थिति से सृष्टि को बचाने के लिए भगवान विष्णु ने अपने सुदर्शन चक्र से सती के शरीर को 51 भागों में विभक्त कर दिया, जो आज शक्ति पीठों के रूप में पूजनीय हैं।

वैष्णो माता: त्रिदेवों की शक्ति से अवतरण

त्रेता युग में जब रावण और अन्य असुरों के

अत्याचार बढ़े, तब त्रिदेवों ब्रह्मा, विष्णु और महेश ने अपनी शक्तियों को मिलाकर एक दिव्य कन्या का सृजन किया, जिसे त्रिकुटा नाम मिला। यह कन्या आगे चलकर माता वैष्णो देवी के रूप में प्रसिद्ध हुई।

वह तपस्विनी कन्या हिमालय के त्रिकुट पर्वत पर ध्यानमग्न हो गई और लोककल्याण हेतु कई चमत्कारी कार्य किए।

यह क्षेत्र अब एक आधुनिक नगर का रूप ले चुका है, लेकिन इसकी आध्यात्मिक महत्ता आज भी उतनी ही गहरी है।

वैष्णो देवी मंदिर भारत के सबसे लोकप्रिय और माने जाने वाले धार्मिक मंदिरों में एक है। जम्मू में त्रिकुटा पहाड़ियों में मौजूद वैष्णो देवी के दर्शन करने के लिए यहां हर साल लाखों लोग आते हैं। लेकिन नवरात्रों में लाखों की संख्या करोड़ों में भी बदल जाती है। ऐसा माना जाता है कि माता वैष्णो देवी ने रावण के खिलाफ भगवान राम की जीत के लिए प्रार्थना करते हुए नौ दिनों का उपवास 'नवरात्र' किया था। मंदिर 5200 फीट की ऊंचाई पर स्थित है और यहां पहुंचने के लिए आपको कटरा से लगभग 13 किमी दूर ट्रेकिंग करनी पड़ती है। चलिए आपको इस लेख में वैष्णो देवी से जुड़े कुछ दिलचस्प फैक्ट्स बताते हैं।

जानें क्यों कहते हैं इसे गर्भजून गुफा –

ऐसी मान्यता है कि माता ने इस गुफा में नौ महीने बिताए थे, ठीक वैसे ही जैसे कोई शिशु अपनी मां के गर्भ में रहता है। यहां मां वैष्णो देवी 9 महीने

तक भैरो नाथ से छिपी रही थी। इसी वजह से इसे गर्भजून गुफा कहा जाता है और वर्षो से यह माना जाता रहा है कि जो महिलाएं इस गुफा में प्रवेश करती हैं उन्हें प्रसव के दौरान कभी कोई समस्या नहीं होती है। ऐसा कहा जाता है कि मंदिर का निर्माण कराने वाले पंडित श्रीधर को बच्ची के रूप में प्रकट हुई मां वैष्णो देवी ने स्वयं इस गुफा के बारे में बताया था।

एक अरब साल पुरानी गुफाएं -

हालांकि, दिव्य गुफाओं को बहुत से जांचकताओं को दिखाया गया है जिससे पता चला है कि गुफा दस लाख वर्ष पुरानी है, जब से तीर्थयात्रियों ने वैष्णो देवी की यात्रा शुरू की थी।

गुफा में मौजूद है भैरों का शरीर -

कथा के अनुसार जब मां वैष्णो देवी ने भैरो का वध किया था तब उनका शरीर इसी गुफा में रह गया था और सिर घाटी में जा गिरा था। कहते हैं कि इस गुफा में आज भी भैरो का शरीर मौजूद है।

वैष्णो देवी में तीन अलग-अलग प्रमुख गुफाएं हैं, पुरानी गुफा साल के अधिकांश महीनों में बंद रहती है, वो इसलिए क्योंकि ये यूनीक गुफा बहुत पतली है और तीर्थयात्रियों को इसे पार करने में काफी समय लगता है। दो गुफाएं आर्टिफिशियल हैं, जो आपको मुख्य मंदिर में रखी तीन पिंडियों तक ले जाती है।

मंदिर में सुबह शाम दुर्गा देवी की आरती की जाती है। आरती से पहले माता को पानी, दूध, घी और शहद से नहलाया जाता है। फिर साड़ी और गहनों से उनका श्रृंगार किया जाता है। इन सबके बीच मंत्रों और श्लोकों का उच्चारण भी होता है। पहले पुजारी गुफा के अंदर पूजा करते हैं और फिर उसके बाद गुफा के बाहर बैठे भक्तों को आरती दी जाती है। आरती पूरी हो जाने के बाद उन्हें भोग प्रसाद भी दिया जाता है

श्रीधर की कहानी

माता वैष्णो देवी के एक बड़े भक्त जो लगभग सात शताब्दी पहले रहते थे. श्रीधर और उनकी पत्नी देवी मां को पूरी तरह से समर्पित थे. जहां एक बार श्रीधर को एक बार सपने में दिव्य भंडारा करने का आदेश मिला. लेकिन श्रीधर खराब आर्थिक स्थिति के चलते इस बात से चिंतित थे कि वो ये आयोजन कैसे करेंगे. जिसकी चिंता में वे पूरी रात जगे रहें. और फिर सब किस्मत पर छोड़ दिया. सुबह होने पर लोग वहां प्रसाद ग्रहण करने के लिए आने शुरू कर दिए. जिसके बाद उन्होंने देखा कि वैष्णो देवी के रूप में एक छोटी से कन्या उनके कुटिया में पधारी हैं. उनके साथ भंडारा तैयार किया.

और गांव वालों को परोसा. इस प्रसाद को ग्रहण करने के बाद लोगों को संतुष्टि मिली लेकिन वहां मौजूद भैरवनाथ को नहीं उसने अपने जानवरों के लिए और खाने की मांग की. लेकिन वहां वैष्णो देवी के रूप में एक छोटी कन्या ने श्रीधर की ओर से इसके लिए इंकार कर दिया. जिसके बाद भैरवनाथ ये अपमान सह नहीं पाया. और भैरों ने दिव्य लड़की को पकड़ने की कोशिश की, लेकिन ऐसा करने में विफल रहा. और लड़की गायब हो गई. इस घटना के बाद श्रीधर दुखी हो गए. उन्होंने अपनी मां के दर्शन करने की लालसा थी. जिसके बाद एक रात, वैष्णो माता ने श्रीधर के सपने में दर्शन दिए और उन्हें त्रिकुटा पर्वत पर एक गुफा का रास्ता दिखाया, जिसमें उनका प्राचीन मंदिर हैं. श्रीधर ने बताए गई बातों के अनुसार, पवित्र तीर्थ की खोज की और अपना जीवन उनकी सेवा में समर्पित कर दिया. जिसके बाद से ही ये मंदिर दुनियाभर में माता वैष्णो देवी के नाम से जाने जाना लगा.

वैष्णो देवी मंदिर भारत के सबसे लोकप्रिय और माने जाने वाले धार्मिक मंदिरों में एक है। जम्मू में त्रिकुटा पहाड़ियों में मौजूद वैष्णो देवी के दर्शन करने के लिए यहां हर साल लाखों लोग आते हैं। लेकिन नवरात्रों में लाखों की संख्या करोड़ों में भी बदल जाती है। ऐसा माना जाता है कि माता वैष्णो देवी ने रावण के खिलाफ भगवान राम की जीत के लिए प्रार्थना करते हुए नौ दिनों का उपवास 'नवरात्र' किया था। मंदिर 5200 फीट की ऊंचाई पर स्थित है और यहां पहुंचने के लिए आपको कटरा से लगभग 13 किमी दूर ट्रेकिंग करनी पड़ती है।

त्रेता युग में जब रावण और अन्य असुरों के अत्याचार बढ़े, तब त्रिदेवों झ्र ब्रह्मा, विष्णु और महेश ने अपनी शक्तियों को मिलाकर एक दिव्य कन्या का सृजन किया, जिसे त्रिकुटा नाम मिला।

आदि शंकराचार्य ने हिन्दू संस्कृति को किया पुनर्जीवित

मधुसूदन शर्मा
संपादक, कोलकाता सारांश

महापुरुषों की कीर्ति युग-युगों तक स्थापित रहती। उनका लोकहितकारी चिंतन, दर्शन एवं कर्तृत्व कालजयी होता है, सार्वभौमिक, सार्वदेशिक एवं सार्वकालिक होता है और युगों-युगों तक समाज का मार्गदर्शन करता हैं। आदि शंकराचार्य हमारे ऐसे ही एक प्रकाशस्तंभ हैं जिन्होंने एक महान हिंदू धमार्चार्य, दार्शनिक, गुरु, योगी, धर्मप्रवर्तक और संन्यासी के रूप में 8वीं शताब्दी में अद्वैत वेदांत दर्शन का प्रचार किया था। हिन्दुओं को संगठित किया। उन्होंने चार मठों की स्थापना की, जो भारत के विभिन्न हिस्सों में स्थित हैं। आदि गुरु शंकराचार्य हिंदू धर्म में एक विशेष स्थान रखते हैं, उनके विराट व्यक्तित्व को किसी उपमा से उपमित करने का अर्थ है उनके व्यक्तित्व को ससीम बनाना। उनके लिये इतना ही कहा जा सकता है कि वे अनिर्वचनीय है। उन्हें हम धर्मक्रांति एवं समाज-क्रांति का सूत्रधार कह सकते हैं। अपने जन्मकाल से ही शिशु शंकराचार्य के मस्तक पर चक्र का चिन्ह, ललाट पर तीसरे नेत्र तथा कंधे पर त्रिशूल जैसी आकृति अंकित थी, इसी कारण आदि शंकराचार्य को भगवान शिव का अवतार भी माना जाता है। भगवान शिव ने उन्हें साक्षात दर्शन देकर अंध-विश्वास, रूढ़ियों, अज्ञानता एवं पाखण्ड के विरूद्ध जनजागृति का अभियान चलाने का आशीर्वाद दिया। उन्होंने भयाक्रांत और धर्म विमुख जनता को अपनी आध्यात्मिक शक्ति और संगठन युक्ति से संबल प्रदान किया था। उन्होंने नए ढंग से हिंदू धर्म का प्रचार-प्रसार किया और लोगों को सनातन धर्म का सही एवं वास्तविक अर्थ समझाया।

आदि शंकराचार्य के अनूठे प्रयासों से ही आज हिन्दू धर्म बचा हुआ है एवं सनातन धर्म परचम फहरा रहा है। शंकराचार्य ने अपने 32 वर्ष के अल्प जीवन में ही पूरे भारत की तीन बार पदयात्रा की और अपनी अद्भुत आध्यात्मिक शक्ति और संगठन कौशल से उस समय के 72 संप्रदायों तथा 80 से अधिक राज्यों में बंटे इस देश को सांस्कृतिक एकता के सूत्र में इस प्रकार बांधा कि यह शताब्दियों तक विदेशी आक्रमणकारियों से स्वयं को बचा सका और अखण्ड बना रहा। ऐसे दिव्य एवं अलौकिक संत पुरुष का जन्म धार्मिक मान्यताओं के अनुसार आठवीं सदी में वैशाख माह के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को केरल के कालड़ी गांव में ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम शिवगुरु और माता का नाम आर्यम्बा था। बहुत दिन तक सपत्नीक शिव की आराधना करके पुत्र-रत्न पाया था, अतः उसका नाम शंकर रखा। जब ये तीन ही वर्ष के थे तब इनके पिता का देहांत हो गया। ये बड़े ही मेधावी तथा प्रतिभाशाली थे। छह वर्ष की अवस्था में ही ये प्रकांड पंडित हो गए थे और आठ वर्ष की अवस्था में इन्होंने संन्यास ग्रहण किया था। इनके संन्यास ग्रहण करने के समय की कथा बड़ी विचित्र है। कहते हैं, माता एकमात्र पुत्र को संन्यासी बनने की आज्ञा नहीं दे रही थीं। तब एक दिन नदी किनारे एक मगरमच्छ ने शंकराचार्यजी का पैर पकड़ लिया तब इस वक्त का फायदा उठाते हुए शंकराचार्यजी ने अपने माँ से कहा माँ मुझे संन्यास लेने की आज्ञा दो, अन्यथा यह मगरमच्छ मुझे खा जायेगा। इससे भयभीत होकर माता ने तुरंत इन्हें संन्यासी होने की आज्ञा प्रदान की; और आश्चर्य की बात है कि जैसे ही माता ने आज्ञा दी वैसे ही तुरन्त मगरमच्छ ने शंकराचार्यजी का पैर छोड़ दिया। इन्होंने गोविन्द नाथ से संन्यास ग्रहण किया, जो आगे चलकर आदि गुरु शंकराचार्य कहलाए।

आदि शंकराचार्य ने प्राचीन भारतीय उपनिषदों के सिद्धांत और हिन्दू संस्कृति को पुनर्जीवित करने

का अनूठा एवं ऐतिहासिक कार्य किया। साथ ही उन्होंने अद्वैत वेदान्त के सिद्धान्त को प्राथमिकता से स्थापित किया। उन्होंने धर्म के नाम पर फैलाई जा रही तरह-तरह की भ्रांतियों को मिटाने का काम किया। सदियों तक पंडितों द्वारा लोगों को शास्त्रों के नाम पर जो गलत शिक्षा दी जा रही थी, उसके स्थान पर सही शिक्षा देने का कार्य आदि शंकराचार्य ने ही किया। आज शंकराचार्य को एक उपाधि के रूप में देखा जाता है, जो समय-समय पर एक योग्य व्यक्ति को सौंपी जाती है। आदि गुरु शंकराचार्य ने हिंदू धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए चार अगल दिशाओं में चार मठों की स्थापना की। भगवद्गीता, उपनिषदों और वेदांतसूत्रों पर लिखी हुई इनकी टीकाएँ बहुत प्रसिद्ध हैं। इन्होंने अनेक विधर्मियों को भी अपने धर्म में दीक्षित किया था। इन्होंने ब्रह्मसूत्रों की बड़ी ही विशद और रोचक व्याख्या की है।

आदि शंकराचार्य ने हिन्दुओं को संगठित करने के लिए सबसे पहले दक्षिण दिशा में तुंगभद्रा नदी के तट पर श्रृंगेरी मठ की स्थापना की। यहां के देवता आदिवाराह, देवी शारदाम्बा, वेद यजुर्वेद और महावाक्य अहं ब्रह्मस्मि है। सुरेश्वराचार्य को मठ का अध्यक्ष नियुक्त किया। इसके बाद उन्होंने उत्तर दिशा में अलकनंदा नदी के तट पर बद्रिकाश्रम (बद्रीनाथ) के पास ज्योतिर्मठ की स्थापना की जिसके देवता श्रीमन्नारायण तथा देवी श्रीपूर्णगिरि हैं। यहां के संप्रदाय का नाम आनंदवार, वेद अर्थवेद तथा महावाक्य अयमात्मा ब्रह्म है। मठ का अध्यक्ष तोटकाचार्य को बनाया। पश्चिम में उन्होंने द्वारकापुरी में शारदा मठ की स्थापना की जहां के देवता सिद्धेश्वर, देवी भद्रकाली, वेद, सामवेद और महावाक्य तत्वमसि है। इस मठ का अध्यक्ष हस्तमानवाचार्य को बनाया। उधर पूर्व दिशा में जगन्नाथ मठ, जहां की देवी विशाला, वेद ऋग्वेद और महावाक्य प्रज्ञान ब्रह्म है। यहां उन्होंने हस्तामलकाचार्य को मठ का अध्यक्ष बनाया। इस प्रकार शंकाराचार्य ने अपने सांगठनिक कौशल से संपूर्ण भारत को धर्म एवं संस्कृति के अटूट बंधन में बांधकर विभिन्न मत-मतांतरों के माध्यम से सामंजस्य स्थापित किया।

आठ वर्ष की आयु में चारों वेदों में निष्णात हो गए, बारह वर्ष की आयु में सभी शास्त्रों में पारंगत, सोलह वर्ष की आयु में शांकरभाष्य तथा बत्तीस वर्ष की आयु में शरीर त्याग दिया। ब्रह्मसूत्र के ऊपर शांकरभाष्य की रचना कर विश्व को एक सूत्र में बांधने का प्रयास भी शंकराचार्य के द्वारा किया गया है, जो कि सामान्य मानव से सम्भव नहीं है। शंकराचार्य के दर्शन में सगुण ब्रह्म तथा निर्गुण ब्रह्म दोनों का हम दर्शन कर सकते हैं। निर्गुण ब्रह्म उनका निराकार ईश्वर है तथा सगुण

ब्रह्म साकार ईश्वर है। जीव अज्ञान व्यष्टि की उपाधि से युक्त है। तत्त्वमसि तुम ही ब्रह्म हो; अहं ब्रह्मास्मि मैं ही ब्रह्म हूं; अयामात्मा ब्रह्म यह आत्मा ही ब्रह्म है; इन बृहदारण्यकोपनिषद् तथा छान्दोग्योपनिषद वाक्यों के द्वारा इस जीवात्मा को निराकार ब्रह्म से अभिन्न स्थापित करने का प्रयत्न शंकराचार्यजी ने किया है। ब्रह्म को जगकरकेके उत्पत्ति, स्थिति तथा प्रलय का निमित्त कारण बताया हैं। ब्रह्म सत (त्रिकालाबाधित) नित्य, चैतन्यस्वरूप तथा आनंद स्वरूप है। ऐसा उन्होंने स्वीकार किया है।

जिस युग में आदि शंकराचार्य ने जन्म लिया उस समय देशी-विदेशी प्रभावों के दबाव में भारतीय संस्कृति संक्रमण के दौर से गुजर रही थी और उसका पतन आरंभ हो गया था।

उन्होंने भयाक्रांत और धर्म विमुख जनता को अपनी आध्यात्मिक शक्ति और संगठन युक्ति से संबल प्रदान किया था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आदि शंकर जन्म भूमि क्षेत्र में प्रार्थना करते हुए कहा कि आने वाली पीढ़ियां संत-दार्शनिक आदि शंकराचार्य द्वारा हमारी संस्कृति की रक्षा में दिए योगदान की ऋणी रहेंगी। उन्होंने भारत के हर कोने में वेद-वेदांत का प्रसार कर सनातन परंपरा को सशक्त एवं सुदृढ़ किया। दिव्य ज्ञान से आलोकित उनका संदेश देशवासियों के लिए सदैव पथ-प्रदर्शक बना रहेगा। पूर्व राष्ट्रपति एवं दार्शनिक डॉ. राधाकृष्णन ने उन्हें प्राचीन परंपरा का भाष्यकार आचार्य बताते हुए लिखा है कि देश के अन्य भाष्यकारों की तरह अपने अध्ययन में उन्होंने कभी भी किसी प्रकार की मौलिकता का दावा नहीं किया। भारत में आदि शंकराचार्य के प्रयास से एक ऐसे आंदोलन का आविर्भाव हुआ जो सनातन वैदिक धर्म को उसकी अस्पष्टताओं और असंगतियों से निकालकर स्पष्ट तथा सर्वसाधारण के लिए स्वीकार्य बनाना चाहता था। उनकी शिक्षा का आधार उपनिषद थे। उनके द्वारा स्थापित मठों की उपासना पद्धतियां सरल है। वेदांत के विरोधियों से शास्त्रार्थ करने के उनके उत्साह के कारण देश के विभिन्न दार्शनिक केंद्रों में जो जड़ता आई थी उनमें एक नए विचार-विमर्श की प्रेरणा आरंभ हुई।

शंकर द्वारा स्वीकृत दर्शन तथा संगठन बौद्धों के दर्शन और संगठन से मिलते-जुलते थे। आदि शंकराचार्य ने भारत में बढ़ते विभिन्न मतों पर उन्हीं की पद्धति से अपनी वैचारिक श्रेष्ठता सिद्ध की और सनातन वैदिक धर्म की पुनरुत्थान किया।

“मंगला गौरी शक्तिपीठ: जहाँ जागृत हैं आदिशक्ति मां जगदंबा”

बिहार के गया जिले में भस्मकूट पर्वत की चोटी पर विराजित मां मंगला गौरी का मंदिर भारत के प्रमुख शक्तिपीठों में से एक है। यह वह पावन स्थल है जहां पौराणिक मान्यताओं के अनुसार माता सती का वक्षस्थल (स्तन) गिरा था। इसी कारण यह शक्तिपीठ ३पालनहार पीठ३ या ३पालनपीठ३ के नाम से विख्यात है — क्योंकि माँ का स्तन जीवन के पोषण और पालन का प्रतीक है। गया का भस्मकूट पर्वत उन्हीं पवित्र स्थलों में से एक है, जहाँ सती का वक्षस्थल गिरकर दो पाषाण-खंडों के रूप में प्रकट हुआ।

कालिका पुराण और अन्य ग्रंथों में उल्लेख

इस मंदिर की महिमा केवल लोक-परंपरा तक सीमित नहीं है, बल्कि प्राचीन धर्मग्रंथों में भी इसका विस्तृत वर्णन मिलता है। कालिका पुराण के अनुसार, गया में सती का स्तन मंडल भस्मकूट पर्वत के ऊपर गिरकर दो पत्थर बन गए थे। इन्हीं प्रस्तरमयी स्तन मंडल में मंगलागौरी माँ नित्य निवास करती हैं। जो मनुष्य इस शिला का स्पर्श करते हैं, वे अमरत्व को प्राप्त कर ब्रह्मलोक में निवास करते हैं — यह कालिका पुराण की दिव्य घोषणा है।

इस तीर्थ का उल्लेख पद्म पुराण, वायु पुराण, अग्नि पुराण और अनेक प्राचीन धार्मिक ग्रंथों में मिलता है। तांत्रिक परंपरा में भी इस शक्तिपीठ को अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। हिंदू संप्रदाय में यह मंदिर शक्ति के जीवंत वास का केंद्र माना जाता है। यहाँ एक उपा शक्ति पीठ भी है, जिसे भगवान शिव के शरीर का अंश माना जाता है।

भस्मकूट पर्वत — नाम के पीछे का रहस्य

मंगलागौरी शक्तिपीठ के वरिष्ठ पुजारी लखन बाबा उर्फ लाल बाबा के अनुसार, जिस पर्वत पर यह मंदिर स्थित है उसे भस्मकूट पर्वत कहते हैं। यह शक्तिपीठ असम के कामरूप में स्थित माँ कामाख्या देवी शक्तिपीठ के समकक्ष माना जाता है — दोनों ही शक्ति की उपासना के सर्वोच्च केंद्र हैं।

मंदिर पूर्व दिशा की ओर मुख किए हुए, भस्मकूट पर्वत की चोटी पर स्थित है। यहाँ तक पहुँचने के लिए श्रद्धालुओं को १०० से भी अधिक सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती हैं। इन सीढ़ियों पर चढ़ते हुए भक्तों के मन में भक्ति और उत्साह का संचार होता है। पर्वत की चोटी पर पहुँचते ही मंदिर का शांत, दिव्य और भक्तिमय परिसर मन को असीम शांति प्रदान करता है।

सदियों से जलती अखंड ज्योति

इस मंदिर की सबसे रहस्यमयी और चमत्कारी विशेषता इसके गर्भगृह में जलती वह अखंड ज्योति है, जो सदियों से कभी नहीं बुझी। गर्भगृह में घना अंधकार रहता है, परंतु उसी अंधकार में एक दीप अनवरत प्रज्वलित है। यह ज्योति माँ की शाश्वत उपस्थिति और उनकी अनंत शक्ति का प्रतीक मानी जाती है।

भक्तों की आस्था है कि यह दीपक स्वयं माँ मंगला गौरी की ऊर्जा से जलता है — न हवा इसे

बुझा सकती है, न समय इसे थका सकता है। युगों-युगों से जलती यह ज्योति उन लाखों श्रद्धालुओं की आस्था की साक्षी है, जो यहाँ आकर अपनी मनोकामनाएं लेकर लौटे।

मनोकामना पूर्ण करती हैं माँ मंगला गौरी

इस मंदिर के बारे में एक दृढ़ मान्यता सदियों से चली आ रही है — जो भी भक्त सच्चे मन और पूर्ण श्रद्धा से माँ मंगला गौरी की पूजा-अर्चना करता है, माँ उसकी हर मनोकामना पूर्ण करती हैं। कहते हैं कि माँ मंगला अपने किसी भी भक्त को खाली हाथ नहीं लौटाती। दिल की गहराइयों से की गई प्रार्थना यहाँ कभी व्यर्थ नहीं जाती।

यही कारण है कि यहाँ साल के बारह महीने श्रद्धालुओं का तांता लगा रहता है। न केवल बिहार और देश के कोने-कोने से, बल्कि विदेशों से भी श्रद्धालु माँ के दर्शन हेतु यहाँ आते हैं। यह मंदिर विशेष रूप से नवविवाहित दंपत्तियों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, जो सुखी और समृद्ध वैवाहिक जीवन का आशीर्वाद माँगने यहाँ आते हैं।

देवी का स्वरूप — महागौरी, आदिशक्ति का अष्टम रूप

माँ मंगला गौरी को आदि शक्ति माता पार्वती का मंगलकारी स्वरूप माना जाता है। वे माँ दुर्गा के आठवें स्वरूप — महागौरी — के नाम से भी जानी जाती हैं। नवरात्रि के आठवें दिन देवी के इसी स्वरूप की विशेष पूजा होती है। महागौरी का अर्थ है — वह जो पूर्ण रूप से गौरवर्ण, पवित्र और कल्याणकारी हैं।

यह मंदिर नारी शक्ति की उपासना का एक महत्वपूर्ण केंद्र है। यहाँ शक्ति केवल पूजनीय नहीं, बल्कि साक्षात अनुभव करने योग्य है। माँ का यह रूप करुणा और शक्ति का अद्भुत संगम है — एक ओर वे भक्तों की पालनहार हैं, दूसरी ओर दुष्टों का संहार करने वाली महाशक्ति भी।

मंदिर परिसर — एक संपूर्ण धार्मिक जगत

मंदिर का गर्भगृह भव्य नक्काशी से अलंकृत है, जिसमें देवी की प्रतिमा विराजमान है। मंदिर के सामने एक विशाल मंडप बना हुआ है। परिसर में भगवान शिव की प्रतिमा, महिषासुर मर्दिनी की मूर्ति, देवी दुर्गा की प्रतिमा और दक्षिणा काली की मूर्ति भी स्थापित हैं। इस प्रकार यह परिसर एक संपूर्ण धार्मिक जगत का अनुभव कराता है।

इस शक्तिपीठ की एक और अनूठी विशेषता यह है कि यहाँ मनुष्य अपने जीवन काल में ही अपना श्राद्ध कर्म संपादित कर सकता है — जो सामान्यत: मृत्यु के बाद किया जाता है।

यहाँ साल के बारह महीने श्रद्धालुओं का तांता लगा रहता है। न केवल बिहार और देश के कोने-कोने से, बल्कि विदेशों से भी श्रद्धालु माँ के दर्शन हेतु यहाँ आते हैं। यह मंदिर विशेष रूप से नवविवाहित दंपत्तियों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, जो सुखी और समृद्ध वैवाहिक जीवन का आशीर्वाद माँगने यहाँ आते हैं।

माँ मंगला गौरी को आदि शक्ति माता पार्वती का मंगलकारी स्वरूप माना जाता है। वे माँ दुर्गा के आठवें स्वरूप — महागौरी — के नाम से भी जानी जाती हैं।

नवरात्रि के आठवें दिन देवी के इसी स्वरूप की विशेष पूजा होती है। महागौरी का अर्थ है — वह जो पूर्ण रूप से गौरवर्ण, पवित्र और कल्याणकारी हैं।

माँ मंगला गौरी का यह मंदिर केवल एक धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि यह आस्था, इतिहास, पुराण और शक्ति का एक जीवंत संगम है। यहाँ आने वाला हर भक्त यहाँ की शांति और दिव्यता से अभिभूत होकर लौटता है।

मंदिरों में छिपा है सृष्टि का विज्ञान

वेद, स्थापत्य और ब्रह्मांडीय चेतना का अद्भुत संगम

ऋषिराज तिवारी
धर्मगुरू एवं कथावाचक

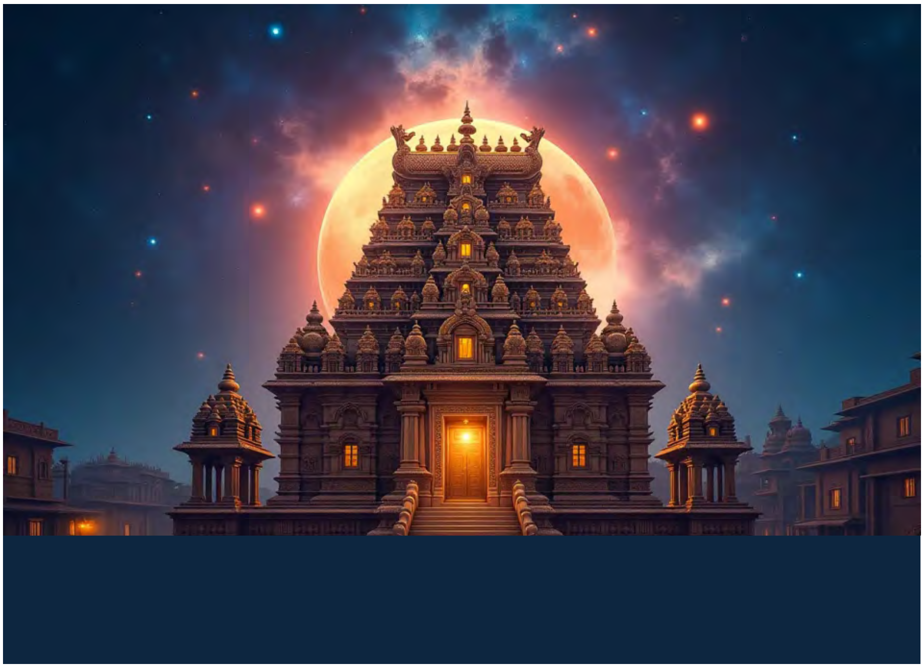

दुनिया की सभी सभ्यताओं में धार्मिक प्रतीकों का प्रयोग हुआ है, परंतु भारत के मंदिर केवल उपासना स्थल नहीं हैं। ये सृष्टि के विज्ञान, ऊर्जा और चेतना के केंद्र हैं। वेदों की ऋषि-प्रज्ञा जब स्थापत्य कला में उतरी, तब उसने मानव की आत्मिक यात्रा को भौतिक रूप दिया। इसीलिए भारतीय मंदिर केवल संस्कृति नहीं, विज्ञान, दार्शनिकता और भावनात्मक चेतना के प्रतीक हैं।

वेदों से मंदिर तक — विचार से मूर्त स्वरूप तक

वेदों ने विचारमूर्ति और मंत्रमूर्ति की अवधारणा दी, और स्थापत्य कला ने इन्हें बिंबमूर्ति के रूप में मूर्त किया।

वेदों का सूत्र **यथा पिंडे तथा ब्रह्मांडे** बताता है कि मंदिर स्वयं एक लघु ब्रह्मांड है — जिसमें सृष्टि के सभी तत्व सन्निहित हैं।

हिरण्यगर्भ सूक्त में कहा गया है कि सृष्टि के आदि में घोर तमस था, और उसी से हिरण्यगर्भ — यानी ऊर्जा का प्रथम स्रोत उत्पन्न हुआ। आधुनिक विज्ञान इसे "Big Bang" कहता है।

मंदिर उसी सृष्टि प्रक्रिया का प्रतीक हैं — जिसमें भूः, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः, सत्य — ये सात लोक प्रकट हुए, और यही मंदिर के स्थापत्य में परिलक्षित होते हैं।

पंचभूतों का अद्भुत संतुलन

भारतीय दर्शन के अनुसार सृष्टि के पांच तत्व — आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी — से यह संसार बना है। मंदिर इन पांचों की उपस्थिति का अनुभव कराते हैं।

आकाश तत्व - मंदिर में ध्वनि का संचार होता है; मंत्रध्वनि, शंखध्वनि और घंटाध्वनि — तीनों आकाश तत्व का प्रतीक हैं।

वायु तत्व - मंदिरों के ऊपरी भाग को विमान कहा गया है, जिसका अर्थ ही है उड़ने योग्य। वायु का संचार यहां निरंतर होता है।

अग्नि तत्व - गर्भगृह का दीपक, वेदिका, और शिखर की ज्वालारूप आकृति अग्नि की उपस्थिति का प्रतीक हैं।

जल तत्व - मंदिर के शीर्ष और आधार दोनों पर कलश होते हैं। यह आकाशीय और पार्थिव जल का प्रतीक है।

पृथ्वी तत्व - मंदिर की ईंटें, पत्थर और लकड़ी — स्वयं पृथ्वी का रूप हैं।

इस प्रकार मंदिर में प्रवेश करना, ब्रह्मांडीय पंचतत्वों के बीच स्वयं को अनुभव करना है।

विराट पुरुष का प्रतीक

वैदिक संकल्पना के अनुसार ब्रह्मांड एक विराट पुरुष है। मंदिर उसी विराट पुरुष का

रूपक है।

जैसे मानव शरीर में जंघा, कटि, नाभि, स्कंध और मुख हैं, वैसे ही मंदिर के भी भाग हैं — तलजंघा, जंघा, कटि, नाभि, स्कंध और शिखर।

मंदिर का गर्भगृह हृदय है, जहां आत्मतत्व स्थित है।

ज्यामिति और विज्ञान की सजीव संरचना

ऋग्वेद के शुल्बसूत्रों में जिन ज्यामितीय सिद्धांतों का उल्लेख है, वही मंदिर निर्माण के आधार हैं।

मंदिर की नींव रखने से पहले भूमि की परीक्षा, बीज अंकुरण, दिशानिर्धारण और वास्तुपुरुष मंडल का निर्माण — सब एक सटीक वैज्ञानिक प्रक्रिया है।

वास्तुपुरुष मंडल में 64 खंड होते हैं — जो 8 दिशाओं और उनके दिक्पालों का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह केवल स्थापत्य नहीं, बल्कि कॉस्मिक ऊर्जा ग्रिड है — जिसके केंद्र में गर्भगृह स्थित होता है।

अग्नि से जल, जल से जीवन

वेदों के अनुसार अग्नि से जल की उत्पत्ति हुई, और जल से पृथ्वी का निर्माण हुआ।

मंदिर के ऊपर और नीचे दोनों जगह कलश इस सृष्टि-क्रम का प्रतीक हैं।

ऊपरी कलश आकाशीय जल का और नीचे का कलश पृथ्वीगत जल का द्योतक है।

कलश में क शिव तत्व और ल पार्वती तत्व का प्रतीक हैं — जो सृष्टि की अभिजनन शक्ति को दर्शाते हैं।

गर्भगृह – ऊर्जा का केंद्र

गर्भगृह शब्द ही अपने भीतर अर्थ समेटे है — जहां जीवन की संभावना है।

यह स्थान अंधकारमय और मौन होता है क्योंकि सृष्टि की उत्पत्ति भी घोर तमस् से हुई थी।

गर्भगृह में दीपक जलाना, उसी सुप्त ऊर्जा को जगाने का प्रतीक है।

यहां स्थित लिंग या बिंब उस ऊर्जातत्व का प्रतीक है जो ऊपर से नीचे प्रवाहित होता है — यह सृजन और संहार, दोनों की गति का संकेत है।

साकार और निराकार का संगम

आदि शंकराचार्य ने कहा कि साकार निराकार से जुड़ने का माध्यम है। मंदिर उसी संगम का प्रतीक है — जहां ब्रह्म की अदृश्य चेतना को मूर्त रूप दिया गया।

वाराहमिहिर ने लिखा कि संपूर्ण सृष्टि ही विकृति रूप में है — और मंदिर उसी विकृति को दिव्यता में रूपांतरित करता है।

भारतीय मंदिर केवल स्थापत्य नहीं, जीवित ब्रह्मांड का प्रतिरूप हैं।

यहां हर ईंट, हर ध्वनि, हर दीपक — सृष्टि के रहस्यों की गूंज है। मंदिर में प्रवेश करना वस्तुतः अपने भीतर के विराट पुरुष, आत्मा और ब्रह्मांड से जुड़ना है। यही कारण है कि मंदिर में खड़े होकर हम केवल ईश्वर के नहीं, पूरी सृष्टि के साक्षी बन जाते हैं।

वेदों ने विचारमूर्ति और मंत्रमूर्ति की अवधारणा दी, और स्थापत्य कला ने इन्हें बिंबमूर्ति के रूप में मूर्त किया।

वेदों का सूत्र यथा पिंडे तथा ब्रह्मांडे बताता है कि मंदिर स्वयं एक लघु ब्रह्मांड है — जिसमें सृष्टि के सभी तत्व सन्निहित हैं।

क्या 84 लाख योनियों के पश्चात ही मानव जीवन प्राप्त होता है ?

अनमोल झा
प्रचारक सनातन

बहुत से लोग 84 लाख योनियों की दुश्वारियों से भरे जन्मों से भयभीत होकर पाप की इच्छाओं के बाबजूद बुरे कर्मो से दूर रहते है। ऐसे लोगों से कहना चाहूंगा आंतरिक इच्छाओं को केवल भयभीत होने के कारण प्रगट नहीं कर पा रहे हो तब यह जान लेना आपके पुनर्जन्म मानव का सम्भव नहीं है।

84 के भय से मुक्त तुम्हें कोई नहीं कर सकता, स्वयं ही कर सकते हो। भय वास्तविक है। तुम चाहोगे कि मैं तुमसे कह दूं कि नहीं जी, कोई चिंता की बात नहीं है, चौरासी कोटि योनियां वगैरह नहीं होतीं--ताकि तुम निश्चित हो जाओ और लग जाओ अपनी वासनाओं की दौड़ में फिर।

सत्य यही है कि प्रकृति का चक्र वैज्ञानिक है, वह घूम रहा है। तुमने अगर मनुष्य होने का लाभ न उठाया तो तुम मनुष्य होने का अधिकार खो देते हो। यह सीधा-सा गणित है। आखिर मनुष्य होने का हक तुम्हें मिला है--किसी कारण से न।

ब्रज के वैष्णव संत से किसी ने पूछा, संन्यस्त होना चाहता हूँ-उसने कहा कि आपको देखकर, आपकी यह दिव्य कांति, आपका यह अपूर्व अपार्थिव सौंदर्य--मेरे मन में भी बड़ी गहन

आकांक्षा उठी है। मगर मैंने कभी इसके पहले कभी सोचा भी नहीं था। और मैं कभी धर्म इत्यादि में उत्सुक भी नहीं रहा। पाखंडियों से मैं जरा दूर ही दूर रहा। मेरे पिता माता भी मुझे अगर कभी ले जाना चाहते हैं तो मैं बच जाता हूं हजार बहाने करके। प्रवचनों की बातें सुन कर मुझे सिर्फ सिरदर्द हो जाता है और ऊब आती है। मगर आपको देखकर मैं बड़ा उत्सुक हो गया हूं और एक भाव उठता है भीतर कि मैं दीक्षित हो जाऊं। मगर यह मेरी समझ में नहीं आता कि अनायास! पीछे कोई सिलसिला नहीं है, कोई श्रृंखला नहीं है। अनायास! इतनी बड़ी बात की मेरे मन में कैसे आ गई!

वैष्णवचार्य ने आंख बंद की और उसे कहा : ्युवक, तुझे पता नहीं, तू पिछले जन्म में हाथी था। जंगल में आग लग गई थी। उसी बीच एक खरगोश तेरी शरण में आया था। जिसे तूने बचाया था अपनी जान देकर। वह घड़ी ऐसी थी कि सारा जंगल आग से लगा था। वह मौका ऐसा था कि तुझे एक बात दिखाई पड़ी हम सभी जीवन के लिए भागे जा रहे हैं यह खरगोश भी बेचारा भागा जा रहा है। मैं थक गया, मैं बड़ा हाथी हूं, तो यह भी थक गया है। और यह किस निश्चिंतता से मेरे पैर के नीचे बैठा है जो मैंने उठाया हुआ है; अब मैं रखूंगा पैर के नीचे तो यह मर जाएगा।

वह घड़ी ऐसी थी कि तू अपने जीवन के लिए इतना उत्सुक था, तेरी जीवटता इतनी प्रबल थी कि बच जाऊं, कि तुझे यह लगा कि जैसे मैं बचना चाहता हूं वैसे सभी बचना चाहते हैं। तुझे बड़ा बोध हुआ। और तू पैर वैसा ही उठाए खड़ा रहा और वह खरगोश नीचे निश्चिंत बैठा रहा। जब खरगोश हट गया तब तूने पैर नीचे रखा। लेकिन पैर अकड़ गया था। तू नीचे न रख पाया, गिर पड़ा। खरगोश तो बच कर निकल गया लेकिन तू उस जंगल में लगी आग में जल कर मर गया। लेकिन मरते वक्त तेरे मन में बड़ी तृप्ति थी, एक बड़ी शांति थी, एक अपूर्व उल्लास था, एक आनंद का भाव था कि मैंने खरगोश को नहीं मारा चलो मैं मर गया, ठीक। उसका फल है कि तू मनुष्य हुआ।'

तूने वह जो करुणा दिखाई, उस करुणा के कारण तू मनुष्य हुआ। उसी करुणा के कारण तेरे भीतर यह बीज पड़ गया।

मैं तुमसे कहता हूं कि तुम मनुष्य हो, यह अकारण नहीं है। कुछ किया होगा। कुछ हुआ होगा। अनंत अनंतयात्रा-पथ पर तुमने अर्जन किया है मनुष्यत्व। यह अर्जित है। लेकिन यह अवसर अवसर ही है। यह तुम्हारी कोई शाश्वत संपदा नहीं है। तुम इसके मालिक नहीं हो गए हो। यह क्षणभंगुर है। यह आज है और कल चला जाएगा। जैसे अर्जित किया है वैसे ही गंवा भी सकते हो।

कब कौन हाथी से मुनष्य जन्म लेगा, या मनुष्य से हाथी आपके भाव से प्रेरित विचार रूपांतरित कर्म ही तय करेंगे।

यही 84 योनियों का चक्र है। बाहरी बातें नहीं अंतरात्मा से प्रगट कर्म ही तय करेंगे कि आप कौन हो और क्या होओगे। प्रकृति के विज्ञान में पाखंड काम नहीं आता।

गृह क्लेश निवारण उपाय

आचार्य विपुल वैदिक
वैदिक ज्योतिषाचार्य एवं वास्तुविद

दुनिया में परिवार से बढ़कर कोई सुख नहीं है। माता-पिता, भाई-बहन आदि रिश्तों से सजा परिवार एक गुलदस्ते की तरह होता है। इन रिश्तों में गलतफहमी व मनमुटाव होने से पूरे परिवार की शांति भंग हो जाती है और इसका असर पूरे परिवार पर पड़ता है। ऐसी स्थिति में रोज-रोज के विवादों से गृह क्लेश होने लगता है। अगर आप भी घर-परिवार में ऐसी परिस्थितियों का सामना कर रहे हैं तो इस लेख के माध्यम से जानें गृह क्लेश निवारण के उपाय।

वैदिक ज्योतिष के अनुसार जन्म कुंडली में द्वितीय भाव परिवार का, चतुर्थ भाव घर का व सप्तम भाव पति-पत्नी से संबंधित होता है। यदि इन भाव का स्वामी कमजोर हो या इन भावों में कोई क्रूर या अशुभ ग्रह जैसे मंगल, शनि, राहु, केतु स्थित हो जाएं तो परिवार में अशांति व

क्लेश होने लगता है। इसके निवारण हेतु अपनी कुंडली का किसी अनुभवी ज्योतिषी से विश्लेषण करवाएं और जो गृह कलह अथवा क्लेश कारक हों, उससे संबंधित उपाय करें।

गृह क्लेश निवारण के उपाय को लेकर वास्तु दृष्टिकोण

वास्तु शास्त्र के सिद्धांतों के अनुसार, दक्षिण-पूर्वी दिशा को अग्नि कोण माना जाता है। चूंकि इस दिशा पर अग्नि तत्व का शासन होता है, ऐसे में परिवार के सदस्यों की खुशी इसी दिशा से उत्पन्न होती। वैसे यदि देखा जाए तो इस दिशा में किचन यानि घर की रसोई होनी चाहिए क्योंकि रसोई घर में अग्नि से संबंधित कार्य जैसे खाना पकाना आदि होते हैं। इस दिशा में बनाए गए खाने का भोग परिवार के सारे सदस्य करते हैं इसलिए यह जरूरी है कि जो लोग (घर की स्त्रियां) अपनी घरेलू गतिविधियों के कारण इस दिशा में अधिक समय व्यतीत करते हैं, वे खुश रहें।

यदि घर की महिलाएं स्वस्थ व खुश रहेंगी तो घर का अग्नि कोण भी खुशहाल व सकारात्मकता से भरा रहेगा जिससे घर में शांति, प्रेम बना रहेगा और तनाव दूर रहेगा। अग्नि तत्व में विघटन आ जाने से परिवार में बहस, झगड़े आदि का माहौल बन जाता है जिससे रिश्ते टूट भी सकते हैं और आप तनावग्रस्त व दुखी हो सकते हैं इसलिए यह सुनिश्चित करें कि आपके घर की दक्षिण-पूर्वी दिशा हमेशा दोष मुक्त रहे तभी उससे संबंधित मूल तत्व यानि अग्नि तत्व परिवार के सभी सदस्यों के बीच प्रेम बनाए रखेगा। वास्तुशास्त्र से जुड़ी यह बातें गृह क्लेश के निवारण का अहम उपाय है।

गृह क्लेश निवारण के अन्य उपाय

गृह क्लेश और अनबन परिवार में रहने वाले किसी भी सदस्य के बीच हो सकता है। फिर चाहें वह पति-पत्नी हों, भाई-भाई हों, सास-बहू, ननद-भाभी या फिर जेठानी-देवरानी हों। भिन्न-भिन्न रिश्तों में होने वाले इन क्लेश से घर-परिवार की शांति भंग हो सकती है। कैसे पाएं इन क्लेश से छुटकारा, आइए जानें-

क्या करें जब क्लेश हो पति-पत्नी के बीच

कई बार आपस में मतभेद या एक-दूसरे के विचारों से सहमत न हो पाने के कारण पति-पत्नी में बहस छिड़ जाती है जो थोड़ी ही देर में लड़ाई यानि कलह का रूप ले लेती है।

यदि ऐसा वाकयुद्ध घर में लगभग रोजाना ही होता है तो दोनों पति-पत्नी को बुधवार के दिन दो घंटे का मौन व्रत धारण करना चाहिए। गृह क्लेश निवारण के उपाय के तौर पर पत्नी को प्रसन्न करने के लिए पति शुक्रवार के दिन उन्हें सुंदर सुगंधित पुष्प या इत्र भेंट कर सकते हैं। इसके साथ ही इस दिन चांदी की कटोरी में से दही शक्कर लेकर पत्नी को खिलाएं। यदि पति पत्नी की मांग में सिंदूर भरें व पत्नी पति के मस्तक पर पीला तिलक लगाए तो भी क्लेश समाप्त होते हैं।

पत्नी को अपने बेडरूम यानि शयनकक्ष के अंदर लाल कपड़े में 100 ग्राम सौंफ सुबह स्नान के बाद बांधकर रखनी चाहिए।

गृह क्लेश के उपाय के तौर पर पति-पत्नी दोनों को फिरोजा रत्न धारण कर लेना चाहिए। फिरोजा रत्न के प्रभाव से वैवाहिक सुख प्राप्त होता है। इसे चांदी की धातु में बनवाएं और अनामिका अंगुली में धारण करें। वैवाहिक जीवन में सुख प्राप्ति की चाह रखने वालों के लिए फिरोजा रत्न बहुत उपयोगी है।

पति-पत्नी प्रतिदिन लक्ष्मी नारायण या गौरी-शंकर के मन्दिर में जाकर उनकी पूजा करें। ऐसा करने से भी घर में शांति रहेगी। चाहें तो सोमवार के दिन दो मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं। यह कार्य गृह क्लेश निवारण का अच्छा उपाय है।

जब क्लेश हो सास-बहू के बीच

- सास-बहू के रिश्ते में शांति बनाए रखने के लिए घर में बर्तनों के गिरने व उनके टकराने की आवाज न आने दें।
- घर को हमेशा साफ-सुथरा व सजाकर रखें।
- घर से नकारात्मक भाव को निकालने के लिए बहू को चाहिए कि वह सूर्योदय से पहले घर में झाड़ू लगाकर कचड़े को घर के बाहर फेंके।
- पितरों का पूजन करें।
- रोटी बनाते वक्त पहली रोटी गाय व आखिरी कुत्ते की निकालें और रोजाना उन्हें खिलाएं।
- *सास व बहू दोनों को ही ऊँ शांति मंत्र का जाप 21 दिनों तक लगातार करना चाहिए.*
- रोटी बनाते वक्त जब तवा चूल्हे पर रखती हैं तो गर्म होने से पहले उस पर ठंडे पानी के छींटे डालें और फिर रोटी बनाएं।

जब क्लेश हो भाई-भाई के बीच

- श्री गणेश व भगवान कार्तिक का आपसी प्रेम भाईचारे की मिसाल है। ऐसे में यदि आपके घर में भी भाई-भाई के बीच क्लेश हो रहा है तो गणेश जी एवं स्वामी कार्तिक जी का पूजन प्रतिदिन करें।
- शिवलिंग पर शमी पत्र चढ़ाएं।
- विष्णु जी को तुलसी पत्र चढ़ाएं।
- माता-पिता एवं पूज्यनीय व्यक्तियों के चरण स्पर्श करें।
- ऊँ रामाय नमः मंत्र का जाप करें।
- रामायण या रामचरित्र मानस का यथा शक्ति पाठ करें।

जब क्लेश हो ननद-भाभी या फिर जेठानी-देवरानी के बीच

गाय के गोबर का दीपक बनाएं और उसमें तेल डालकर जलाएं। इस दीपक में थोड़ा सा गुड़ *डालकर घर के मुख्य दरवाजे पर रखें.*

त्रमः शिव शक्ति स्वरूपाय मम गृहे शांति कुरु-कुरु स्वाहा इस मंत्र का जाप 41 दिन तक नित्य 11 माला (रुद्राक्ष माला से) करें.

मानव में विद्यमान दैवीय शक्ति का रहस्य

इसे जागृत करने से रोग, असफलता और दुःख का निवारण संभव

आचार्य दिग्विजय झा

विश्व के सभी धर्मों के गहन अध्ययन और आधुनिक विज्ञान के अनुसंधान से यह सत्य स्थापित होता है कि समस्त सृष्टि में एक विराट चेतना व्याप्त है। यही शक्ति सूक्ष्म रूप से प्रत्येक मानव के भीतर भी विद्यमान है। हमारे ऋषियों ने ह्यत पिण्डे तत ब्रह्माण्डेह्वकहकर इसी एकत्व सिद्धांत का प्रतिपादन किया था।

आधुनिक मनोविज्ञान भी स्वीकार करता है कि मनुष्य के अवचेतन मन में अपार उपचारक यानी उपचार करने वाली एवं सृजनात्मक शक्ति छिपी है। यदि इस शक्ति को सही दिशा में जाग्रत किया जाए तो व्यक्ति अपने दुःख, रोग, असफलता और भ्रम से मुक्त होकर अपने जीवन का स्वयं निमार्ता बन सकता है।

विश्व के सभी प्रमुख धर्मों का वर्षों तक अध्ययन करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि इस सृष्टि में एक अदृश्य, अनंत और विराट चेतना व्याप्त है। यह चेतना किसी एक धार्मिक स्थल तक सीमित न होकर प्रत्येक अणु, हर जीव, हर मनुष्य में समान रूप से उपस्थित है। प्राचीन ऋषियों ने इसी सत्य को ह्यत पिण्डे तत ब्रह्माण्डेह्व कहकर अभिव्यक्त किया, अर्थात जो ब्रह्माण्ड में है, वही मनुष्य के भीतर भी विद्यमान है। यह तथ्य अब प्रमाणित हो चुका है कि प्रत्येक रोग, प्रत्येक चिंता और प्रत्येक असफलता की जड़ मन में ही होती है, जो ग्रह-नक्षत्रों से प्रभावित होती है। जब हम नकारात्मक विचारों और भय को पोषित करते हैं, तो वही हमारी शारीरिक और मानसिक स्थिति पर प्रभाव डालते हैं।

किंतु जब हम श्रद्धा, विश्वास और सकारात्मक सोच के साथ अपने अवचेतन मन को निर्देश देते हैं, तो वह हमारे जीवन को नवसृजन की दिशा में

प्रवाहित करता है। हम अपने आसपास ऐसे लोगों को देखते हैं जो असंभव प्रतीत होने वाली बीमारियों से भी स्वस्थ हो जाते हैंअथवा गरीबी से उठकर समृद्धि के शिखर तक पहुँच जाते हैं।

मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण

आधुनिक मनोविज्ञान भी इस बात को स्वीकार करता है कि मनुष्य के अवचेतन मन में अपार संभावनाएँ और शक्तियाँ छिपी होती हैं। इन शक्तियों को सही दिशा में सक्रिय करके व्यक्ति अपने जीवन की समस्याओं जैसे रोग, असफलता और दुखों का निवारण कर सकता है।

यह मुख्य रूप से मनुष्य की सृजनात्मक और उपचारक क्षमताओं को संदर्भित करता है।

दैवीय शक्ति के प्रकटीकरण के संकेत

कई लोगों को अपने जीवन में दैवीय सहायता या शक्ति का अनुभव होता है, जिसके संकेत निम्नलिखित हो सकते हैं:

अचानक, अप्रत्याशित सहायता या मार्गदर्शन मिलना, जब व्यक्ति मुश्किल में हओ।

मानसिक शांति और स्थिरता का अनुभव होना।

जीवन में सकारात्मक बदलाव के लिए तीव्र प्रेरणा महसूस करना।

संक्षेप में, मानव में विद्यमान दैवीय शक्ति उसकी सर्वोच्च मानवीय क्षमताओं और गुणों का प्रतीक है, जिसे आंतरिक विकास और सही आचरण से प्राप्त किया जा सकता है।

धनहानि क्यों होती है, कुछ लोगों का क्यों निकल जाता है दिवाला

ज्योतिषाचार्य अशोक कुमार
वैदिक ज्योतिषाचार्य एवं वास्तुविद

अक्सर हम लोग देखते हैं कि जीवन में कुछ अप्रत्याशित घटनाओं के कारण व्यक्ति का नुकसान हो जाता है, कहीं आगजनी में धन नष्ट हो जाता है तो कुछ लोगों का निकल जाता है दिवाला, नुकसान चाहें शेयर बाजार में हो अथवा किसी भी रूप में, अक्सर लोग सोच में पड़ जाते हैं कि क्या कारण है, जिससे उन्हें आकस्मिक धन आदि की हानि का सामना करना पड़ता है, उत्तर नीति शास्त्र के ग्रंथों में बताया गया है।

धर्म-कर्म को मानने वाले एक संत स्वभाव वाले सेठ जी के घर एक बार कोई कुत्ता घुसकर उनका घी खा गया। सेठ जी को बड़ा आश्चर्य हुआ कि हमारी चीज कुत्ता कैसे खा गया। धार्मिक प्रवृत्ति वाले सेठ जी का मानना था कि सत्य की कमाई ऐसे व्यर्थ नहीं बर्बाद हो सकती। उन्होंने काफी सोच-विचार किया कि अवश्य ही कहीं न कहीं उनके घर में पराए व्यक्ति का धन आ गया है, किसी दूसरे का अधिकार मारने से उसके बराबर ही धन का नाश होता है, ऐसा उनका दृढ़ विश्वास था। वह काफी दिन सोच-विचार में उलझे हुए थे कि अकारण ही कुत्ता उनका घी नहीं खा सकता। उन्होंने अपने मुनीम से व्यापार का हिसाब-किताब दिखवाया, तो पता चला कि भूल से छ सौ रुपए किसी सज्जन के ज्यादा ले लिए गए थे, इतने ही मूल्य का घी कुत्ता खा गया। क्योंकि सेठ जी सत्य की कमाई पर दृढ़ निष्ठावान थे, उन्होंने भविष्य के लिए सभी कर्मचारियों को सावधान कर दिया कि कहीं गलती से भी पराया धन उनके पास न आ जाए।

> दिवाला, नुकसान चाहें शेयर बाजार में हो अथवा किसी भी रूप में, अक्सर लोग सोच में पड़ जाते हैं कि क्या कारण है, जिससे उन्हें आकस्मिक धन आदि की हानि का सामना करना पड़ता है, उत्तर नीति शास्त्र के ग्रंथों में बताया गया है।

कौन-सा धन हो जाता है नष्ट

जिस धन में किसी का अधिकार छीना गया हो, या जिसमें धोखा और अन्याय जुड़ा हो, वह धन कभी सुख नहीं देता। जीवन के अनेक उदाहरण इस बात के साक्षी हैं कि असत्य और अधर्म से अर्जित धन विनाश का कारण बन जाता है। कभी बीमारी, कभी दुर्घटना, तो कभी अपमान के रूप में वह धन व्यक्ति के पास टिक नहीं पाता। ईश्वर ने व्यवस्था ही ऐसी बनाई है कि धर्मयुक्त कमाई में ही स्थायित्व रहता है। जो व्यक्ति सत्य के मार्ग पर चलता है, उसकी आय भले ही कम हो, पर वह शांत, सम्मानित और सुरक्षित जीवन जीता है। इसलिए कहते हैं, ह्यसत्य मार्ग से अर्जित धन भले ही कम हो, पर वह सौ जन्मों तक साथ देता है, जबकि असत्य का धन क्षणिक सुख देकर सर्वनाश कर देता है।

घर के मंदिर में गुरु और भगवान -साथ या अलग? जानिए सही वास्तु नियम

ज्योतिषाचार्य नीलम अग्रवाल

वास्तु शास्त्र में घर के मंदिर से जुड़े कई अहम नियमों के बारे में बताया गया है, जिनका पालन करना जरूरी होता है। जिससे कि वास्तु दोष नहीं लगे। वहीं वास्तु में यह भी बताया गया है कि घर के मंदिर में क्या रखना चाहिए और क्या नहीं रखना चाहिए। जैसे घर के मंदिर में कितनी और कैसी देवी-देवताओं की मूर्ति रखनी चाहिए, घर का मंदिर किस दिशा में होना चाहिए। वही कुछ लोग घर के मंदिर में भगवान की प्रतिमा के साथ गुरु की फोटो भी रखते हैं। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको बताने जा रहे हैं कि क्या ऐसा करना सही होता है।

घर के मंदिर में गुरु और भगवान की फोटो एक साथ रखना

हिंदू धर्म में गुरु को ब्रह्मा, विष्णु और महेश के समान माना जाता है। गुरु को ज्ञान का दाता और ईश्वर तक पहुंचने का मार्गदर्शक कहा जाता है। वहीं पुराणों में भी गुरु को ईश्वर का साक्षात रूप बताया गया है। इसलिए जब भी आप घर के मंदिर में गुरु की तस्वीर को रखते हैं, तो यह दशार्ता है कि आप गुरु को भी उसी सम्मान और श्रद्धा से देखते हैं, जैसे कि भगवान को। ऐसे में घर के मंदिर में गुरु और भगवान की फोटो को एक साथ रखना शुभ होता है।

बता दें कि गुरु हमें आध्यात्मिक ज्ञान देते हैं और भगवान तक पहुंचने का रास्ता दिखाते हैं। मंदिर भक्ति और ज्ञान का केंद्र होता है। वहीं घर के मंदिर में गुरु और भगवान की तस्वीरें एक साथ रखने से ज्ञान और भक्ति दोनों का वातावरण बनता है और इससे सकारात्मक ऊर्जा बढ़ती है। इससे हमें गुरु और भगवान दोनों का आशीर्वाद मिलता है। घर में मंदिर में गुरु और भगवान दोनों की तस्वीरें एक साथ रखने से नकारात्मक दूर होती है और घर में सकारात्मकता और शुभता का प्रवेश होता है।

माना जाता है कि घर के मंदिर में गुरु और भगवान दोनों की प्रतिमा एक साथ होने से घर-परिवार में सुख-समृद्धि बनी रहती है। परिवार के लोगों को स्वत: मुश्किलों से बाहर निकलने का समाधान मिल जाता है। घर के मंदिर में गुरु और भगवान की फोटो एक साथ रखने के कुछ नियम भी होते हैं, जिनका ध्यान रखना जरूरी है। इन नियमों का ध्यान रखकर ही शुभता सूचक सिद्ध होगा, वरना घर में दुष्प्रभाव देखने को मिल सकता है।

हमेशा घर के मंदिर में भगवान की तस्वीर या मूर्ति को गुरु की तस्वीर से थोड़ा ऊपर रखना चाहिए। इसकी वजह यह है कि गुरु हमें भगवान तक पहुंचने का मार्ग दिखाते हैं। लेकिन भगवान स्वयं परम सत्ता है और यह सम्मान का प्रतीक है। वास्तु के मुताबिक घर के मंदिर में भगवान के दाहिनी तरफ गुरु की तस्वीर रखना शुभ माना जाता है। दाहिनी दिशा को पुरुष तत्व और प्रतिष्ठा का प्रतीक माना जाता है। इस तरह से फोटो रखने से समाज के व्यक्ति की कीर्ति और सम्मान बढ़ता है।

भगवान शिव के मस्तक पर चंद्रमा बाईं ओर ही क्यों, जानें शिव-चंद्र के गहरे संबंध का रहस्य

हिंदू धर्म में भगवान शिव को देवों का देव महादेव कहा जाता है। माना जाता है कि भगवान शिव का स्वरूप जितना ज्यादा अद्वितीय है, उतना ही रहस्यमयी भी है। भगवान शिव जिन भी चीजों से खुद को सुसज्जित करते हैं, वो भिन्न हैं। जैसे भगवान शिव गले में सर्प, शरीर में भस्म, जटाओं में गंगा और मस्तक पर त्रिनेत्र, यह सभी महादेव के स्वरूप को दिव्य और अद्वितीय बनाते हैं। इस तरह से भगवान शिव के मस्तक पर विराजमान चंद्रमा का स्वरूप और स्थान बिल्कुल अलग है।

चंद्रमा महादेव के मस्तक की शोभा को बढ़ाते हैं और इससे उनको चंद्रशेखर का रूप प्रदान करते हैं। लेकिन क्या आप जानते हैं कि चंद्रमा भगवान शिव के मस्तक के बाईं ओर क्यों स्थित है। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको बताने जा रहे हैं कि चंद्रमा का मस्तक पर विराजमान होने के लिए ये विशेष स्थान क्यों सुसज्जित किया गया।

शिव के मस्तक पर चंद्रमा कैसे हुए विराजमान

पुराणों के मुताबिक समुद्र मंथन से निकला विष जब भगवान शिव ने अपने कंठ में धारण किया, तो शंकर जी की जटाओं से निकलने वाली उग्र गर्मी को शीतलता प्रदान करने के लिए चंद्रमा ने उनके मस्तक पर स्थान लिया। इसी वजह से आज भी चंद्रमा भगवान शिव के मस्तक पर विराजमान हैं और भगवान शिव की शोभा को बढ़ा रहे हैं। चंद्रमा शांति, मानसिक संतुलन और शीतलता का प्रतीक होते हैं, जोकि भगवान शिव के उग्र रूप को संतुलित करते हैं।

चंद्रमा और शिव का संबंध

ज्योतिष में चंद्रमा को भावनाओं, मन, सौंदर्य और शीतलता का प्रतीक माना जाता है। वहीं भगवान शिव वैराग्य, तपस्या और कठोर साधाना के प्रतीक हैं। ऐसे में जब भगवान शिव के मस्तक पर चंद्रमा सुशोभित होता है, तो दोनों ऊजाओं को संतुलित करने में मदद मिलती है और शिव और चंद्रमा एक-दूसरे के पूरक बनते हैं। शिव को कठोरता और चंद्रमा को कोमलता से जोड़ा जाता है। दोनों का संतुलन कठोरता में कोमलता और वैराग्य में शीतलता को दशार्ता है। यह स्थिति हमें संदेश देती है कि जीवन में वैराग्य और तपस्या जरूरी है, लेकिन करुणा और भावनाओं का भी उतना ही महत्व है।

मस्तक के बाईं ओर क्यों वास करते हैं चंद्रमा

ज्योतिष की मानें, तो मनुष्य का शरीर एक तरह का ब्रह्मांड है, जिसके दो पक्ष हैं- दाहिना और बायां पक्ष। दाहिना पक्ष पुरुष तत्व, पिंगला नाड़ी और सूर्य का प्रतीक है। तो बायां पक्ष स्त्री तत्व, चंद्रमा और इड़ा नाड़ी का प्रतीक होता है। भगवान शिव के मस्तक पर बाईं ओर विराजमान चंद्रमा इस बात का प्रतीक है कि चंद्रमा स्त्री तत्व और भावनात्मक ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करता है। क्योंकि बायां भाग इड़ा नाड़ी का स्थान होता है, जोकि ठंडक, शांति और मानसिक स्थिरता का प्रदान करता है, इसलिए चंद्रमा को भगवान शिव के मस्तक के बाएं हिस्से में स्थान मिला।

मां पार्वती और चंद्रमा का संबंध

पौराणिक दृष्टि से चंद्रमा को मां पार्वती का प्रतीक माना जाता है। जिस तरह से भगवान शिव के बाएं हिस्से में मां पार्वती का पास होता है और जिसको अर्धनारीश्वर स्वरूप में देखा जाता है। जब भगवान शिव के बाएं ओर मां पार्वती विराजमान रहती हैं, तो चंद्रमा का भी इस स्थान पर होना स्वाभाविक है। यह दिखाता है कि शिव और शक्ति एक-दूसरे के पूरक हैं।

वहीं भगवान शिव का स्वरूप उग्र और तप्त माना जाता है। क्योंकि उन्होंने गले में विष धारण किया है, त्रिनेत्र में अग्नि है और वह तांडव के संहारक हैं। ऐसे में चंद्रमा भगवान शिव के मस्तक को शीतलता प्रदान करता है। अगर यह शीतल न हो तो भगवान शिव का तेज और भी प्रचंड हो सकता है। इसलिए चंद्रमा को शिव मस्तक के बाईं ओर रखकर उनके संतुलन को साधा गया है।

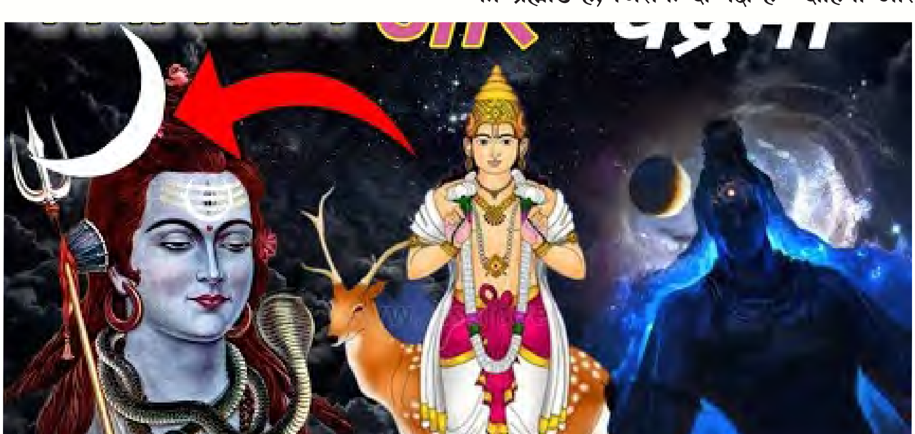

ज्योतिष वाटिका पत्रिका

के आगामी अंक में

आलेख एवं विज्ञापन देने हेतु अनुरोध

"भेजें अपने लेख, धार्मिक एवं ज्योतिषीय खबरें"

धर्म, अध्यात्म, ज्योतिष, वास्तु, संस्कार, त्योहार, सनातन परंपराएं, देवी-देवताओं की महिमा, प्रेरणादायक प्रसंग, शोध आधारित लेख, कुंडली विश्लेषण, ज्योतिषीय समाधान आदि विषयों पर लेख आमंत्रित हैं।

यह आमंत्रण विशेष रूप से उनके लिए है जो–

- सनातन धर्म से जुड़े लोग
- कथावाचक / प्रवचनकर्ता
- ज्योतिषाचार्य / शोधकर्ता

संपर्क करें

"मैगज़ीन + न्यूज़पेपर + वेबसाइट एवं सोशल मीडिया प्रमोशन"

एक साथ

- **मैगज़ीन** — रंगीन एवं आकर्षक डिज़ाइन के साथ
- **न्यूज़पेपर** — व्यापक पाठक वर्ग तक पहुँच
- **वेबसाइट** — आपके लेख व विज्ञापन की ऑनलाइन उपस्थिति
- **सोशल मीडिया** — लाखों लोगों तक प्रभावी प्रसार

संपर्क करें :

सुभाष झा

8584893845, 9804034464

Web : jyotishvatika.com

धर्म की रक्षा, संस्कृति का संवर्धन, सनातन का सम्मान – यही है ज्योतिष वाटिका का अभियान!

राहु केतु से कैसे पैदा होता है कालसर्प दोष, क्या होता है कालसर्प दोष?

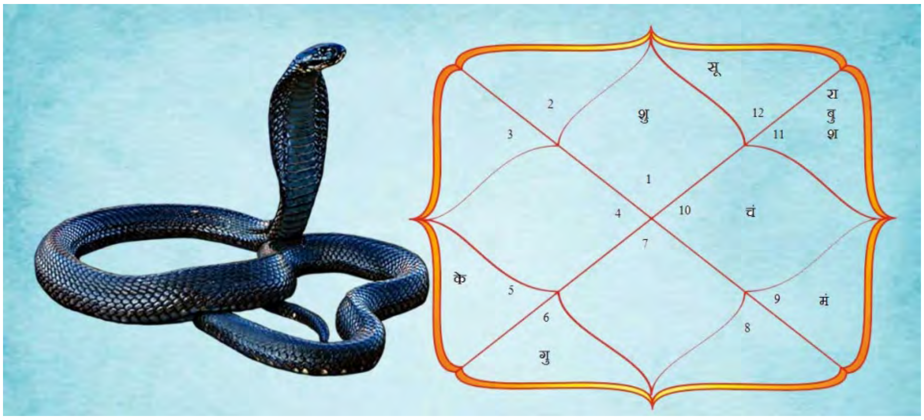

एस्ट्रो दिगंबर उपाध्याय

वैदिक रूप से विचार करें, तो राहु का अधिदेवता काल और प्रति अधिदेवता सर्प है, जबकि केतु का अधिदेवता चित्रगुप्त एवं प्रति अधिदेवता ब्रह्माजी हैं। इससे भी यही स्पष्ट होता है कि राहु का दाहिना भाग काल एवं बायाँ भाग सर्प है।

इसीलिए राहु से केतु की ओर कालसर्प योग बनता है ना कि केतु से राहु की ओर, और राहु एवं केतु की गति वाम मार्गी होने से यह भी स्पष्ट होता है कि जैसे सर्प सिर्फ अपने बाईं ओर ही मुड़ता है, वह दाईं ओर कभी नहीं मुड़ता।

राहु और केतु सर्प ही है और सर्प के मुँह में ही जहर होता है धड़ में नहीं। कालसर्प योग से सम्बन्धित जन्मांकों के अध्ययन करने पर यह दिखाई पड़ता है कि कुछ काल सर्प योग से युक्त जातक असहनीय कष्टों को झेल रहे हैं और कुछ उत्तरोतर समृद्धि प्राप्त कर रहे हैं। इससे यह विदित होता है कि काल रूपी सर्प राहु-केतु जिसके ऊपर प्रसन्न हैं, उसके लिये वह सब सुख सहज में उपलब्ध करा देते हैं

जो साधारण व्यक्तियों को अथक परिश्रम करने पर भी सुलभ नहीं हो पाता और यदि सर्प क्रोधित हो जाये, तो मृत्यु या मृत्यु तुल्य कष्ट दे देता है। मनुष्य के शरीर की मृत्यु तो अवश्यभावी है, उसे कोई नहीं टाल सकता; परन्तु सुख की मृत्यु, समृद्धि की मृत्यु, कीर्ति की मृत्यु आदि मृत्यु तुल्य कष्ट है

जो जीवित व्यक्ति को मृत्यु से अधिक पीड़ादायक है। व्यक्ति जब पद प्रतिष्ठा, पैसा, परिवार आदि के मद में चूर हो जाता है, तब वह अपने सम्माननीय पिता-माता, पितर तथा आश्रित अन्य लोगों को सम्मान न देकर उनसे स्वयं सम्मान कराने की इच्छायें रखता है और उन्हें मानसिक रूप से दुखी करता है। उसी का प्रभाव अगले जन्म में काल सर्प योग के रूप में आता है।

इसलिये जो जातक अपने माता-पिता, पितरों आदि की यथा शक्ति सेवा करते हैं; उन्हे काल सर्प योग अनुकूल हो सुखी बनाता है और जो व्यक्ति इसके विपरीत अपने माता-पिता, पितृ गण आदि को कष्ट देते हैं, उन्हे काल सर्प योग प्रतिकूल फल देकर दुखी एवं कष्टमय जीवन जीने को बाध्य कर देता है।

कोई भी व्यक्ति पैदा होते ही अपनी कुंडली में बहुत सारे योग लेकर आता है. इनमें से कुछ बहुत अच्छे होते हैं तो कुछ बहुत खराब. कुछ योग मिश्रित फल देते हैं.

एऽसी स्थिति में सारी सुख-सुविधाएं होते हुए भी व्यक्ति परेशान रहता है. ज्योतिष शास्त्र के अनुसार ऐसा इसलिए भी होता है क्योंकि कुंडली में किसी ना किसी तरह का दोष होता है. कुंडली में कई तरह के शापित योग होते हैं काल सर्प योग भी इन्हीं दोषों में से एक है. कुंडली में काल सर्प दोष हो तो व्यक्ति को कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है.

काल सर्प दोष के लक्षण

कुंडली में कालसर्प दोष हो तो जातक को कई तरह के कष्टों का सामना करना पड़ता है. कालसर्प दोष होने पर व्यक्ति शारीरिक और आर्थिक रूप से हमेशा परेशान रहता है.कुछ जातकों को इस दोष की वजह से संतान संबंधी कष्ट भी उठाने पड़ते हैं. मतलब या तो वो संतानहीन रहता है या फिर संतान रोगी होती है. कालसर्प दोष होने पर जातक की नौकरी भी बार-बार छूटती रहती है और उसे कई कर्ज भी लेना पड़ जाता है. कुंडली में काल सर्प योग तो ज्योतिष की सलाह से इसका निवारण करना चाहिए.

कालसर्प दोष निवारण पूजा

ज्योतिष शास्त्र में काल सर्प दोष दूर करने के कई आसान उपाय बताए गए हैं. पति-पत्नी के बीच के बीच में हमेशा क्लेश रहता हो, तो आप मोरपंख वाला मुकुट धारण किए भगवान श्रीकृष्ण की प्रतिमा को अपने घर में स्थापित करे. हर दिन उनकी पूजा-अर्चना करें साथ ही ॐ नमो भगवते वासुदेवाय या ॐ नमो वासुदेवाय कृष्णाय नमः शिवाय मंत्र का जाप करें. नियमित रूप से ऐसा करने से कालसर्प दोष की शांति होगी.

रोजगार में परेशानी दूर करने के लिए

अगर काल सर्प योग की वजह से रोजगार में परेशानी आ रही है या फिर नौकरी नहीं मिल पा रही है तो उसके लिए ये उपाय कारगर है.

पलाश के फूल को गोमूत्र में डुबो कर उसे बारीक कर लें फिर इसे सुखाकर इसका चूर्ण बना लें और चंदन पाउडर के साथ मिलाकर शिवलिंग पर त्रिपुण्ड का आकार बनाएं. 21 दिनों तक ऐसा करने से आपकी नौकरी की समस्या दूर होगी.

दैनिक जीवन में ज्योतिष विज्ञान का प्रयोग

अपूर्वा पाण्डेय
कोलकाता
मो : 8479829741

हम ज्योतिष को अपने दैनिक जीवन में कैसे प्रयोग कर सकते हैं

भारतीय संस्कृति में ज्योतिष का विशेष महत्व रहा है। प्राचीन काल से ही हमारे ऋषि-मुनियों ने ग्रह-नक्षत्रों की गति का अध्ययन करके मानव जीवन पर उनके प्रभाव को समझाया। ज्योतिष केवल भविष्य बताने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह जीवन को संतुलित, सकारात्मक और सुव्यवस्थित बनाने की एक कला भी है। यदि सही दृष्टिकोण से देखा जाए, तो हम ज्योतिष का प्रयोग अपने दैनिक जीवन में अनेक प्रकार से कर सकते हैं।

सबसे पहले, ज्योतिष हमें अपने स्वभाव और व्यक्तित्व को समझने में सहायता करता है। प्रत्येक व्यक्ति की जन्म कुंडली में ग्रहों की स्थिति उसके गुण, कमजोरियाँ, रुचियाँ और व्यवहार को दर्शाती है। जब व्यक्ति अपने स्वभाव को समझ लेता है, तो वह अपने निर्णय अधिक समझदारी से लेने लगता है। उदाहरण के लिए, यदि किसी व्यक्ति का चंद्रमा कमजोर हो, तो उसे मानसिक तनाव अधिक हो सकता है। ऐसे में ध्यान, मंत्र जप और सकारात्मक वातावरण उसके लिए लाभकारी हो सकते हैं।

दैनिक जीवन में शुभ समय का चयन भी ज्योतिष का एक महत्वपूर्ण प्रयोग है। किसी नए कार्य की शुरूआत, यात्रा, परीक्षा, व्यवसाय या महत्वपूर्ण निर्णय लेने से पहले शुभ मुहूर्त देखने की परंपरा आज भी प्रचलित है। ऐसा माना जाता है कि शुभ समय में किया गया कार्य अधिक सफलता और सकारात्मक परिणाम देता है। यह व्यक्ति के आत्मविश्वास को भी बढ़ाता है।

ज्योतिष स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाने में भी सहायक हो सकता है। ग्रहों की स्थिति के आधार पर व्यक्ति की शारीरिक और मानसिक प्रवृत्तियों का संकेत मिलता है। यदि किसी ग्रह के कारण स्वास्थ्य संबंधी समस्या की संभावना हो, तो व्यक्ति पहले से सावधानी रख सकता है। उदाहरण के लिए, सूर्य कमजोर होने पर व्यक्ति को नियमित दिनचर्या, योग और सूर्य नमस्कार अपनाने की सलाह दी जाती है।

पारिवारिक और सामाजिक संबंधों में भी ज्योतिष उपयोगी सिद्ध हो सकता है। कुंडली मिलान केवल विवाह तक सीमित नहीं है, बल्कि यह दो व्यक्तियों के स्वभाव और सामंजस्य को समझने का माध्यम भी है। इससे रिश्तों में समझ और धैर्य बढ़ता है। कई बार ज्योतिषीय उपाय, जैसे मंत्र जाप, दान, व्रत या रत्न धारण करना, व्यक्ति के मन में सकारात्मक ऊर्जा उत्पन्न करते हैं और आत्मबल को मजबूत करते हैं।

हालाँकि, यह भी आवश्यक है कि ज्योतिष को अंधविश्वास न बनाया जाए। केवल ग्रहों के भरोसे बैठने के बजाय कर्म को सबसे अधिक महत्व देना चाहिए। ज्योतिष हमें दिशा दिखा सकता है, लेकिन मंजिल तक पहुँचने के लिए परिश्रम और सही सोच आवश्यक है।

अंततः कहा जा सकता है कि ज्योतिष हमारे जीवन का मार्गदर्शक बन सकता है। यदि इसे वैज्ञानिक सोच, आस्था और संतुलन के साथ अपनाया जाए, तो यह व्यक्ति को आत्मज्ञान, मानसिक शांति और बेहतर निर्णय लेने की प्रेरणा देता है। इस प्रकार ज्योतिष का सही उपयोग हमारे दैनिक जीवन को अधिक सुखद, व्यवस्थित और सकारात्मक बना सकता है।

ज्योतिष को हम अपने जीवन में कई व्यावहारिक तरीकों से अपना सकते हैं:

1. संबंधों और संवाद को बेहतर बनाना

आज कई लोग ज्योतिषीय राशियों का उपयोग

अपने मित्रों, परिवार और सहकर्मियों के स्वभाव तथा संवाद शैली को समझने के लिए करते हैं। इससे व्यक्ति अपनी प्रतिक्रिया और व्यवहार को परिस्थिति के अनुसार संतुलित कर सकता है। परिणामस्वरूप, अनावश्यक विवाद कम होते हैं और व्यक्तिगत व पेशेवर संबंध अधिक मजबूत बनते हैं।

2. निर्णय लेने में मार्गदर्शन

ज्योतिष किसी घटना का निश्चित परिणाम नहीं बताता, बल्कि यह दिन की ऊर्जा और वातावरण को समझने में मदद करता है। उदाहरण के लिए, दैनिक या मासिक ग्रह गोचर, विशेष रूप से चंद्रमा की स्थिति, यह संकेत दे सकती है कि कौन-सा समय नए कार्य आरंभ करने, नौकरी के इंटरव्यू देने या किसी महत्वपूर्ण परियोजना को शुरू करने के लिए अधिक अनुकूल हो सकता है। इससे व्यक्ति अधिक आत्मविश्वास और सकारात्मकता के साथ निर्णय लेता है।

3. आत्म-जागरूकता और व्यक्तिगत विकास

नियमित रूप से अपनी ज्योतिषीय प्रोफाइल को समझने से व्यक्ति अपनी प्राकृतिक शक्तियों और कमजोरियों को पहचान सकता है। यह आत्मविश्लेषण व्यक्ति को अपने व्यवहार में सुधार करने, आवेगपूर्ण प्रतिक्रियाओं को नियंत्रित करने और निरंतर आत्म-विकास की दिशा में आगे बढ़ने में सहायता करता है।

4. तनाव और चिंता को कम करना

ज्योतिष जीवन की बड़ी समय-चक्रों को समझने में भी मदद करता है, जैसे 12 वर्षीय बृहस्पति चक्र, जो विकास और अवसरों से जुड़ा माना जाता है, या 29 वर्षीय शनि चक्र, जो अनुशासन और जिम्मेदारी का प्रतीक है। ऐसे चक्र कठिन समय में व्यक्ति को यह समझने में सहायता करते हैं कि संघर्ष स्थायी नहीं होते, बल्कि जीवन के अस्थायी चरण हैं। इससे मानसिक शांति और धैर्य प्राप्त होता है।

सबसे पहले, ज्योतिष हमें अपने स्वभाव और व्यक्तित्व को समझने में सहायता करता है। प्रत्येक व्यक्ति की जन्म कुंडली में ग्रहों की स्थिति उसके गुण, कमजोरियाँ, रुचियाँ और व्यवहार को दर्शाती है। जब व्यक्ति अपने स्वभाव को समझ लेता है, तो वह अपने निर्णय अधिक समझदारी से लेने लगता है। उदाहरण के लिए, यदि किसी व्यक्ति का चंद्रमा कमजोर हो, तो उसे मानसिक तनाव अधिक हो सकता है। ऐसे में ध्यान, मंत्र जप और सकारात्मक वातावरण उसके लिए लाभकारी हो सकते हैं।

हालाँकि, यह भी आवश्यक है कि ज्योतिष को अंधविश्वास न बनाया जाए। केवल ग्रहों के भरोसे बैठने के बजाय कर्म को सबसे अधिक महत्व देना चाहिए। ज्योतिष हमें दिशा दिखा सकता है, लेकिन मंजिल तक पहुँचने के लिए परिश्रम और सही सोच आवश्यक है।

अंततः कहा जा सकता है कि ज्योतिष हमारे जीवन का मार्गदर्शक बन सकता है।

इस प्रकार, ज्योतिष केवल भविष्यवाणी का विषय नहीं है, बल्कि यह आत्मज्ञान, संतुलन और सकारात्मक जीवनशैली विकसित करने का एक प्रभावी साधन भी बन सकता है।

पितृदोष से घबराये नहीं करे सही उपाय

भगवान ने भगवद गीता है स्पष्ट कहा है कि जो जिसको पूजता है वह उसी को प्राप्त होता है।इसलिए अगर जीवन में चाहे कैसी भी समस्याएं कितनी भी बड़ी समस्याएं क्यों ना आ जाए कभी भी भगवान पर से भरोसा कम नहीं होने देना है,पितृदोष जैसी खराब ऊजाएं जीवन में जब प्रवेश करती है तब वे सबसे पहले हमारे ईश्वर पर से भरोसे को तोड़कर उसकी दिशा बदलने की कोशिश करती है। इसलिए कभी भी आपको ऐसी गलती नही करनी चाहिए की आप ईश्वर को छोड़ कर किसी मृत देह आत्मा की पूजा करने लग जाओ।ऐसा करने ना सिर्फ आप समस्याओं में घिरने लगते है बल्कि आप उस मृत जीवात्मा के साथ भी अन्याय करते है और उसकी मुक्ति में अंजाने ही सही पर बाधा बनते है।क्योंकि जब भी हम मृत आत्माओं को पूजने लगते है और लगातार उनका चिंतन करने लगते है तो वे आत्माएं वहा से जा ही नहीं पाती है और इसी संसार में भटकने लगती है और दुखी होती है। हम सब अपने पितरों के मोक्ष के लिए क्या क्या नहीं करते है, उनकी अस्थियो का विश्रजन और उनके पीछे लगातार 13 दिन क्रियाकर्म करते है ताकि जो जीवात्मा इस दुनिया से जा चुका है उसको मुक्ति मिले।पर नासमझी में उन्हे पूज कर और लगातार उनका

प्रतिदिन चिंतन कर उनके मोक्ष प्राप्ति के मार्ग में आप खुद ही बाधा डालने का कार्य करने लगते है,और परिणामस्वरूप आपके जीवन ने दुख पीड़ा और संघर्ष बढ़ने लगता है।हमे अपने पितरों की अपने घर में फोटो जरूर रखनी चाहिए और उन्हें समय समय पर याद कर उनसे आशीर्वाद भी लेना चाहिए,पर भगवान और देवताओं से बढ़कर उनको मान लेना और उनको पूजना ना सिर्फ आपके जीवन में दुख तकलीफ को बढ़ाता है बल्कि पितरों को भी आप ऐसा कर प्रेत योनि में डालने का काम करते है क्योंकि आपके लगातार आह्वान से उनकी आत्माएं यहां से जा ही नहीं पाती

अनुभव के आधार पर है।इसका किसी से कोई सीधा संबध नहीं है।जो लोग जीवन में बहुत ज्यादा दुख और तकलीफ पा रहे है वे लोग हमारी बातो पर अमल करते है तो बहुत ही कम समय में उनके जीवन से नकारात्मक ऊजाएं दूर होने लगती है।

पितृदोष से मुक्ति के उपाय

शाम के समय पीपल के वृक्ष पर दीप जलाएं और नाग स्तोत्र, महामृत्युंजय मंत्र या रुद्र सूक्त या पितृ स्तोत्र व नवग्रह स्तोत्र का पाठ करें. इससे भी पितृ दोष की शांति होती है.

प्रतिदिन इष्ट देवता व कुल देवता की पूजा करें. ऐसा करने से भी पितृदोष का शमन होता है.

विष्णु भगवान के मंत्र जाप, श्रीमद्भागवत गीता का पाठ करें.इससे पित्तरों को शांति मिलती है और दोष में कमी आती है.

पितृदोष निवारण के लिए महामृत्युंजय के मंत्र से शिवजी का अभिषेक करें.

घर की दक्षिण दिशा की दीवार पर अपने स्वर्गीय परिजनों का फोटो लगाकर उस पर हार चढ़ाकर रोजाना उनकी पूजा करें . ऐसा करने से पितृदोष से मुक्ति मिलती है.

नियमित रूप से रोजाना हनुमान चालीसा का पाठ करना करें. हनुमान चालीसा का पाठ करने से हनुमान जी की विशेष कृपा प्राप्त होती है.

अपने स्वर्गीय परिजनों की निर्वाण तिथि पर जरूरतमंदों अथवा ब्राह्मणों को भोजन कराए. भोजन में स्वर्गीय परिजनों की पसंद का बनाएं.

सोशल मीडिया में आपके
ज्योतिष ज्ञान
की सारी बातें नहीं आ सकती
ज्योतिष वाटिका पत्रिका में
अपने आलेख प्रकाशित करें
मिलेगा आपके प्रमोशनल को
नई उचाई
मात्र
800/-
रूपये में
" मैगजीन + न्यूजपेपर + वेबसाईट
एवं सोशल मीडिया प्रमोशन"
एक साथ
मैगजीन
न्यूजपेपर
वेबसाईट
सोशल मीडिया प्रमोशन
ज्योतिष वाटिका
कोलकाता सारांश
"भेजें अपने लेख, धार्मिक एवं ज्योतिषीय खबरें"
सनातन धर्म से जुड़े लोग, कथावाचक / ज्योतिषाचार्य
संपर्क करें।
संपर्क करें : सुभाष झा
8584893845, 9804034464
Web : jyotishvatika.com
आपकी कलम, आपका ज्ञान... पाऐगा समाज में सम्मान और पहचान

अपनायें ये उपाय, विवाह की समस्या होगी दूर

भास्कर झा

शीघ्र विवाह या सही समय पर शादी का होना हर युवक-युवती की इच्छा होती है। विवाह में देरी होने से नौजवानों को कई परेशानियों का सामना करना पड़ता है। विवाह में आने वाली परेशानियों की ज्योतिष शास्त्र में कई वजह बताई जाती हैं। जन्मकुंडली में कई ऐसे योग होते हैं जिनकी वजह से कोई भी युवक या युवती विवाह की खुशी से वंचित रह सकते हैं कई बार यह रूकावट बाहरी बाधाओं की वजह से भी आती हैं। उम्र लगातार बढ़ती जाती है और लाख प्रयास के बाद भी रिश्ते बन नहीं पाते हैं या मनचाहे रिश्तों का तो जैसे अकाल ही पड़ जाता है, इनमें मांगलिक दोष, बृहस्पति और शुक्र ग्रह की खराब स्थिति आदि वजह प्रमुख हैं।

यदि किसी भी युवक और कन्या की कुंडली में ऐसे दोष हैं तो विवाह में देरी या शादी के बाद परेशानी उत्पन्न होने की संभावना बनी रहती है। इस प्रकार की स्थिति होने पर शीघ्र विवाह के उपाय करने में समझदारी रहती है। ज्योतिष विद्या में शीघ्र विवाह के सरल उपाय मौजूद हैं। इन उपाय को करने से शीघ्र विवाह के मार्ग बनते है, तथा विवाह मार्ग की समस्त बाधाएं दूर होती है। व्रत, तंत्र-मंत्र, टोटके जैसे तमाम ज्योतिष और धार्मिक उपायों से विवाह में आ रही मुश्किलों को दूर किया जा सकता है। यहाँ पर हम बहुत ही आसान किन्तु अचूक उपाय बता रहे हैं जिनको सच्चे मन से करने से वर एवं कन्या दोनों को ही निश्चित रूप से मनवांछित लाभ प्राप्त होगा। आइए जानते हैं शीघ्र विवाह के अचूक उपाय।

विवाह में बाधा आने के कारण

कई जातकों की जन्मकुंडली में ऐसे योग भी होते हैं जिससे उनकी शादी में बाधाएँ आती है और अनेक कोशिशों के बावजूद वे शादी की खुशी से वंचित रह जाते हैं इसलिए जिस प्रकार एक चिकित्सक के लिए किसी रोगी को ठीक करने से पहले उसके मर्ज को पहचानना आवश्यक है उसी प्रकार विवाह में हो रही देरी अथवा शादी न होने का कारण भी जानना उतना ही आवश्यक है। आइए शीघ्र विवाह के उपाय पर चर्चा करने से पहले ज्योतिषीय दृष्टिकोण से जानते हैं कि शादी-विवाह में देरी क्यों होती है।

मांगलिक दोष

शीघ्र विवाह के उपाय में मांगलिक दोष का समाधान होना आवश्यक होता है। यदि किसी जातक की कुंडली में मांगलिक दोष हो तो उसकी शादी में बाधा आएगी। इसके अलावा इस दोष के साथ यदि जातक का विवाह हो चुका है तो शादी में कलह की स्थिति बनी रहेगी इसलिए एक मांगलिक की शादी एक मांगलिक जातक से ही होनी चाहिए इससे मांगलिक दोष का प्रभाव कम होता है।

सप्तमेश का बलहीन होना

यदि जातक के सप्तम भाव का स्वामी दुष्ट ग्रहों से पीड़ित हो अथवा अपनी नीच राशि में स्थित हो तो वह बलहीन हो जाता है। इसके अलावा सप्तमेश 6, 8, 12 भाव में स्थित होने पर कमजोर होता है और इसके प्रभाव से जातकों के विवाह में देरी होती है।

विवाह में शनि की भूमिका

विवाह में विलंब में शनि की प्रमुख भूमिका होती है। अत: शनि का उपाय करने से भी शीघ्र विवाह की स्थितियां बनती हैं।

बृहस्पति ग्रह का बलहीन होना

यदि कुंडली में बृहस्पति ग्रह दुष्ट ग्रहों से पीड़ित हो, सूर्य के प्रभाव में आकर अस्त हो अथवा अपनी नीच राशि मकर में स्थित हो तो वह बलहीन हो जाएगा और इससे जातक को शादी-विवाह में दिक्कत का सामना करना पड़ेगा।

शुक्र का नीच होना:-

यदि जातक की कुंडली में शुक्र ग्रह कमजोर होता है तो उसके जीवन में कोई भी काम पूरा नहीं हो पाता है और इसलिए जातक को अपने विवाह में बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

नवांश कुंडली में दोष:-

जन्म कुंडली के नौवें अंश को नवांश कुंडली कहते हैं। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार इस कुंडली से जातक के जीवन साथी के बारे में सटीक अनुमान लगाया जा सकता है इसलिए यदि जातक की इस नवांश कुंडली में दोष हो तो जातक के विवाह में बाधाएँ उत्पन्न होंगी।

शीघ्र विवाह के उपाय

ज्योतिष शास्त्र में मनुष्य की हर एक समस्या का समाधान है। जातकों के शीघ्र विवाह के लिए भी विशेष उपाय दिए गए हैं जो इस प्रकार हैं-

- प्रतिदिन दुर्गा सप्तशती से अर्गलास्तोत्रम् का पाठ करने से अविवाहित जातकों का शीघ्र विवाह होता है।
- प्रत्येक गुरुवार को पानी में एक चुटकी हल्दी डालकर स्नान करें, इससे विवाह के शीघ्र होने के योग बनते हैं।
- यदि कोई वर किसी कन्या को शादी के लिए देखने जा रहा है तो उनको गुड़ खाकर जाना चाहिए, इससे शीघ्र विवाह के योग बनते हैं।
- गणेश जी की अराधना करनी चाहिए और उन्हें लड्डूओं का भोग लगाएँ, ऐसा करने से अविवाहित पुरुषों की शादी में आ रही बाधाएँ दूर होती हैं जबकि कन्याओं को गणपति महाराज को मालपुए का भोग लगाना चाहिए।

● गुरुवार के दिन आटे के दो पेड़ों पर थोड़ी-सी हल्दी लगाकर, थोड़ा गुड़ और चने की दाल गाय को खिलाएं इससे विवाह का योग शीघ्र बनता है।

● कहते हैं कि शिव-पार्वती जी का पूजन करने से विवाह की मनोकामना पूरी हो जाती है इसलिए अविवाहित जातकों को शिवलिंग का कच्चे दूध से अभिषेक करना चाहिए एवं बेल पत्र, अक्षत, कुमकुम आदि से विधिवत पूजा करनी चाहिए।

● शीघ्र विवाह के उपाय के तौर पर जातकों को शरीर पर पीले वस्त्र धारण करना चाहिए।

● सोमवार के दिन चने की दाल एवं कच्चे दूध का दान करें और यह प्रयोग तब तक करते रहना चाहिए जब तक कि जातक का विवाह न हो जाए।

● भोजन में केसर का सेवन करना चाहिए ऐसा करने से जल्दी शादी होने की संभावनाएँ होती हैं।

● गुरुवार को केले के वृक्ष के सामने शुद्ध घी का दीपक जलाएँ और गुरु (बृहस्पति) के 108 नामों का उच्चारण करें और ऐसा करने से जातकों का विवाह शीघ्र होता है।

● जल में बड़ी इलायची डालकर उसे उबालें फिर इस जल को स्नान के पानी में मिलाएँ इसके बाद इस पानी से स्नान करें। इस उपाय से शुक्र के दोषों का निवारण होता है।

● शुक्रवार के दिन सूर्यास्त से पूर्व विवाह शीघ्र होने की ईश्वर से प्रार्थना करें और फिर रसोई घर में बैठकर भोजन ग्रहण करें।

● पूर्णिमा के दिन वट वृक्ष की 108 बार परिक्रमा करने से अविवाहित जातकों की विवाह की इच्छा पूरी होती है यह शीघ्र विवाह का अच्छा उपाय माना जाता है।

● यदि अविवाहित कन्या किसी अन्य कन्या की शादी में जाए और वहाँ दुल्हन के हाथों से मेहंदी लगवा लें तो इससे उसकी शीघ्र शादी की संभावनाएँ बनती है।

● विवाह योग्य कन्या गुरुवार के दिन तकिए के नीचे हल्दी की गांठ को पीले वस्त्र में लपेटकर रखें ऐसा करने से विवाह का योग शीघ्र बनता है।

शीघ्र विवाह हेतु मंत्र-

पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणिम।
तारिणीं दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम।।

यह मंत्र दुर्गा सप्तशती से उद्घृत है। शादी की कामना करने वाले पुरुष जातकों को स्नान के बाद 11 बार इस मंत्र का जाप करना चाहिए। इससे उनकी कामना पूर्ण होगी। यह शीघ्र विवाह का अचूक उपाय है।

ॐ सृष्टिकर्ता मम विवाह कुरु कुरु स्वाहा

मंगलवार के दिन लक्ष्मी-नारायण की प्रतिमा को घर में स्थापित करें, पंचोपचार विधि से पूजन के उपरांत इस मंत्र का 21 बार जाप करें।

क्लीं कृष्णाय गोविंदाय गोपीजनवल्लभाय स्वाहा

उक्त मंत्र का 108 बार जाप करने से अविवाहित कन्या अथवा वर का शीघ्र विवाह संपन्न हो जाता है। इस मंत्र का जाप करने से भगवान श्रीकृष्ण का आशीर्वाद प्राप्त होता है।

व्रत-

वैदिक ज्योतिष में शीघ्र विवाह के कई उपाय बताए गए हैं। विवाह योग्य जातक व्रत रखकर और ईश्वर भक्ति करके भी अपनी शादी की मनोकामना को पूर्ण कर सकते हैं।

सोलह सोमवार व्रत-

सोमवार का व्रत भगवान शिव को समर्पित है और यह जल्दी शादी होने का अचूक उपाय माना जाता है। ऐसा कहा जाता है कि सोलह सोमवार का व्रत पूरे विधि-विधान के साथ करने से सारी मनोकामनाएँ पूरी होती हैं।

बृहस्पतिवार व्रतः-

शीघ्र विवाह के उपाय के तौर पर बृहस्पतिवार के दिन व्रत रखने से बृहस्पति देव प्रसन्न होते हैं। विशेषकर स्त्रियों के लिए यह व्रत शुभ फलदायी माना गया है। इस व्रत को धारण करने से मन की सभी इच्छाएं पूर्ण होती हैं। इस व्रत को विवाह योग्य वर अथवा कन्या विवाह के लिए रखते हैं।

प्रेम और विवाह के बीच सेतु है कुंडली मिलान

एस्ट्रो अरूण अग्रवाल
वैदिक ज्योतिषाचार्य एवं वास्तुविद

भारतीय संस्कृति में विवाह केवल दो व्यक्तियों का नहीं, बल्कि दो परिवारों, दो संस्कृतियों और दो जीवन यात्राओं का मिलन माना जाता है। जीवनसाथी का चयन करते समय केवल बाहरी आकर्षण, शिक्षा या आर्थिक स्थिति ही पर्याप्त नहीं होती, बल्कि दोनों व्यक्तियों की मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक अनुकूलता भी अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। यही कारण है कि सनातन परंपरा में विवाह से पूर्व कुंडली मिलान की परंपरा सदियों से चली आ रही है।

कुंडली मिलान केवल एक धार्मिक प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह ज्योतिष विज्ञान का वह महत्वपूर्ण पक्ष है जो विवाह के बाद बनने वाले संबंधों की स्थिरता, सुख, प्रेम, स्वास्थ्य, संतान सुख, आर्थिक स्थिति तथा पारिवारिक सामंजस्य के बारे में संकेत प्रदान करता है। एक अनुभवी ज्योतिषी दोनों पक्षों की जन्म कुंडलियों का गहन अध्ययन कर यह निर्धारित करता है कि यह संबंध भविष्य में कितना सफल और सुखद रहेगा।

प्रेम को विवाह की पवित्र डोर में बांधने का माध्यम

प्रेम जीवन की सबसे सुंदर अनुभूति है, लेकिन केवल प्रेम ही सफल वैवाहिक जीवन की गारंटी नहीं होता। कई बार गहरा प्रेम होने के बावजूद वैवाहिक जीवन में मतभेद, तनाव और अस्थिरता देखने को मिलती है। इसका कारण ग्रहों की प्रतिकूल स्थिति, स्वभाव में असंगति अथवा भाग्य संबंधी बाधाएं हो सकती हैं।

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार जब दो व्यक्तियों की

कुंडलियों का समुचित विश्लेषण किया जाता है, तब यह स्पष्ट हो जाता है कि उनका प्रेम संबंध विवाह में परिवर्तित होने के बाद कितना सफल रहेगा। कुंडली मिलान संभावित समस्याओं की पूर्व जानकारी देकर भविष्य के लिए मार्गदर्शन प्रदान करता है, जिससे वैवाहिक जीवन अधिक सुखद और सुरक्षित बन सकता है।

विवाह में कुंडली मिलान क्यों आवश्यक है ?

विवाह के बाद जीवन में आने वाली अनेक परिस्थितियों का संकेत कुंडली मिलान के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। यह केवल गुणों की संख्या देखने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह दोनों व्यक्तियों के स्वभाव, मानसिकता, स्वास्थ्य, आर्थिक स्थिति और पारिवारिक जीवन की संभावनाओं का भी अध्ययन करता है।

कुंडली मिलान के प्रमुख लाभ

जीवनसाथी के स्वभाव और व्यवहार को समझने में सहायता मिलती है।

यह जानने में मदद मिलती है कि पति-पत्नी के बीच सम्मान और सामंजस्य कितना रहेगा।

प्रेम, आकर्षण और भावनात्मक जुड़ाव की संभावनाओं का आकलन किया जा सकता है।

वैवाहिक जीवन में आने वाली संभावित समस्याओं की जानकारी पहले से मिल जाती है।

संतान सुख, स्वास्थ्य और आर्थिक स्थिरता के बारे में संकेत प्राप्त होते हैं।

परिवार और समाज में दंपति की स्थिति एवं प्रतिष्ठा का अनुमान लगाया जा सकता है।

ग्रह दोषों और उनके उपायों की जानकारी मिलती है।

अष्टकूट मिलान के आठ महत्वपूर्ण आधार

वैदिक ज्योतिष में विवाह के लिए अष्टकूट मिलान को विशेष महत्व दिया गया है। इसमें कुल 36 गुणों के आधार पर वर और वधू की अनुकूलता का परीक्षण किया जाता है।

1. वर्ण कूट

बारह राशियों को चार वर्णों—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र—में वर्गीकृत किया गया है। वर्ण कूट से यह पता चलता है कि वैवाहिक जीवन में किसका प्रभाव अधिक रहेगा तथा दोनों के बीच सामंजस्य कैसा रहेगा। सामान्यत: वधू का वर्ण वर के वर्ण के समान या उससे निम्न होना शुभ माना जाता है।

2. वश्य कूट

वश्य कूट आकर्षण, नियंत्रण और आपसी प्रभाव का प्रतिनिधित्व करता है। राशियों को मनुष्य, चतुष्पद, जलचर, वनचर तथा कीट वर्गों में विभाजित किया गया है। यह कूट बताता है कि पति-पत्नी एक-दूसरे के प्रति कितने सहयोगी और अनुकूल रहेंगे।

3. तारा कूट

तारा कूट का संबंध भाग्य, स्वास्थ्य और जीवन में आने वाले शुभ-अशुभ प्रभावों से होता है। यह निर्धारित करता है कि विवाह के बाद दंपति का भाग्य एक-दूसरे को कितना सहयोग देगा।

4. योनि कूट

योनि कूट वैवाहिक आकर्षण, शारीरिक अनुकूलता और दांपत्य सुख का महत्वपूर्ण संकेतक माना जाता है। 27 नक्षत्रों को 14 योनियों में वर्गीकृत किया गया है। अनुकूल योनि विवाह को सुखद और स्थायी बनाती है।

5. ग्रह मैत्री

ग्रह मैत्री मानसिक और बौद्धिक सामंजस्य को दर्शाती है। यदि दोनों की जन्म कुंडलियों के स्वामी ग्रह परस्पर मित्र हों तो वैवाहिक जीवन में समझदारी, प्रेम और सहयोग की संभावना अधिक रहती है।

6. गण कूट

गण तीन प्रकार के होते हैं—देव गण, मानव गण और राक्षस गण। यह व्यक्ति के स्वभाव, व्यवहार और सोच का प्रतिनिधित्व करता है। समान अथवा अनुकूल गण वाले जातकों का वैवाहिक जीवन अधिक सुखद माना जाता है।

7. भकूट कूट

भकूट का संबंध आर्थिक स्थिति, पारिवारिक सुख और दंपति के भाग्य से होता है। भकूट दोष होने पर वैवाहिक जीवन में आर्थिक अथवा पारिवारिक चुनौतियां उत्पन्न हो सकती हैं।

8. नाड़ी कूट

नाड़ी कूट को अष्टकूट मिलान में सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। यह स्वास्थ्य, संतान सुख और वंश वृद्धि से जुड़ा होता है। समान नाड़ी वाले जातकों के विवाह को सामान्यत: शुभ नहीं माना जाता, हालांकि कई विशेष परिस्थितियों में इसका परिहार भी संभव होता है।

विभिन्न राशियों की वैवाहिक अनुकूलता

मिथुन और तुला

यह जोड़ी प्रेम, सम्मान और बौद्धिक सामंजस्य का उत्कृष्ट उदाहरण मानी जाती है। दोनों एक-दूसरे की भावनाओं को समझते हैं और जीवन के हर मोड़ पर सहयोगी बने रहते हैं।

कर्क और कर्क

दो कर्क राशि वाले जातकों का संबंध गहरी भावनात्मक समझ पर आधारित होता है। इनके बीच विश्वास और समर्पण की भावना अत्यंत मजबूत होती है।

तुला और धनु

यह जोड़ी रोमांच, रचनात्मकता और उत्साह से भरपूर होती है। परिस्थितियां कैसी भी हों, इनके बीच प्रेम और आकर्षण बना रहता है।

सिंह और मीन

इन राशियों का संबंध स्थिरता और भावनात्मक संतुलन का प्रतीक माना जाता है। मतभेद आने पर भी ये अपने रिश्ते को संभालने में सफल रहते हैं।

वृश्चिक और मकर

यह जोड़ी रोमांस और गहरे आकर्षण के लिए जानी जाती है। इनके बीच कभी-कभी नोकझोंक अवश्य होती है, लेकिन यही उनके रिश्ते में मिठास भी बनाए रखती है।

तुला और मीन

शुरूआती संघर्षों के बावजूद यह जोड़ी समय के साथ मजबूत संबंध विकसित कर सकती है। धैर्य और समझदारी इनके रिश्ते को सफल बनाती है।

क्या केवल गुण मिलना ही पर्याप्त है?

बहुत से लोग मानते हैं कि केवल 36 में से अधिक गुण मिल जाने से विवाह सफल हो जाता है, जबकि वास्तविकता इससे कहीं अधिक व्यापक है।

अष्ट चिरंजीवी - वे आठ महापुरुष जो अमर हैं क्या है इनकी खास बातें

अमरकांत मिश्रा

भारत में जब बड़े आशीर्वाद देते हैं तो सबसे आम आशीर्वाद होता है चिरंजीवी भवः। चिरंजीवी का अर्थ होता है चिरकाल तक जीवित रहना। इसे आम भाषा में अमर होना कहते हैं। वैसे तो लोग समझते हैं कि अमर का अर्थ होता है जो कभी ना मरे, किन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है। खैर अमर होने का वास्तविक अर्थ हम किसी और लेख में समझेंगे। आज इस लेख में हम चर्चा करेंगे उन 8 व्यक्तियों की जो अमर माने जाते हैं।

पुराणों में वर्णित अमर व्यक्तियों के विषय में कुछ लोगों में मतभेद है। कई लोग मानते हैं कि वे सात हैं जिन्हे सप्त चिरंजीवी कहा जाता है तो कुछ लोगो इन्हे आठ मानते हैं जिन्हे अष्ट चिरंजीवी कहा जाता है। सप्त चिरंजीवियों के विषय में एक श्लोक आता है -

अश्वत्थामा बलिव्यासी हनुमांश्च विभीषणः।
कृपः परशुरामश्चैव सप्तैते चिरंजीविनः॥

अथार्तः अश्वत्थामा, बलि, व्यास, हनुमान, विभीषण, कृपाचार्य एवं परशुराम सप्त चिरंजीवी हैं।

इसी श्लोक के आधार पर सप्त चिरंजीवियों का निर्धारण किया जाता है किन्तु वास्तव में ये श्लोक अधूरा है। इसके बाद का श्लोक इसे पूरा करता है। ये है -

सप्तैतान्स्मरेन्नित्यम मार्कंडेयम्तथाष्टमम।
जीवेद्वर्षशतं सोऽपि सर्वव्याधिविवर्जितः॥

अथार्तः इन सातों के नित्य स्मरण के साथ आठवें मार्कण्डेय का भी स्मरण करने से भक्त निरोगी और दीर्घायु बनता है।

इस श्लोक में जो महर्षि मार्कण्डेय को जोड़ा गया है उसी कारण इन चिरंजीवियों की संख्या आठ हो जाती है। इन दोनों श्लोकों को मिला दें तो ये इस प्रकार हो जाता है -

अश्वत्थामा बलिव्यासी हनुमांश्च विभीषणः।
कृपः परशुरामश्चैव सप्तैते चिरंजीविनः॥
सप्तैतान स्मरेन्नित्यम मार्कंडेयम तथाष्टमम।
जीवेद्वर्षशतं सोऽपि सर्वव्याधिविवर्जितः॥

जैसा कि मैंने पहले बताया, अमर होने का अर्थ ये नहीं कि वो कभी मरेगा ही नहीं। इन आठ व्यक्तियों में से अश्वत्थामा, व्यास एवं कृपाचार्य युगांतजीवी हैं, अर्थात वे वर्तमान चतुर्युग के कलियुग के अंत तक जीवित रहेंगे। अन्य पांच अर्थात बलि, हनुमान, विभीषण, परशुराम एवं मार्कण्डेय कल्पान्तजीवी हैं, अर्थात उनकी आयु इनसे भी अधिक हैं और वे कल्प के अंत तक जीवित रहेंगे।

यहाँ ये भी ध्यान रखना आवश्यक है कि सप्त या अष्ट चिरंजीवी दीर्घायु व्यक्तियों का एक समूह है जिसका विशेष महत्त्व है। अन्यथा संसार में और भी कई व्यक्ति हुए हैं जिनकी आयु इनसे भी अधिक मानी गयी है। जैसे कि महर्षि लोमश, काकभुशुण्डि, सप्तर्षि, मानसपुत्र इत्यादि।

अमरता के विषय में हम कभी और विस्तार से बात करेंगे। युग और कल्प की काल गणना के विषय में आप इस लेख में विस्तार से पढ़ सकते हैं। तो आइये इन अष्टचिरंजीवियों के विषय में संक्षेप में जानते हैं।

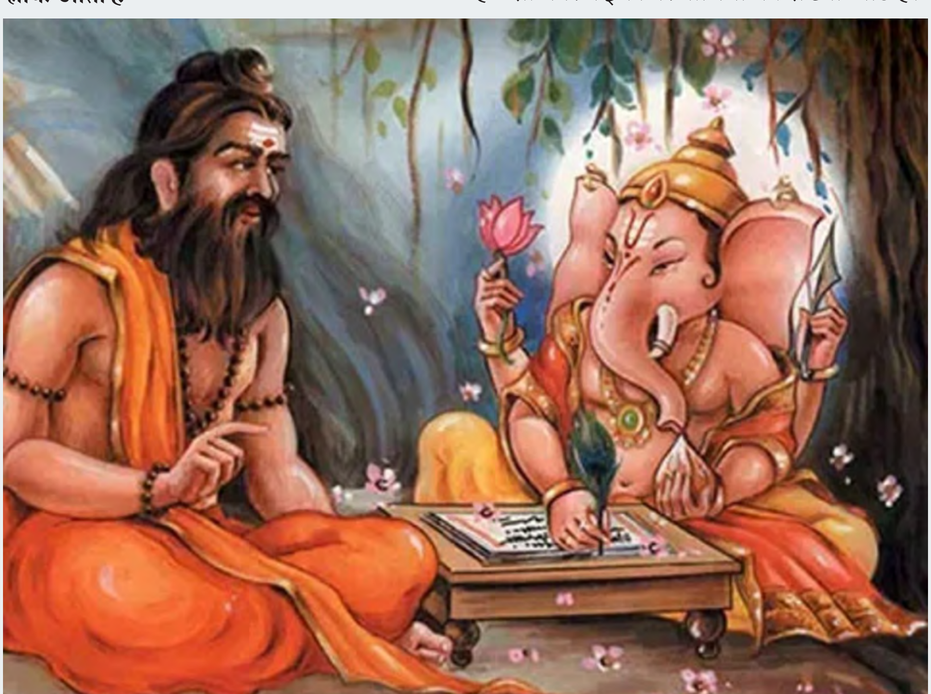

अश्वत्थामा: इन्हे रूद्र का अंशावतार माना जाता है। ये महर्षि भरद्वाज के पौत्र और गुरु द्रोण के पुत्र थे। इनकी माता का नाम कृपी था जो कृपाचार्य की बहन थी। कहा जाता है कि ये अपने मस्तक पर एक दिव्य मणि के साथ ही जन्में थे। वो मणि इन्हे सदैव निरोगी और शक्तिशाली बनाये रखती थी। महाभारत में इनकी वीरता के विषय में बहुत विस्तार पूर्वक लिखा गया है। श्रीकृष्ण के

अतिरिक्त ये एकमात्र ऐसे योद्धा थे जिनके पास नारायणास्त्र था। इन्हे कहीं अतिरथी तो कहीं महारथी कहा गया है। इन्हे अमरता का वरदान इनके पिता द्रोण ने दिया था। महाभारत के अंत में जब अश्वत्थामा और अर्जुन का युद्ध हुआ तो दोनों ने ब्रह्मास्त्र चला दिया। महर्षि व्यास और देवर्षि के कहने पर अर्जुन ने तो अपना ब्रह्मास्त्र वापस ले लिया किन्तु अश्वत्थामा को ये विद्या नहीं आती थी। उसने उस ब्रह्मास्त्र को उत्तरा के गर्भ पर चला दिया जिससे उसका पुत्र मृत पैदा हुआ। बाद में श्रीकृष्ण ने उसे जीवित किया। अश्वत्थामा के इस कृत्य पर श्रीकृष्ण बड़े क्रोधित हुए। वे उसे मार तो नहीं सकते थे किन्तु उन्होंने उसकी मणि उससे छीन ली और उसे युगांत तक भटकने का श्राप दे दिया। कहीं-कहीं ऐसा लिखा है कि उन्हें ३००० वर्षों तक भटकने का श्राप मिला था।

बलिः ये दैत्यराज प्रह्लाद के पोते और विरोचन के पुत्र थे। अपने दादा और पिता की भांति ये भी महान विष्णु भक्त थे। इन्होने अपने प्रताप से देवताओं को स्वर्ग से च्युत कर दिया था और फिर वे स्वर्ग पर सदा के लिए अधिकार प्राप्त करने के लिए अपने गुरु शुक्राचार्य की आज्ञा से एक महान यज्ञ करने लगे। जब उस यज्ञ में अंतिम हविष्य पड़ने ही वाला था कि श्रीहरि ने वामन अवतार लेकर इनसे तीन पग भूमि का दान माँगा। ये महादानी थे इसीलिए अपने गुरु शुक्राचार्य के मना करने पर भी इन्होने उन्हें तीन पग भूमि देने की प्रतिज्ञा कर ली। बाद में वामनदेव ने विराट स्वरुप लेकर एक पग से पृथ्वी और दूसरे पग से आकाश को नाप लिया। तब महादानी दैत्यराज बलि ने उन्हें अपना तीसरा पग अपने शीश पर रखने को कहा। उनकी दानवीरता देख कर भगवान वामन अत्यंत प्रसन्न हुए और उन्होंने तीसरा पग उनके शीश पर रख कर उन्हें पाताल तक धकेल दिया। साथ ही उन्होंने बलि को अनंतकाल तक पाताल का राज्य प्रदान किया। ऐसी मान्यता है कि वर्ष में एक दिन महाबली पृथ्वी पर आते हैं और उसी उपलक्ष्य पर केरल में ओणम का पर्व मनाया जाता है।

व्यासः ये महर्षि पराशर और सत्यवती की संतान थे। इन्हे भगवान विष्णु के 24 अवतारों में से एक माना जाता है। साथ ही महाभारत में इन्हे भगवान ब्रह्मा का भी अवतार कहा गया है। इनकी गिनती हिन्दू धर्म के सर्वकालिक महान ऋषियों में की जाती है। इन्होने ने ही *18* महापुराण और पंचम वेद कहे जाने वाले महाभारत की रचना की। कहते हैं कि महाभारत जैसी उत्कृष्ट रचना देख कर ब्रह्मदेव ने उन्हें अमरता का वरदान दिया था। इन्होने ने ही कुरुवंश की रक्षा की थी और यही धृतराष्ट्र, पाण्डु एवं विदुर के जनक थे। यही नहीं, गांधारी ने भी अपने 100 कौरव इन्ही की कृपा से प्राप्त किये थे। इन्होने ही ब्रह्मा द्वारा रचित वेदों का वर्गीकरण किया और इसी कारण इन्हे वेदव्यास के नाम से जाना गया।

यहाँ ये भी ध्यान रखना आवश्यक है कि सप्त या अष्ट चिरंजीवी दीघार्यु व्यक्तियों का एक समूह है जिसका विशेष महत्त्व है। अन्यथा संसार में और भी कई व्यक्ति हुए हैं जिनकी आयु इनसे भी अधिक मानी गयी है। जैसे कि महर्षि लोमश, काकभुशुण्डि, सप्तर्षि, मानसपुत्र इत्यादि।

अमरता के विषय में हम कभी और विस्तार से बात करेंगे। युग और कल्प की काल गणना के विषय में आप इस लेख में विस्तार से पढ़ सकते हैं। तो आइये इन अष्टचिरंजीवियों के विषय में संक्षेप में जानते हैं।

हनुमानः पवनदेव के औरस पुत्र हनुमान भी रुद्रावतार हैं। श्रीराम अवतार को सार्थक बनाने के लिए इन्होने 24वें कल्प के त्रेता में जन्म लिया था। ये श्रीराम के अनन्य भक्त थे। महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण इनकी लीलाओं से भरा पड़ा है। पृथ्वी पर इन्होने वानर राज केसरी और अंजना के पुत्र के रूप में जन्म लिया। बलशाली तो ये ऐसे थे कि बचपन में सूर्यदेव को निगलने का प्रयास कर बैठे। उस समय उन्हें बचाने के लिए इंद्र ने इन पर वज्र प्रहार किया जिससे इनकी ठोड़ी टूट गयी और ये हनुमान कहलाये। अनेकों देवों से इन्होने वरदान प्राप्त किये और अजेय हो गए। ये वानरराज सुग्रीव के मंत्री थे और इन्होने ही श्रीराम और सुग्रीव की मित्रता करवाई थी। माता सीता का पता लगाने के लिए इन्होने एक ही छलांग में 100 योजन समुद्र लाँघ लिया और अकेले ही सम्पूर्ण लंका को जलाकर लौटे। लक्ष्मण के प्राण बचाने के लिए इन्होने पूरे पर्वत शिखर को ही उखाड़ लिया था।

इन्हे अष्ट सिद्धि और नव निधि का वरदान प्राप्त है जिससे इन्हे कोई परास्त नहीं कर सकता। मनुष्यों, राक्षसों और देवताओं की तो बात ही क्या, श्रीराम के अश्वमेघ यज्ञ में इन्होने स्वयं भगवान शंकर के साथ युद्ध कर उन्हें संतुष्ट किया था। श्रीराम ने इन्हे कल्प के अंत तक राम कथा के प्रचार का आशीर्वद दिया था। कहते हैं कि कलयुग में गोस्वामी तुलसीदास ने भी बजरंगबली के दर्शन किये थे और उन्ही की प्रेरणा से उन्होंने श्री रामचरितमानस की रचना की।

विभीषण: ये महर्षि विश्रवा और कैकसी के पुत्र और महाबली रावण और कुम्भकर्ण के छोटे भाई थे। ये भी श्रीराम के अनन्य भक्त थे और सदैव उनका ही स्मरण करते रहते थे। ये सच्चरित्र और निर्मल ह्रदय थे और इन्होने सदैव रावण को उचित मार्गदर्शन देने का प्रयास किया। राक्षस कुल से विपरीत स्वाभाव के होने के कारण रावण ने इन्हे अपमानित कर लंका से निष्कासित कर दिया। बाद में ये श्रीराम की शरण में गए और श्रीराम ने इन्हे लंका का राजा घोषित किया। लंका युद्ध में इन्होने वानर सेना की बड़ी सहायता की जिससे श्रीराम ने रावण का वध किया और विभीषण को लंका का राज्य सौंपा। उन्होंने ने ही विभीषण को चिरंजीवी होने का वरदान भी दिया। कई स्थानों पर लिखा है कि जब रावण, कुम्भकर्ण और विभीषण की तपस्या से ब्रह्माजी प्रसन्न हुए तो उन्होंने रावण और कुम्भकर्ण को तो अमरता का वरदान नहीं दिया किन्तु विभीषण को प्रभु का सच्चा भक्त जान कर उन्हें चिरंजीवी होने का वरदान दिया।

कृपाचार्य: ये महर्षि शरद्वान के पुत्र थे। शरद्वान का तप भंग करने के लिए इंद्र ने जानपदी नामक एक अप्सरा उनके पास भेजी जिससे उन्हें कृप और कृपी नाम के दो जुड़वाँ पुत्र-पुत्री प्राप्त हुए। तप भंग होने के कारण शरद्वान ऋषि ने उन दोनों को एक वन में छोड़ दिए। उस वन से महाराज शांतनु ने इन दोनो को प्राप्त किया और इनका पालन पोषण किया। बड़े होने के बाद कृपाचार्य कुरुवंश के कुलगुरु के पद पर आसीन हुए और कृपी का विवाह द्रोणाचार्य से हुआ। कृपाचार्य कौरवों और पांडवों के प्रथम गुरु भी थे। कहा जाता है कि इन्होने अपने तप से अमरत्व को प्राप्त किया था और युद्ध में वे अवध्य थे। पितामह भीष्म ने इन्हे अतिरथी कह सम्बोधित किया था। महाभारत युद्ध की समाप्ति पर कौरव सेना के बचे तीन योद्धाओं में ये एक थे। अन्य दो अश्वत्थामा और कृतवर्मा थे। जब युधिष्ठिर राजा बनें तो उन्होंने पुनः कृपाचार्य को कुलगुरु के पद पर नियुक्त किया। अगले मन्वन्तर अर्थात सर्वाणि मनु के शासनकाल में कृपाचार्य सप्तर्षियों में से एक होंगे।

परशुराम: ये भगवान विष्णु के छठे अवतार थे और महर्षि भृगु के कुल में इनका जन्म हुआ। इनके पिता महर्षि जमदग्नि और माता रेणुका थी। ये महर्षि विश्वामित्र के नाती थे। इन्होने अपने तप से त्रिदेवों को प्रसन्न किया और उनसे कई वरदान प्राप्त किये। महादेव ने इन्हे अपने शिष्य के रूप में स्वीकार किया और सभी प्रकार के दिव्यास्त्र के अतिरिक्त श्विद्युतभिर नामक एक विकराल परशु भी दिया जिस कारण ये परशुराम के नाम से प्रसिद्ध हुए। जब कर्त्यवीर्य अर्जुन और जमदग्नि में विवाद हुआ तो परशुराम ने युद्ध में सहस्त्रार्जुन का वध किया। बाद में उनके पुत्रों ने महर्षि जमदग्नि की हत्या कर दी। इससे परशुराम इतने क्रोधित हुए कि उन्होंने 21 बार पृथ्वी से क्षत्रियों का समूल नाश कर दिया और सम्यक पंचक में उनके रक्त से पांच सरोवर भर दिए। बाद में महर्षि कश्यप ने उन्हें समझा-बुझा कर क्षत्रियों के प्राण बचाये। श्रीराम ने जब अवतार लिया तो उनका वास्तविक स्वरुप पहचान कर इन्होने संन्यास धारण किया। महाभारत में ये भीष्म, द्रोण एवं कर्ण के गुरु थे। हर कलियुग के अंत में जब कल्कि अवतार होता है तो भगवान परशुराम ही उनका गुरुपद सँभालते हैं।

मार्कण्डेय: ये भृगुवंशी विधाता के पौत्र और महर्षि मृकण्ड और मरुद्मति के पुत्र थे। ये अल्पायु थे और इनकी कुंडली के अनुसार इनकी मृत्यु केवल 16 वर्ष में होनी थी। ये जानकर मार्कण्डेय बहुत छोटी आयु से ही महादेव की आराधना करने लगे। जब ये 16 वर्ष की आयु के हुए तो इन्हे लेने यमदूत आये किन्तु इनके तेज को देख कर भयभीत हो गए। तब स्वयं यमराज इनके प्राण लेने आये। उन्हें आया देख कर मार्कण्डेय ने शिवलिंग को पकड़ लिया और महादेव का स्मरण करने लगे। तब यमराज ने अपना पाश इनके गले में डाला और इन्हे बलपूर्वक खींचने लगे। उसी समय मार्कण्डेय ने महामृत्युंजय मन्त्र की रचना की जिससे स्वयं भगवान शंकर वहां प्रकट हुए और यमराज के वध को ही उद्धत हुए। बाद में यमराज ने उनसे क्षमा याचना की और महादेव की कृपा से मार्कण्डेय चिरंजीवी बने। इन्होने ने ही उर्वशी का अभिमान भी भंग किया था। कहते हैं कि प्रलय के समय मार्कण्डेय सभी जीवों और वनस्पतियों के साथ सुरक्षित रहते हैं और प्रलय के बाद सबको पुनःस्थापित करते हैं। इनकी आयु बहुत अधिक बताई गयी है और इसी कारण लगभग सभी पुराणों में हमें मार्कण्डेय उवाच अर्थात मार्कण्डेय ने ऐसा कहा, ये वाक्य अवश्य मिलता है।

विष्णु जी के साथ ही श्री क्यों लगाया जाता है?

आप सभी ने ये ध्यान दिया होगा कि जब भी हम भगवान विष्णु और उनके अवतारों के विषय में बात करते हैं तो हम उनके आगे श्री शब्द लगाते हैं, जैसे श्रीहरि, श्रीराम, श्रीकृष्ण इत्यादि। किन्तु ऐसा हम भगवान ब्रह्मा, महादेव अथवा अन्य देवताओं के साथ नहीं करते। तो क्या इसका अर्थ ये है कि श्री बोल कर भगवान विष्णु को सम्मान दिया जाता है और अन्य देवताओं को नहीं? ऐसा बिलकुल भी नहीं है। आइये इसे समझते हैं।

ईश्वर, विशेषकर भगवान विष्णु के सम्बन्ध में एक भ्रान्ति ये है कि उनके नाम के आगे लगने वाला शब्द श्री सम्मान सूचक है। यही कारण है कि हम ये अपेक्षा करते हैं कि हम सभी देवताओं के आगे उसी सम्मान के रूप में श्री लगाएं। आज के परिपेक्ष्य में अवश्य श्री एक सम्मान सूचक शब्द है किन्तु आपको ये जानकर आश्चर्य होगा कि भगवान विष्णु के नाम के आगे लगने वाला श्री केवल सम्मान के लिए नहीं है।

ब्रह्मा, विष्णु, महेश ईश्वर हैं इसी कारण सम्मान पर उनका अधिकार निर्विवाद है। श्री लगाएं अथवा ना लगाएं, उनका सम्मान कम नहीं होता। किन्तु वास्तव में श्रीहरि के आगे लगने वाले श्री का अर्थ है लक्ष्मी। आप सभी को ये तो पता ही होगा कि माता लक्ष्मी का एक नाम श्री भी है। श्री का अर्थ होता है ऐश्वर्य प्रदान करने वाली। तो वास्तव में हम श्रीहरि कह कर भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी को एकाकार करते हैं। ये ठीक वैसा ही है जैसे भगवान शंकर का अर्धनारीश्वर स्वरुप।

अब श्रीहरि तक तो ठीक है किन्तु क्या श्रीराम और श्रीकृष्ण के आगे जो श्री लगता है वो सम्मान सूचक नहीं है? उत्तर है हाँ, है किन्तु इन दोनों के नाम के साथ लगने वाले श्री का अर्थ भी माता लक्ष्मी का ही रूप है।

जब हम श्रीराम कहते हैं तो वास्तव में हम सीता-राम कह रहे होते हैं। जब हम श्रीकृष्ण कहते हैं तो वास्तव में हम रुक्मिणी-कृष्ण कह रहे होते हैं। तो इस प्रकार दोनों के नाम में श्री लगाने का वास्तविक तात्पर्य इनकी अर्धांगिनी के नाम को भी इनके साथ जोड़ना है। अब एक प्रश्न और आता है कि भगवान विष्णु के अवतारों -राम और कृष्ण के अवतारों को ही माता लक्ष्मी के श्री सम्बोधन के साथ क्यों जोड़ा जाता है? भगवान शंकर के अवतारों के साथ क्यों नहीं। इसका कारण ये है कि भगवान विष्णु के अवतारों की एक विशेष बात ये है कि नारायण के साथ-साथ हर अवतार में माता लक्ष्मी भी अवतार लेती हैं। जैसे श्रीराम के अवतार के साथ में माता लक्ष्मी देवी सीता और श्रीकृष्ण के अवतार के साथ में माता लक्ष्मी देवी रुक्मिणी के रूप में अवतरित हुई।

बहुत कम लोगों को ये पता है कि भगवान विष्णु के अन्य अवतारों के साथ भी माता लक्ष्मी ने अवतार लिया। जैसे भगवान वराह के साथ माता वाराही, भगवान नृसिंह के साथ माता नारसिंही, भगवान वामन के साथ माता पद्मा और भगवान परशुराम के साथ माता धारिणी।

तो इन सबके साथ भी श्री का तात्पर्य माता लक्ष्मी के इन्ही अवतारों से है। भविष्य में होने वाले भगवान कल्कि के अवतार में भी माता लक्ष्मी देवी पद्मावती के रूप में अवतरित होंगी।

अतः ये बात सदैव स्मरण रखें कि श्रीहरि, श्रीराम, श्रीकृष्ण इत्यादि के साथ लगने वाला श्री केवल सम्मान सूचक ही नहीं बल्कि माता लक्ष्मी का भी प्रतिनिधित्व करता है। जय श्रीहरि।

प्रेम विवाह के लिए ज्योतिषीय उपाय

आदित्य झा
ज्योतिषाचार्य एवं वास्तुशास्त्र विशेषज्ञ

अगर आप अपनी लव लाइफ को शादी के अंजाम तक पहुंचाना चाह रहे हैं तो यह ज्योतिष उपाय आपकी मदद कर सकते हैं। प्रेम विवाह में कभी लड़की के माता-पिता तो कभी लड़के के परिवार वाले शादी के तैयार नहीं होते और फिर समाज बीच में आकर अड़चन डालता है। कभी जात-पात को लेकर तो कभी अमीरी-गरीबी और मयार्दा के नाम पर विवाह की स्वीकृति नहीं मिल पाती। हालांकि आजकल समय काफी बदल गया है लेकिन प्रेम विवाह को लेकर किसी न किसी तरह की रुकावट आती रहती है।

हम आपको आज कुछ ऐसे उपाय बताने जा रहे हैं, जिनको आज से आजमाने पर आपको एक-एक करके सभी समस्याओं से मुक्ति मिल जाएगी। प्रेम विवाह की सफलता के लिए हीरा या ओपल रत्न धारण करें और 16 सोमवार को व्रत रखें। यह रत्न आपको प्रेम को विवाह तक पहुंचाने में मदद करते हैं और सोमवार के व्रत से भगवान शंकर की कृपा प्राप्त होती है, जिससे विवाह में कोई परेशानी नहीं आती। साथ ही हर रोज ह्यहे गौरी शंकर अर्धांगिंनी यथा त्वं शंकर प्रिया तथा माम कुरू कल्याणी कान्त कान्ता सुदुर्लभमह्न मंत्र की एक माला का जप करें।

कुंडली में बनेंगे प्रेम विवाह के योग

कुंडली में पंचमेश और सप्तमेश विवाह का स्थान होता है। पंचम भाव के स्वामी चंद्र देव हैं और सप्तम भाव के स्वामी सूर्य हैं। जब यह योग बनते हैं तब प्रेम विवाह होता है इसके लिए आप पंचमेश के स्वामी चंद्र को प्रसन्न करने के लिए मोती धारण करें। ऐसा करने से कुंडली में प्रेम विवाह का योग बनेगा और आपकी इच्छा पूरी होगी।

इससे भी प्रेम विवाह में आती है अड़चन

मंगल दोष के कारण भी प्रेम विवाह में अड़चन आती है। अगर दोनों से कोई मांगलिक है तो मंगल दोष का तत्काल निवारण करें अन्यथा बाद में समस्याओं का सामना करना पड़ता है। मंगल दोष को दूर करने के लिए ज्योतिष शास्त्र में कुंभ विवाह और वट विवाह मुख्य माने जाते हैं।

प्रेम विवाह के लिए कन्या करें यह उपाय

कन्या अपने हाथों में हरी चूड़ियां पहनें और गुरुवार के दिन पीले वस्त्र पहनकर लक्ष्मी नारायण की पूजा करें और अपनी इच्छाओं के बारे में भगवान को अवगत कराएं।

साथ ही स्फटिक की माला से ह्यओम लक्ष्मी नारायण नमः ह्नमंत्र का जप करें, फिर प्रसाद चढ़ाएं। ऐसा करने से 6 महीने को अंतराल में प्रेम विवाह के योग बनना शुरू हो जाते हैं।

इस उपाय से भगवान गणेश होंगे प्रसन्न

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार, किसी भी माह के शुक्ल पक्ष के पहले बुधवार के दिन भगवान गणेश की पूजा-अर्चना करें और उनको दूब घास, पीले लडड़ू, सिंदूर और रोली आदि अर्पित करें। इस दिन आप नमक का सेवन न करें। भगवान गणेश की कृपा से विवाह के योग बनते हैं और माता-पिता आपकी शादी के लिए तैयार हो जाते हैं।

प्रेम विवाह की सभी बाधा होंगी दूर

प्रेम विवाह में सभी अड़चनों को दूर करने के लिए रविवार के दिन पीले कपड़े में 7 सुपारी, 7 हल्दी की गांठ, 7 गुड़ की डली, 70 ग्राम चने, 7 पीले सिक्के और एक यंत्र लें।

इसके बाद माता पार्वती की साधना करें। इन वस्तुओं को 40 दिन तक अपने घर में रखें, फिर यह सभी सामान किसी सुहागन महिला को दे दें, ऐसा करने से प्रेम विवाह की सभी बाधाएं दूर हो जाती हैं।

रसोई में बसाएं मां अन्नपूर्णा का पावन स्वरूप

ज्योतिषाचार्य पूनम दीक्षित

अंक ज्योतिष एवं वास्तुशास्त्र विशेषज्ञ

सनातन धर्म में मां अन्नपूर्णा को अन्न, पोषण और समृद्धि की अधिष्ठात्री देवी माना गया है। मान्यता है कि जिस घर की रसोई में मां अन्नपूर्णा का वास होता है, वहां कभी अन्न और धन की कमी नहीं होती। यही कारण है कि भारतीय परंपरा में रसोईघर को केवल भोजन बनाने का स्थान नहीं, बल्कि एक पवित्र देवस्थान माना गया है।

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार रसोई को सदैव स्वच्छ और पवित्र रखना चाहिए। समय-समय पर गंगाजल का छिड़काव करने से घर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है और माता अन्नपूर्णा की कृपा प्राप्त होती है।

मां अन्नपूर्णा से जुड़ी पौराणिक कथा

पौराणिक ग्रंथों के अनुसार एक समय ऐसा आया जब पृथ्वी पर भयंकर अकाल पड़ गया। भूमि बंजर हो गई, अन्न और जल के स्रोत समाप्त होने लगे तथा लोगों के सामने जीवन-यापन का संकट खड़ा हो गया। परेशान होकर पृथ्वीवासी भगवान ब्रह्मा और भगवान विष्णु की शरण में पहुंचे तथा अपनी समस्या का समाधान मांगा।

ब्रह्मा और विष्णु ने यह बात भगवान शिव को बताई। भगवान शिव ने पृथ्वी का भ्रमण कर स्थिति का निरीक्षण किया और लोगों की पीड़ा को समझा। इसके बाद उन्होंने भिक्षुक का रूप धारण किया तथा माता पार्वती ने अन्नपूर्णा देवी का स्वरूप धारण किया।

माता अन्नपूर्णा ने भगवान शिव को भिक्षा स्वरूप अन्न प्रदान किया। भगवान शिव ने वह अन्न पृथ्वी पर रहने वाले लोगों में वितरित कर दिया, जिससे समस्त जीवों की भूख मिट गई और अकाल का संकट समाप्त हो गया। तभी से मां अन्नपूर्णा की पूजा अन्न, धन और समृद्धि की प्राप्ति के लिए की जाने लगी।

एक अन्य मान्यता के अनुसार काशी में अन्न संकट उत्पन्न होने पर भगवान शिव ने मां अन्नपूर्णा से भिक्षा ग्रहण की थी। उस समय देवी ने वरदान दिया था कि उनकी शरण में आने वाला कोई भी भक्त कभी अन्न और धन-धान्य से वंचित नहीं रहेगा।

रसोई में मां अन्नपूर्णा की तस्वीर लगाने के लाभ

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार रसोईघर में मां अन्नपूर्णा की तस्वीर स्थापित करने से अनेक शुभ फल प्राप्त होते हैं।

प्रमुख लाभ

- घर में अन्न के भंडार सदैव भरे रहते हैं।
- परिवार को कभी भोजन की कमी का सामना नहीं करना पड़ता।
- भोजन में सात्विकता और पवित्रता बनी रहती है।
- भोजन बनाते समय क्रोध, तनाव और नकारात्मक विचार कम होते हैं।
- परिवार के सदस्यों के मन में शांति और संतोष की भावना बढ़ती है।
- घर में आर्थिक समृद्धि और धन की वृद्धि होती है।
- रिश्तों में प्रेम, मधुरता और आपसी सम्मान बना रहता है।
- परिवार में सुख, शांति, प्रतिष्ठा और प्रगति का वातावरण निर्मित होता है।
- रसोई और पूरे घर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है।

मां अन्नपूर्णा की तस्वीर लगाने की सही विधि

धार्मिक मान्यता के अनुसार किसी भी शुभ गुरुवार या शुक्रवार को मां अन्नपूर्णा की तस्वीर स्थापित करना श्रेष्ठ माना जाता है।

स्थापना विधि

प्रातः स्नान आदि से निवृत्त होकर पूरे घर और विशेष रूप से रसोईघर की अच्छी तरह सफाई करें।

रसोई और घर में गंगाजल का छिड़काव कर वातावरण को पवित्र बनाएं।

- जिस स्थान पर तस्वीर लगानी है, उसे भी गंगाजल से शुद्ध करें।
- भोजन बनाने वाले चूल्हे, गैस या स्टोव की विधिवत पूजा करें।
- भगवान शिव और माता अन्नपूर्णा का ध्यान कर परिवार की सुख-समृद्धि की प्रार्थना करें।
- हल्दी, कुमकुम, अक्षत, पुष्प, धूप और दीप अर्पित करें।
- माता अन्नपूर्णा की तस्वीर को रसोईघर की उत्तर या पूर्व दिशा में स्थापित करें।
- स्थापना के समय अन्नपूर्णा स्तोत्र, आरती, मंत्र या कथा का पाठ करें।
- परिवार के सभी सदस्य माता के समक्ष कम से कम 11 बार प्रार्थना करें कि घर में सदैव अन्न और जल की भरपूरता बनी रहे।

पूजा के पश्चात जरूरतमंद या गरीब लोगों को भोजन अवश्य कराएं।

रसोई की पवित्रता का महत्व

शास्त्रों में कहा गया है—जैसा अन्न, वैसा मन। इसलिए भोजन बनाते समय मन को शांत, सकारात्मक और सात्विक रखना चाहिए। माना जाता है कि जिस रसोई में श्रद्धा, स्वच्छता और भक्ति का वातावरण होता है, वहां माता अन्नपूर्णा की विशेष कृपा बनी रहती है।

"रत्नों की दिव्य शक्ति: जानिए कौन-सा रत्न चमका सकता है आपका भाग्य"

रत्न एक प्रकार के बहुमूल्य पत्थर होते हैं जो बहुत प्रभावशाली और आकर्षक होते हैं। रत्न अपने खास गुणों के कारण आभूषण निर्माण, फैशन और ज्योतिष आदि जैसे कार्यों में प्रयोग में लाए जाते हैं। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार रत्न में दैवीय ऊर्जा समाहित होती है, जिनसे मनुष्य जीवन का कल्याण होता है। रत्न को प्रायः रत्ती के द्वारा इंगित किया जाता है। प्राचीन काल से रत्नों का उपयोग अध्यात्मिक क्रियाकलापों और उपचार के लिए किया जाता रहा है। रत्न शक्तियों का भंडार होता हैं, जो शरीर में स्पर्श के माध्यम से प्रवेश करता है। रत्न सकारात्मक या नकारात्मक रूप से धारण करने वाले पर असर दिखा सकता है यह उपयोग में लाए जाने के तरीके पर निर्भर करता है। सभी रत्नों में अलग-अलग चुम्बकीय शक्तियाँ होती हैं। इनमें से कई रत्न उपचार के दृष्टिकोण से हमारे लिए बहुत लाभदायक हैं।

क्यों धारण करते हैं रत्न ?

वैदिक ज्योतिष के अनुसार देखें तो हर ग्रह का संबंध किसी न किसी रत्न से होता है और वैसे ही हर रत्न का किसी न किसी ग्रह से जुड़ा होता है। जैसे सूर्य का संबंध माणिक्य रत्न से, चन्द्रमा का मोती से, बुध का पन्ना से, गुरु का पुखराज से, शुक्र का हीरा से, शनि का नीलम से, राहू का गोमेद से और केतु का लहसुनिया से। किसी भी मनुष्य के जीवन में भाग्य परिवर्तन जन्मपत्री में ग्रहों की दशा के अनुसार आता रहता है। अशुभ ग्रहों को शुभ बनाना या फिर शुभ ग्रहों को अपने लिए और अधिक शुभ बनाने की मनुष्य की हमेशा ही चेष्टा रही है जिसके लिए वह अनेकों उपाय करता रहता है, जैसे कि मंत्रों का जाप, दान-पुण्य, स्नान, रत्न धारण, यंत्र धारण, देव-देवी दर्शन आदि। इन सबमें रत्न धारण करना एक महत्वपूर्ण एवं असरदार उपाय माना जाता है। रत्न आभूषणों के रूप में शरीर की शोभा बढ़ाते हैं, साथ ही अपनी दैवीय शक्ति के प्रभाव से रोगों का निवारण भी करते हैं।

जिस प्रकार से सात ग्रह ,सात रंग, संगीत के सात सुर, सात दिन, योग में सात चक्र, शरीर में सात ग्रंथियां होती हैं, उसी प्रकार सात महत्वपूर्ण रत्न भी होते हैं, जिन्हें हम माणिक्य, मोती, मूंगा, पन्ना, पुखराज, हीरा और नीलम के नाम से जानते हैं। इसके अलावा गोमेद और लहसुनिया 2 और रत्न होते हैं जो बेहद प्रचलित हैं और इनका भी बहुत महत्व है।

माणिक्य-माणिक्य रत्न सूर्य ग्रह के लिए होता है। जिस व्यक्ति की जन्म कुंडली में शुभ भावों का स्वामी सूर्य हो तो उस भाव को और बढ़ाने के लिए माणिक्य रत्न को धारण करना लाभदायक रहता है।

मोती-मोती चन्द्रमा का रत्न है जिस इंसान की जन्म कुंडली में शुभ भावों का अधिपति चन्द्रमा हो तो ऐसे जातक को मोती धारण करना चाहिए।

मूंगा-मूंगा मंगल ग्रह का रत्न होता है। जिन व्यक्तियों की जन्म-कुंडली में शुभ भावों का स्वामी मंगल हो तो ऐसे जातकों के लिए मूंगा रत्न धारण करना फलदायक होता है। मंगल दोष से पीड़ित लोगों को मूंगा रत्न धारण करना चाहिए। यह नजर और भूत-प्रेत आदि से बचाता है और आत्मविश्वास एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि करता है।

पन्ना-पन्ना बुध ग्रह का रत्न होता है। अगर किसी व्यक्ति की जन्म कुंडली में शुभ भावों का अधिपति बुध हो तो उसके लिए पन्ना रत्न पहनना शुभ रहता है। अक्सर लोगों के मन में यह सवाल रहता है कि पन्ना रत्न किसे पहनना चाहिए? इस बात के जवाब में ज्योतिषी का यह मानना है कि पन्ना रत्न धारण करने से पहले मनुष्य को अपनी कुंडली में बुध ग्रह की स्थिति को जांच लेना चाहिए। पन्ना रत्न उन जातकों के लिए शुभ और फलदायी होता है जो व्यापार तथा अंकशास्त्र संबंधित कार्य करते हैं। कुंडली का विश्लेषण करने के बाद ही इस बात का निर्धारण करना चाहिए कि

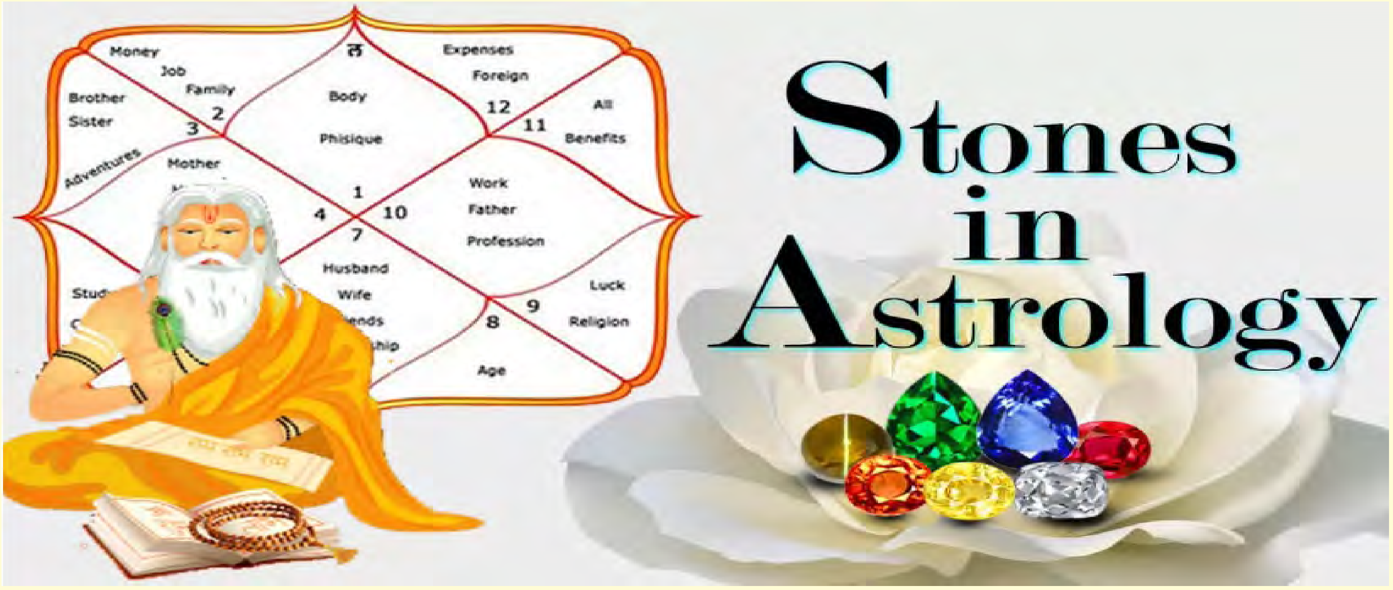

कितने रत्ती का रत्न धारण करना है। पन्ना रत्न पहनने से याद्दाश्त बढ़ती है इसीलिए यह रत्न छात्रों के लिए भी विशेष साबित होता है। वैसे लोग जिन्हें ज्यादा गुस्सा आता है और वे उस पर काबू चाहते हैं साथ ही अपने मन की एकाग्रता को भी बढ़ाना चाहते हैं उन्हें पन्ना रत्न पहनना चाहिए।

पुखराज-पुखराज बृहस्पति ग्रह का रत्न होता है। पीले रंग का पुखराज सबसे उत्तम माना जाता है। जिस व्यक्ति की कुंडली में शुभ भावों का अधिपति बृहस्पति ग्रह हो, वैसे लोगों को पीला पुखराज धारण करना फलदायक रहता है। इस रत्न को पहनने से शिक्षा के क्षेत्र में, धन संपत्ति में, मान-सम्मान आदि में वृद्धि होती है।

जिन लोगों के विवाह में रुकावटें आ रही हो उनके लिए भी पुखराज बहुत अच्छा माना जाता है। इससे धार्मिक और सामाजिक कार्यों की तरफ झुकाव होता है और यह व्यापर में नुकसान से बचाता है।

हीरा-हीरा शुक्र ग्रह का रत्न है। जिन लोगों की कुंडली में अच्छे भावों का अधिपति शुक्र होता है, उन्हें हीरा अवश्य धारण करना चाहिए। हीरा एक महंगा रत्न होता है इसीलिए अगर आप यह रत्न न खरीद पाए तो इसके जगह पर जरकन, फिरोजा या

ओपल जैसे रत्न भी धारण कर सकते हैं। यह उपरत्न भी हीरे के समान ही फलदायक हैं। वैसे लोग जिन्हें मधुमेह तथा नेत्र रोग आदि है उनके लिए हीरा धारण करना अच्छा होता है। यह रत्न इस प्रकार के रोगों को दूर रख आयु में वृद्धि करता है। इसके साथ ही जो जातक व्यापार, फिल्म उद्योग और कला के क्षेत्र में सफलता पाना चाहते हैं तो वे हीरा पहन सकते हैं।

नीलम-नीलम शनि ग्रह का रत्न होता है, जिसे नीला पुखराज भी कहते हैं। जिस व्यक्ति की जन्म कुंडली में शुभ भावों का अधिपति शनि हो तो वैसे लोगों को अवश्य ही नीलम रत्न पहनना चाहिए। ऐसा माना जाता है कि नीलम मनुष्य में ज्ञान तथा धैर्य की वृद्धि करता है और तनाव तथा चिंताओं से दूर रख मन को शांति प्रदान करता है। राजनीति से जुड़े लोगों के लिए यह बेहद लाभकारी माना जाता है। नीलम रत्न की कीमत थोड़ी अधिक होती है, इसीलिए व्यक्ति को सही जगह से ही इसे खरीदना चाहिए।

गोमेद-गोमेद रत्न राहु ग्रह का रत्न माना जाता है। राहु की अपनी कोई राशि नहीं होती है और यह एक छाया ग्रह है। इसे धारण करने से व्यक्ति के समझने की क्षमता बढ़ती है। अधिकतर ज्योतिषियों द्वारा व्यवसायिक कुशाग्रता तथा प्रबंधन निपुणता प्रदान करने के लिए इस्तेमाल में लाया जाता है। गोमेद जीवन और प्रेम में विश्वास को पुनः जागृत करता है। मूंगा, माणिक्य, मोती और पीला पुखराज को गोमेद के साथ धारण नहीं करना चाहिए।

लहसुनिया-लहसुनिया केतु ग्रह का रत्न होता है। राहु के समान केतु भी एक छाया ग्रह है और जिसकी अपनी कोई राशि नहीं होती है।

माना जाता है कि लहसुनिया दुख, परेशानी और पैसों की तंगी को समाप्त कर देता है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार लहसुनिया धारण करने से रात के समय बुरे सपने परेशान नहीं करते हैं।

यह रत्न जातक को भूत बाधा और काले जादू से दूर रखने में मदद करता है। अपने लिए सही रत्न की जानकारी हो जाने के बाद यह भी जान लेना आवश्यक है कि रत्नों को धारण करने की सही विधि क्या है और इन्हें धारण करने के लिए सबसे अच्छा और शुभ दिन कौन सा है। नीचे आपको प्रत्येक रत्न को धारण करने के लिए उत्तम दिन की जानकारी दी जा रही है जो इस प्रकार हैं-

माणिक्य - रविवार - अनामिका अंगुली
मोती - सोमवार - कनिष्ठिका अंगुली
पीला पुखराज - गुरुवार - तर्जनी अंगुली
सफेद पुखराज - शुक्रवार - तर्जनी अंगुली
लाल मूंगा - मंगलवार - अनामिका अंगुली
पन्ना - बुधवार - कनिष्ठिका अंगुली
नीलम - शनिवार - मध्यमा अंगुली
गोमेद - शनिवार - मध्यमा या कनिष्ठिका अंगुली
लहसुनिया-शनिवार - कनिष्ठिका अंगुली

रत्न धारण करते समय कुछ बातों का ध्यान जरूर रखना चाहिए। रत्न खरीदते समय सावधानी बरतें और केवल असली रत्न ही लें, क्योंकि नकली रत्न को धारण करने से या उसका प्रयोग करने से जातक को कोई लाभ नहीं मिलता है।

इसके साथ ही आपको ज्योतिषी द्वारा सुझाए गए रत्न के वजन के अनुसार उसे धारण करना चाहिए अर्थात आपको जितने वजन का रत्न धारण करने को कहा गया हो उतने ही वजन का रत्न इस्तेमाल करें।

आजकल बाजार फर्जी पंडितों और नकली रत्नों से भरे पड़े हैं, इसीलिए रत्न हमेशा किसी विश्वसनीय जगह से ही लें और किसी सिद्ध ज्योतिषी के परामर्श के बाद ही उसे धारण करें।

धर्मेण जयति राष्ट्रम - धर्म के कारण राष्ट्र विजयी होता है

धर्म शब्द का अर्थ है जो धारण किया जाए अथवा जिसका व्यवहार में पालन किया जाए। श्रीमद्भागवत गीता, हितोपदेश, मनुस्मृति में 'धर्म' शब्द 'कर्तव्य' का बोधक है। भारतीय संस्कृति में चार पुरुषार्थ बताए गए हैं- धर्म ,अर्थ ,काम, मोक्ष। 'पुरुषार्थ' धर्म का दूसरा अर्थ है। मनुष्य जीवन की पूर्णता चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति से ही होती है। 'अर्थ' और 'काम' व्यक्तिगत जीवन के पुरुषार्थ हैं और 'धर्म' सामाजिक जीवन का पुरुषार्थ है। 'मोक्ष' अर्थात आत्म कल्याण, परमात्म तत्व की प्राप्ति, बंधन मुक्ति, परमशांति । धर्म साधना से आत्म कल्याण- लोक कल्याण दोनों ही सधत्ता है।

जो व्यक्ति दूसरों की सेवा में अपने आप को समर्पित नहीं करता जो समाज की चिंता नहीं करता, जो समाज के ऋण को चुकाने के दायित्व का निर्वहन नहीं करता वह सामाजिक ही नहीं है। वह समाज में सम्मान भी नहीं पाता है। केवल मनुष्य में ही यह शक्ति है कि वह दूसरों के हितों को ही अपने हित के समान माने और उनकी पूर्ति के लिए सदा प्रयत्न शील रहे तभी वह अपने समाज धर्म- लोक कल्याण के दायित्व से पूर्ण हो सकेगा। आत्मवत सर्व भूतेषु की अवधारणा पूर्ण होगी अतः आत्म कल्याण के साथ लोक कल्याण भी परम आवश्यक है अथवा लोक कल्याण में स्वतः ही 'आत्म कल्याण' होता चला जाता है । आत्मवत सर्व भूतेषु लोक कल्याण ही 'मानव धर्म' - 'सनातन धर्म' है। स्वामी विवेकानंद ने कहा

था - समष्टि की जय में जो स्वयं की विजय का मार्ग पा लेता है, उसकी तो सदा विजय ही विजय है।

श्रीरामचरितमानस के अनुसार -

परहित सरिस धर्म नहीं भाई । पर पीड़ा सम नहीं अधमायी ।।

अर्थात- परहित (परमार्थ) ही सबसे बड़ा धर्म है और परपीड़ा , लोकव्यथा - विस्व संताप ही सबसे बड़ा अधर्म है।

वर्तमान समाज में कुछ लोग पद, नाम ,कीर्ति कमाने में ही अपने अमूल्य जीवन को बिता रहे हैं और कुछ लोग समाज सुधार या समाज कल्याण

के कार्यों में लगे हुए हैं, किंतु मान ,बडाई और प्रतिष्ठा की कामना एवं स्वार्थपर्ता का परित्याग कर समाज कल्याण के लिए कितने लोग काम कर रहे हैं ?

श्रीमद्भागवत गीता 16/1 में भगवान श्रीकृष्ण धर्म के संदर्भ मे कहते हैं कि-

अभयं सत्वसन्शुद्धिर्ज्ञानयोगव्यव्स्तिथतिः ।
दानं दमश्च यगश्च स्वाध्यायस्तप आजर्वमं ।।

अर्थात- भय का सदा अभाव, अंतःकरण की शुद्धि, ज्ञान के लिए योग में दृढ़ स्थिति, सात्विक दान, इंद्रियों का दमन, यज्ञ, स्वाध्याय ,कर्तव्य पालन के लिए कष्ट सहना, शरीर ,मन, वाणी की सरलता।

अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शांतिरपैशुनम्।
दया भूतेश्वलोलुप्तत्वं मार्दठं हीरचापलम।। - 16/2

अर्थात - अहिंसा ,सत्यभाषण, क्रोध न करना ,संसार की कामना का त्याग, अंतःकरण में राग- द्वेषजनित हलचल का न होना, चुगली न करना, प्राणियों पर दया करना, सांसारिक विषयों में न ललचाना, अंतःकरण की कोमलता, अकर्तव्य करने में लज्जा, चपलता का अभाव ।

तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो नातिमानिता।
भवन्ति सम्पदं दैवीमभिजातस्य भारत ।। - 16/3

अर्थात- तेज (प्रभाव), क्षमा, धैर्य ,शरीर की शुद्धि ,बैरभाव का न रहना, मान को न चाहना । हे भरतवंशी अर्जुन! ये सभी दैवी संपदा को प्राप्त हुए

मनुष्य के लक्षण हैं।

गीता में 'धर्म' शब्द 'मानव कर्तव्य' का बोधक है। निष्काम कर्मयोग योग का प्रतीक है। यदि संसार से कर्म /कर्तव्य का भाव उठ जाए तो मानव समाज का जीवित रहना ही संभव नहीं है। तब यह संसार नष्ट हो जाएगा। आज देश में धर्म (कर्तव्य) भावना का ही लोप / नाश हो रहा है इसीलिए समाज -राष्ट्र पतन की ओर जा रहा है। विश्व मानवता संकट में है।

भारतीय संस्कृति में धर्म और सभ्यता को सर्वथा पृथक रखा गया है। धर्म के 10 लक्षण भगवान मनु ने बताए हैं।

धृति मेधा दमोस्तेयं शौचंइंद्रिय निग्रहः।
धी विधा सत्यंक्रोधोः दशकं धर्म लक्षणं ।।

योगशास्त्र में उन्हें यम- नियम कहा गया है। सभ्यता में प्रथा परंपरा के प्रचलनो की गणना होती है । धर्म शाश्वत है अर्थात व्यक्तिक और सामाजिक सदाचार की आधार मूल सिद्धांत सनातन हैं । प्रथा -परंपराएं सामयिक हैं । स्मृतिकार समयानुसार उनमें हेर फेर करते रहे हैं । यह परिवर्तन प्रचलन आवश्यकतानुसार सदा ही होता रहेगा। धर्म और सभ्यता को अन्य धमार्नुयायी अंतरंग उद्देश्य एक ही है। वह है व्यक्तित्वों को उत्कृष्टतम स्थिति तक पहुंचाने और उसे लोकमंगल के लिए आधिकारिक त्याग बलिदान करने के लिए प्रशिक्षित करना।

भारत में जब उसकी महान संस्कृति को व्यावहारिक रूप में अपनाया जाता था, तब यहां का प्रत्येक परिवार नररत्नों की खदान था। महामानवों का मूल्य करोड़ रूपयो की लागत से बनने वाले उद्योग प्रतिष्ठानों की अपेक्षा कहीं अधिक होता है। कोई देश धन- संपत्ति के आधार पर विकास मान नहीं मान लिया जाता, उसका असली बल तो राष्ट्रीय चरित्र और महामानवों का बाहुल्य ही होता है।

आज आदर्श कहने सुनने भर की वस्तु रह गई है। उसका उपयोग कथा प्रवचनों और स्वाध्याय सत्संगों तक ही सीमित है, व्यवहार में उतारने की आवश्यकता नहीं समझी जाती और जीवन सिद्धांत के रूप में उसे नहीं अपनाया जाता है। इस विश्व संस्कृति का सृजनकर्ता भारत फिर आज उन लाभों से वंचित हो रहा है जो प्राचीन काल में उसे व्यवहार में उतारने वाले हमारे महान पूर्वजों द्वारा उठाए जाते रहे। आदर्श की दुहाई देने और प्रश्नों की लकीर पीटने से कुछ बनता नहीं,इन दिनों वैसा ही हो रहा है अस्तु दीपक तले अंधेरा होने जैसी उपहासास्पद स्थिति बन रही है।

औषधि का माहात्म्य बताने या उसकी शीशी पूजने से तो रोग दूर नहीं होता। लाभ उठाना हो तो उसका सेवन किया जाना चाहिए। आवश्यकता इस बात की है कि सांस्कृतिक आदर्श को व्यवहारिक जीवन में प्रवेश मिले, तत्वज्ञान को आस्थाओं में सम्मिलित किया जाए और उसे कार्य पद्धति में उतरने दिया जाए। यही तो उसका प्रयोजन है। यदि भारतवासी या अन्य किसी देश के निवासी इस सांस्कृतिक आदर्शवादिता को अपना सकें तो वे देखेंगे कि व्यक्ति और समाज की सर्वतोमुखी प्रगति की दिशा में अग्रसर करने की कितनी संभावनाएं विद्यमान हैं। प्रयोग न करने पर लाभ न मिले तो इसका दोष औषधि पर कहां आता है ?

कुल मिलाकर भारतीय संस्कृति की व्याख्या विवेचना करने वाली आध्यात्मिक एवं धार्मिक मान्यताएं जनसाधारण को अधिक आदर्शवादी ,अधिक पवित्र और अधिक लोकोपयोगी बनने की ओर ही अग्रसर करती हैं। भारतीय संस्कृति की तुलना अमृत वर्षा से की जाती है, वह जहां भी गिरेंगी वहीं नैयनाभिराम जीवन दायिनी हरीतिमा उत्पन्न करती रहेगी।

आज भारत के सनातन धर्म पर चारों ओर से आसुरी शक्तियों का सांस्कृतिक आक्रमण हो रहा है। अंधेरे की शक्तियां (किलबिष) संपूर्ण विश्व पर अपना आधिपत्य जमाना चाहती हैं अथवा अपना आसुरी साम्राज्य स्थापित करने हेतु ललायित हैं । आसुरी माया के मार्ग मे सबसे बड़ी बाधा सनातन -हिंदू धर्म है क्योंकि यह मानवता का पोषक है और अमानवीय शक्तियां इसे अपना प्रतिद्वंद्वी मानकर इस पर प्रहार करने में लगी हुई है। ऐसे संकट काल में देश की सज्जन शक्ति को संगठित होकर राष्ट्रधर्म -युगधर्म, आपातकालीन धर्म का निर्वाह करने हेतु आगे आना चाहिए ।

जो व्यक्ति दूसरों की सेवा में अपने आप को समर्पित नहीं करता जो समाज की चिंता नहीं करता, जो समाज के ऋण को चुकाने के दायित्व का निर्वहन नहीं करता वह सामाजिक ही नहीं है। वह समाज में सम्मान भी नहीं पाता है। केवल मनुष्य में ही यह शक्ति है कि वह दूसरों के हितों को ही अपने हित के समान माने और उनकी पूर्ति के लिए सदा प्रयत्न शील रहे तभी वह अपने समाज धर्म- लोक कल्याण के दायित्व से पूर्ण हो सकेगा।

यह देवासुर संग्राम-सांस्कृतिक संघर्ष-वैचारिक क्रान्ति का समय है, जब एक तरफ धर्म की शक्तियां हैं तो दूसरी ओर अधर्म की शक्तियां हैं और तीसरा विकल्प तटस्थ का नहीं है अतः निष्क्रिय रहनें बाले अधर्म के पाले में ही गिने जायेंगे व महाकाल के कोप के भाजन बनेगें ।

इस देवासुर संग्राम में देवत्व,सृजनकारी शक्तियों, मानवतावादी शक्तियों की ही विजय होने वाली है । *भारत का 'विश्वगुरु' बनना ईश्वरी नियति /विधान है अतः विवेक का सहारा लें ,समय को पहचाने ,कर्तव्य (धर्म) को पहचाने ,मोह- ममता, क्षुद्रता, स्वार्थपर्ता का त्याग करके अपना युगधर्म निभाते हुए यश -पुण्य -श्रेय, ईश्वरी कृपा के भागीदार बनें* ,यही सत्य / धर्म / भारतीयता की कसौटी है ।

अपने धर्म (कर्तव्य) का पालन करने वाले भारत मां के आशीर्वाद को प्राप्त करेंगे ,ईश्वरी अनुदानों से आच्छादित होंगे ,जीवन लक्ष्य को प्राप्त करेंगे ।

ज्योतिषाचार्य पूनम दीक्षित
अंक ज्योतिष एवं वास्तुशास्त्र विशेषज्ञ

आज के आधुनिक समय में हर कोई चाहता है कि उसकी रसोई, जहाँ पर महिला/पुरुष का परिवारजन के लिए स्वादिष्ट भोजन बनाने में काफी समय व्यतीत होता है, मनोहारी, सुंदर, व्यवस्थित तथा शांतिपूर्ण व दोष रहित हो।

1. अगर किसी महिला/पुरुष को रसोई में काम करते समय मानसिक तनाव महसूस होता हो या अग्निकांड (चाहे छोटे-मोटे) होते रहते हों, या बहुत थकान होने लगती हो तो, ऐसे में घर की कुंडली के तीसरे भाव को खराब मानना चाहिए क्योंकि किसी भी घर में अग्नि का सम्बन्ध रसोई विशेष से ही होता है। इसको सुधारने के लिए साबुत धनिया, अग्नि क्षेत्र में हरे रंग के कपड़े में बांधकर लटका देना चाहिए। इससे तीसरे घर (अग्निकोण, मानसिक तनाव) की समस्या से मुक्त हो जाता है।

2. हमेशा रसोई बनाते समय ध्यान रखें कि रसोई हमेशा अग्निकोण में हो। जिसमें चूल्हे की व्यवस्था पूरब की दीवार पर हो और अगर पूरब में मुश्किल हो तो दक्षिण की दीवार पर हो। साथ ही पानी का सिंक उत्तरी दीवार पर या उत्तर - पूर्व के स्थान पर होना चाहिए।

3. फ्रिज को रसोई के दक्षिणी पश्चिम भाग में, लेकिन खिड़की के पास लगाना चाहिए।

4. माइक्रोवेव, मिक्सर, ग्राइंडर या अन्य अग्नि प्रधान सामान दक्षिणी दीवार पर लगाना लाभकारी सिद्ध होता है।

5. रसोई के बाहर, पायदान जरूर होना चाहिए।

साथ ही जिन महिलाओं को रसोई में थकान महसूस होती हो, उन्हें तो स्लैब के नीचे जहाँ खड़े होकर वे खाना बनाती हैं, एक लकड़ी का पटरा डालकर खाना बनाना चाहिए, इससे उनके शरीर में ऊर्जा बनी रहेगी व थकान नहीं होगी।

6. आजकल आमतौर पर मैंने यह देखा है। कि परिवारजन, जो चप्पल पहनकर लैट्रिन में जाते हैं या बाहर से आते हैं। उन्हीं चप्पलों से वे रसोई में भी प्रवेश करते रहते हैं, ऐसे में रसोई में जीवाणु/कीटाणु उत्पन्न हो जाते हैं जो भोजन के स्वाद का तो ह्रास करते ही हैं, साथ ही भोजन बनाने वाली महिला को थकान भी महसूस होने लगती है। इसको सुधारने के लिए व्यक्ति को घर में चमड़े की चप्पल या लकड़ी की बनी खड़ाऊ का प्रयोग करना लाभकारी होता है तथा कभी कभी पोंछा लगाते समय नमक का प्रयोग करना चाहिए। बैक्टीरिया समाप्त हो जाते हैं। तथा ऊर्जा का संचार होता है। रसोई में बैठकर भोजन करने से राहु, केतु व बुध शांत रहते हैं।

यदि रसोई घर का दरवाजा टॉयलेट के सामने है या किचन और टॉयलेट सटे हुए बने हैं तो ऐसा होना कर्ज, मानसिक अशांति, रोग का कारण हो सकता है.

ऐसे में दोनों के बीच पायरा यानी पिरामिड वास्तु प्रोडक्ट स्ट्रिप लगाकर गुणात्मक रूप से इन्हें अलग कर देना चाहिए, ताकि टॉयलेट की निगेटिविटी को कम किया जा सके.

अपने किचन को हमेशा साफ-सुथरा और सुव्यवस्थित रखें. रसोई में जूठे बर्तनों का जमाव, गंदे पानी का भंडार, मकड़ी के जाले या धुएं से काली दीवारें स्वास्थ्य एवं समृद्धि का नाश करती हैं.

नवग्रह शांन्ति, वास्तु दोष,
गृह शुद्धि का सरल उपाय
माँ
कल्याणी
सेवाश्रम
TM
शुद्ध धूनी
नजर दोष, वास्तु दोष, आरोग्य और
सुख शान्ति समृद्धि के लिए गाय के उपले
पर प्रयोग करें। और पूरे घर दुकान,
फैक्ट्री मे इसका धुआं दें।
अच्छे परिणाम के लिये एक लौंग को जोड़ा घी में डुबो के पहले रखें।
M: 9990844047

सप्तम भाव में सूर्य का प्रभाव : विवाह, जीवनसाथी और वैवाहिक जीवन का रहस्य

एस्ट्रो राजेश शर्मा
वैदिक एस्ट्रोलॉजर, मोटिवेशनल स्पीकर एवं धर्मगुरू

ज्योतिष शास्त्र में सप्तम भाव को विवाह, जीवनसाथी, साझेदारी, दाम्पत्य सुख तथा सामाजिक संबंधों का प्रमुख भाव माना गया है। जिस प्रकार पंचम भाव संतान, बुद्धि और प्रेम का प्रतिनिधित्व करता है तथा चतुर्थ, पंचम और नवम भाव शिक्षा एवं संस्कारों को दर्शाते हैं, उसी प्रकार सप्तम भाव व्यक्ति के वैवाहिक जीवन का दर्पण होता है।

यदि किसी जातक की कुंडली में सप्तम भाव में सूर्य स्थित हो, तो उसका प्रभाव विवाह और जीवनसाथी पर विशेष रूप से दिखाई देता है।

सप्तम भाव क्या दर्शाता है ?

सप्तम भाव से निम्न विषयों का विचार किया जाता है—

- विवाह एवं दाम्पत्य जीवन
- पति या पत्नी का स्वभाव
- व्यापारिक साझेदारी
- सामाजिक प्रतिष्ठा
- प्रेम और आकर्षण

जनसंपर्क एवं व्यवहार

जब इस भाव में सूर्य जैसे तेजस्वी ग्रह का प्रवेश होता है, तब वैवाहिक जीवन में विशेष प्रकार की परिस्थितियाँ उत्पन्न होती हैं।

सप्तम भाव में सूर्य का सामान्य प्रभाव

सूर्य आत्मा, अहंकार, प्रतिष्ठा, अधिकार, नेतृत्व तथा ऊर्जा का कारक ग्रह है। यह अग्नि तत्व प्रधान ग्रह माना गया है।

सप्तम भाव में सूर्य बैठने पर जातक के जीवन में विवाह अत्यंत महत्वपूर्ण विषय बन जाता है।

ऐसे जातक प्रायः ऐसे जीवनसाथी की इच्छा रखते हैं जो प्रभावशाली, आत्मविश्वासी, सम्मानित अथवा उच्च पद वाला हो। कई बार जीवनसाथी सरकारी क्षेत्र, प्रशासन, राजनीति, शिक्षा या नेतृत्व से जुड़ा हो सकता है।

विवाह में कैसी परिस्थितियाँ बनती हैं ?

सप्तम भाव में सूर्य होने पर विवाह में निम्न प्रकार के परिणाम देखे जाते हैं

1. विवाह में देरी

सूर्य एक गर्म और तेज ग्रह है। इसके कारण कई बार विवाह में विलंब हो सकता है या उचित जीवनसाथी मिलने में समय लगता है।

2. अहंकार के कारण मतभेद

यदि सूर्य अशुभ स्थिति में हो तो पति-पत्नी के बीच मैं की भावना अधिक रहती है। छोटी-छोटी बातों पर विवाद हो सकता है।

3. सामाजिक प्रतिष्ठा वाला विवाह

ऐसे जातक प्रतिष्ठित परिवार में विवाह करना पसंद करते हैं। कई बार विवाह के बाद सामाजिक सम्मान बढ़ता है।

4. जीवनसाथी प्रभावशाली होता है

जीवनसाथी आत्मविश्वासी, तेजस्वी, आकर्षक और नेतृत्व करने वाला हो सकता है।

जीवनसाथी कैसा मिलता है ?

सप्तम भाव का सूर्य जीवनसाथी में कुछ विशेष गुण देता है—

- आत्मसम्मान वाला

- स्वतंत्र विचारों वाला
- समाज में पहचान रखने वाला
- कभी-कभी गुस्सैल स्वभाव
- निर्णय लेने में तेज
- नेतृत्व क्षमता वाला

यदि सूर्य शुभ स्थिति में हो तो जीवनसाथी सहयोगी, प्रेरणादायक और सम्मान दिलाने वाला होता है।

लेकिन यदि सूर्य पाप ग्रहों से पीड़ित हो तो वैवाहिक जीवन में दूरी, अहंकार और मानसिक तनाव बढ़ सकता है।

सूर्य पर ग्रहों की दृष्टि का प्रभाव

1. गुरु की दृष्टि

यदि सप्तम भाव के सूर्य पर गुरु की दृष्टि हो तो विवाह स्थिर रहता है।

जीवनसाथी संस्कारी, धार्मिक और समझदार मिलता है। दाम्पत्य जीवन में सम्मान बना रहता है।

2. शुक्र की दृष्टि

शुक्र की शुभ दृष्टि प्रेम, आकर्षण और रोमांस बढ़ाती है।

पति-पत्नी के बीच भावनात्मक जुड़ाव अच्छा रहता है।

3. चंद्रमा की दृष्टि

चंद्रमा की दृष्टि वैवाहिक जीवन में संवेदनशीलता और भावनात्मक संतुलन देती है।

4. शनि की दृष्टि

शनि की दृष्टि होने पर विवाह में देरी, दूरी या जिम्मेदारियाँ बढ़ सकती हैं।

लेकिन समय के साथ संबंध स्थिर भी हो जाते हैं।

5. मंगल की दृष्टि

मंगल की दृष्टि क्रोध और विवाद की स्थिति बना सकती है।

पति-पत्नी के बीच अहंकार टकराव संभव होता है।

6. राहु-केतु का प्रभाव

राहु भ्रम, असंतोष या असामान्य संबंध दे सकता है।

केतु भावनात्मक दूरी अथवा आध्यात्मिक झुकाव बढ़ा सकता है।

पुरुष और स्त्री कुंडली में प्रभाव

पुरुष की कुंडली में

पत्नी तेजस्वी, आत्मनिर्भर और प्रभावशाली हो सकती है।

कभी-कभी पत्नी का स्वभाव अधिकारपूर्ण होता है।

स्त्री की कुंडली में

पति प्रतिष्ठित, सरकारी नौकरी वाला या नेतृत्वकारी व्यक्तित्व का हो सकता है।

लेकिन पति का अहंकार अधिक होने पर मानसिक दूरी भी बन सकती है।

किन राशियों में सूर्य शुभ फल देता है?

मेष राशि

विवाह के बाद उन्नति और सम्मान मिलता है।

सिंह राशि

जीवनसाथी प्रभावशाली और आत्मविश्वासी होता है।

धनु राशि

धार्मिक एवं समझदार जीवनसाथी मिलता है।

किन स्थितियों में समस्या बढ़ती है?

- सूर्य नीच राशि में हो
- राहु या शनि से पीड़ित हो
- सप्तमेश कमजोर हो
- शुक्र अशुभ स्थिति में हो
- नवांश कुंडली खराब हो

ऐसी स्थिति में विवाह में तनाव, अलगाव या मानसिक दूरी की संभावना बढ़ जाती है।

वैवाहिक जीवन को बेहतर बनाने के उपाय

- प्रतिदिन सूर्य को जल अर्पित करें।
- आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ करें।
- पिता एवं बड़ों का सम्मान करें।
- अहंकार और क्रोध पर नियंत्रण रखें।
- रविवार को गरीबों को गेहूं एवं गुड़ दान करें।

सप्तम भाव में सूर्य व्यक्ति के विवाह और दाम्पत्य जीवन को अत्यंत प्रभावशाली बनाता है।

यह योग जीवनसाथी को तेजस्वी, सम्मानित और आत्मनिर्भर बनाता है, लेकिन साथ ही अहंकार और अधिकार भावना के कारण वैवाहिक जीवन में चुनौतियाँ भी ला सकता है।

यदि सूर्य शुभ दृष्टि और मजबूत स्थिति में हो तो विवाह सम्मान, प्रतिष्ठा और सफलता देने वाला सिद्ध होता है। वहीं अशुभ प्रभाव होने पर समझदारी, धैर्य और आध्यात्मिक उपायों की आवश्यकता पड़ती है।